नारी विद्रोह

(मनोविज्ञान)



लेखकः—

श्री गुलाबरत्न वाजपेयी "गुलाब"



प्रथम संस्करण] [मूल्य ४॥)

प्रकाशक:—
के० पी० शर्मा
विज्ञान-मन्दिर
६, ब्राह्मण पाड़ा लेन
कलकत्ता ६

कवर-चित्र
श्री हृदयरंजन चन्द्र

विषय

१	स्त्री क्या है ?	
२	कुमारी-जीवन	११
३	शिक्षाका मूल्य	१५
४	विवाह क्या है ?	२१
५	भयो क्यों अनचाहतको संग ?	२८
६	फैशन	३२
७	विधवा जिन्दगी	३६
८	राष्ट्रकी जमीनपर	४७
९	स्वतन्त्रताका आनन्द	५३
१०	वीरांगना	६३
११	स्वास्थ्य	७६
१२	माता	८९
१३	ईश्वर और नारी	९६
१४	नागरिक जीवन	१०३
१५	भविष्यमें क्या होगा ?	१०९



नारी विद्रोह—
क्यों ?

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'—बहुत प्राचीन कालसे यह उक्ति प्रचलित चली आ रही है। पर आजकल तो पूजा, देवी, देवता, ईश्वरादि संज्ञाओंके श्रवण मात्रसे नाक-भौं सिकोड़नेवाले महानुभावजन इसे 'सत्यनारायणकी कथा' में लीलावती और कलावती की कहानीकी तरह समझते हैं। इनका दोष नहीं, यह तो हमारे अन्धकार युगका ही परिणाम है। अंग्रेजी भाषा हमारी गुलामीके समय हम पर राज करने लगी, और हम मानसिक रूपसे गुलाम हो गए। परिणाम हुआ कि हमारे जीवन में अंग्रेजी शब्द तो हमारे निकट आ गए और हमारी अपनी निधि दूर जा पड़ी, बल्कि यों कहना चाहिए कि अपनी निधिको हम पहचानना भूल गए।

वाणीके वरदानसे विभूषित मानवने अक्षरोंके समूह शब्दोंको अपनी अभिव्यक्तिका साधन बनाया था। विशेष अर्थोंमें विशेष शब्दोंका प्रयोग किया था। कालान्तरमें उसका प्रयोग विभिन्न रूप धारण करने लगा। (इसका तात्पर्य कदापि यह नहीं समझना चाहिए कि परिवर्तन इतना हो जाय कि [illegible] का [illegible] हो जाए।) फिर भी वस्तुतः विभिन्न रूपोंको अपनी पृष्ठभूमि एवं वातावरणके आधार पर रहना चाहिए। यद्यपि वातावरणमें परिवर्तन होता है, किन्तु [illegible] आजका वर्तमान स्थित है। [illegible] नजर [illegible]। [illegible] किन्तु हमारी अवस्था कुछ ऐसी ही हो गई है। [illegible] अब एक ओर हम विदेशी [illegible] मुग्ध नहीं हो रहे हैं, [illegible] और अपनी निधियोंको हम पहचानते नहीं। हमारी निधियोंके [illegible]

ठठोली किया करते थे, हमने भी उनके स्वरमें स्वर मिलाया था। फिर भला हम अपने आधार प्राचीनको कहाँसे समझ सकते हैं और यह अब यह दशा हुई है कि हम महाशून्यमें बड़ी तेजीसे घूम रहे हैं ; जाने कहाँ जाकर टकराएँ।

उक्तिमें आज अनोखापन जान पड़ता है। नारी! फिर उसकी पूजा!! और वहाँ देवता रहें!!! कुछ तो American goggles (अमरीकन रंगीन चश्मा) से देखनेवाले funny कहकर हँस पड़ेंगे, 'पूजा' और 'देवता' शब्द पर, और पौरुषके कुछ ठेकेदार गरज उठेंगे, 'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़नके अधिकारी'—तुलसीदास तकने कहा है। खेद है, दोनोंकी विषम बुद्धि पर। पहले ही कहा जा चुका है—शब्दोंके अर्थ पर यदि ठीकसे विचार किया जाय तो भाव स्पष्ट हो जाएँगे। भावोंके वाहन तो शब्द हैं न।

पूजाका अर्थ कदापि यह नहीं रहा कि आरती और घंटोंके द्वारा ही इसका सम्पादन किया जायगा। 'पूजा' शब्दके अन्दर निहित है श्रद्धा और सम्मानकी भावना! इसी प्रकार 'देवता' शब्दमें मनुष्यके समस्त श्रेष्ठ गुण पुंजीभूत हो उठते हैं। उपर्युक्त उक्तिका सौन्दर्य बढ़ जाता है 'रमन्ते' शब्दसे। निवास करना नहीं, परन् रमण करना, आनन्दपूर्ण स्थितिको प्राप्त करना, क्रीड़ा करना, भय तापसे मुक्त अवस्थामें प्राप्त होना—ऐसी अवस्थाको प्राप्त करनेका एक साधन यह भी था।

नारी नरका अभिन्न अंग है। 'अर्द्ध नारीश्वर' की कल्पनामें यह विचार साकार हो उठता है। नारी शक्तिका एक मानवीय रूप है। स्त्रियों चाहकर शक्तिकी उपेक्षा तो नहीं की जा सकती। उसे भिन्न करते ही पर तो 'शिव' शव हुआ था। 'शिव' रूप भी तो महाकालमें रूपान्तरित हो गया था। किन्तु, जिस क्षण इस शक्तिने उस परम पुरुषमें प्रवेश किया 'नटराज' नाच उठे। 'डमरू' की झनझनाहटमें कैलासके सरोवर 'कमल' खिल उठे। फिर क्या प्रकृति, नाच उठी समस्त-की सृष्टि, रुचिका साज [illegible] करने लगा।

फिर आज भारतभूमि पर नारीके अपमानकी कहानियाँ सुनाई पड़ रही हैं जैसे [illegible]। सामाजिक एवं [illegible] [illegible] की इसकी [illegible] हो सकती हैं। और आजके इस [illegible] [illegible] ऐसी ही [illegible] मिलता है। [illegible] [illegible] [illegible]

ही समाजका निर्माण हुआ है। नर और नारी दोनों ही उस समाजरूपी गाड़ीके पहिए हैं। एक पहिएके बलपर गाड़ी नहीं चल सकती। दोनों पहियोंमें अविकल समानता चाहिए। एक दाहिनी ओर यदि जुड़ती है तो दूसरी बाईं ओर। पर दोनों ही एक दूसरेके ऊपर निर्भर करते हैं। इसी प्रकार समाजमें नर और नारी दोनों हैं, दोनोंमें समानता चाहिए। एकमें किसी प्रकारकी त्रुटि अपरके लिए असुविधाओंकी सृष्टि करती है, और सारा बोझ फिर उसी एक ही पहिएपर जा पड़ता है। कार्यक्रममें विशृंखलता आती है। व्यष्टिकी इस दशाका प्रभाव समष्टि पर पड़ता है, और समाजमें दुर्बलताका सञ्चार होता है।

आर्थिक दृष्टिकोणसे भी मोटे तौरपर एक बड़ी मुख्य बातमें नारीका स्थान अपेक्षित है। वह है division of labour—श्रम विभाजन। परिवारमें नर और नारी अपनी सामर्थ्यके अनुसार 'अर्थोपार्जन' में एक दूसरेके सहायक होते हैं। श्रम विभाजनमें नारीका अंश अपरिहार्य है।

इन तत्वोंपर विचार ज्ञानके उषाकालमें ही किया गया था। और इसलिए समाजने अपनी सारी श्रद्धा और सम्मान नारीके चरणोंपर उँड़ेला था। उसी श्रद्धा सम्मानकी अंजलिको 'पूजा' कहा। पालन और पोषण शक्ति नारीमें है। इसी-लिए ऐसे समस्त तत्वोंको नारी रूपमें माना—पृथ्वी, नदी, ऊषा, यहाँ तक कि सारी प्रकृति और आद्याशक्ति नारी रूपमें ही कल्पित की गई। नारीका सम्मान अपहृत किस भाँति हुआ? जिस दिन जनताको गर्तमें डुबा देनेके प्रयत्न करते हुए समाजने उसे भी जड़ पदार्थकी तरह मानना शुरू किया, उसी दिनसे उसका अपमान प्रारम्भ हुआ। जिस दिनसे गाड़ीके पहियोंमें समानताके प्रति असावधानी शुरू हुई उसी दिनसे समाज रूपी गाड़ी डगमगाने लगी। जिस दिनसे नारीके अधिकार एवं आवश्यकताओंकी उपेक्षा का प्रदर्शन शुरू हुआ उसी दिनसे राष्ट्रका पतन भी शुरू हो गया। आज समाजका, राष्ट्रका, देशका यह विकार सब कैसे हुआ? समाजमें दुर्व्यवस्था कैसे पैठ गई?

शास्त्रोंकी, तुलसीदासजीकी दोहाई देनेवाले [illegible] तक भी उसके उदा-हरण देते हैं। वे भूल गए कि उनका समाज कितने [illegible] अप्रतिष्ठा [illegible]

करता हुआ अधःपतनकी ओर जा रहा है। रटे हुए वाक्योंको दुहराने लगे। अपने मतलबकी पूर्तिके लिए महापुरुषोंके वचनोंका हवाला देने लगे। पूर्वोक्त चौपाईका प्रायः उल्लेख किया जाता है। विषयान्तर होते हुए भी इसकी चर्चा कर लेना अच्छा होगा। गोस्वामीजीने महाकाव्यकी रचना की। अतः उसमें विभिन्न रस, विभिन्न पात्र, विभिन्न भावोंका एवं विविध परिस्थितियोंका दिग्दर्शन आवश्यक था। जिस प्रसंगमें उक्त चौपाईका व्यवहार हुआ है वह प्रसंग है समुद्रकी जड़ताका। राम-चन्द्रजीको बाध्य होकर उसके लिए शस्त्र उठाना पड़ा, और समुद्र डरकर उनसे प्रार्थना करने लगा। यह समुद्र पात्र तो उच्च कोटिका पात्र नहीं था; उसमें जड़ता थी, अर्थात् विवेचन शक्ति अत्यल्प बल्कि नहीं ही थी। अतः ऐसा पात्र समाजकी तुलाको क्या संभालता? और जो कुछ भी उसने कहा वह तो प्रछन्न बुद्धिके अनुसार कहा। तब ऐसे पात्रोंकी उक्तिका हवाला देना तो अपनी प्रछन्न बुद्धिका परिचय देना ही कहा जायगा। गोस्वामीजीने तो नारीका सम्मान अपने 'मानस' में सर्वाधिक किया है। राक्षस पत्नी मंदोदरी और वानर पत्नी तारा तकको समुचित आदर दिया। जिस नारीने अनायास उनको उनके मार्गका संकेत कर दिया, उस नारी जातिके लिए गोस्वामीजी कदापि दुर्भावनाका पोषण कर ही नहीं सकते थे। उन्होंने जब भी आलोचनाकी है, तब केवल इतर पात्रोंके प्रसंगमें। उनकी तुलनामें तो उन्होंने पुरुषकी कटु आलोचना अधिक की की है। और, यदि इस प्रकारकी उक्तियोंका व्यवहार किया जाता है 'जोंक पयोधर जोंक' समझकर चुप रहना ही उत्तम है। गाय के थनसे लोग दूध पाते हैं किन्तु जोंक उसी थनमें चिपकी रहनेपर भी रक्तहीका पान करती है।

नारीकी कुछ स्वाभाविक दासीनताका लाभ लेते हुए समाजने उठाया। स्वयं पतनशील बना जा रहा था अतः अपने अन्तःपुरको भी अपने साथ घसीटा। उसमें बल नहीं था स्वयं [illegible] यह करना था; इसी प्रकारकी उक्तियोंको चुन-चुनकर अपने लिए रक्षा-कवचकी रचना की। भूल गया, ऐसे वह पुरुष कि जिस नारीको 'अबलाका अधिकारी' कहकर पीड़ित करता है उसी नारीके [illegible] होकर समुद्रका समुद्र [illegible] सकते, और वह [illegible]

जयमाला। आज शास्त्रवेत्ताजन 'कौमार्य' पर आलोचना करते हैं। कुमार, 'कुमारी' विवाहित, विवाहिता और विधुर तथा विधवा सबके कर्तव्य एकसे हैं। अतः एकांगी विवेचन करना पक्षपातपूर्ण होगा। जीवनके विविध क्षेत्रमें सिद्धि प्राप्त करनेके लिए संयमकी आवश्यकता है। इसीकी शिक्षा दी जानी चाहिए दोनों को। यह नहीं कि नारी-पक्षको इसका अनुशासन माननेके लिए बाध्य किया जाय और अपर पक्ष अनुशासन भंगकर मनमाना उपद्रव करता चले। जिस दिन समाज इसकी गंभीरता और आवश्यकताका अनुभव करेगा, उसी दिन वह स्वयं ऊपर उठ जायगा—और 'नारी विद्रोह' की आशंकासे रहित हो जायगा।

पं० गुलाब रत्न वाजपेयीजी हिन्दीके पुराने पुजारियोंमेंसे हैं। अपनी लेखनीसे वाणीकी अर्चना ही करते रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'नारी विद्रोह' के द्वारा श्रीवाजपेयीजीने इस पक्षके साहित्यके अभावको दूर करनेका प्रशंसनीय उद्योग किया है। 'आकर्षण शक्ति' का लेखक यदि शक्तिसे और आकर्षित ही हुआ तो अस्वाभाविक क्या? आशा है इसका उचित समादर होगा।

कलकत्ता
श्रावण-पूर्णिमा,
२००६

प्रो० कमलादेवी गर्ग
एम० ए०



जनता के लिये—

नारी विद्रोह !

मेरे मित्र चौंक उठेंगे और "विद्रोह" शब्द पर आपत्ति करते समझेंगे—"नारी-विद्रोह" के माने हैं—"पुरुषों के विरुद्ध स्त्रियों की बगावत।"

लेकिन बात ऐसी नहीं—

न नारी के बिना पुरुष रह सकता है, न नारी बिना पुरुष के। दोनों का मधुर दाम्पत्य-जीवन मनुष्य की जीवन नौका पार लगा देता है।

नारी आदि युग से पुरुष के साथ रही है और बराबर रहेगी। लेकिन विद्रोह के माने यह नहीं, वह पुरुष के साथ लड़े झगड़े, उसे खरी खोटी सुनाये और उसके साथ संग्राम छेड़ दे। इससे तो दोनों की जिन्दगी नर्क बन जायगी। सुख और शांति हमेशा के लिये विदा ले लेंगे। लेकिन अब हमारी स्वतन्त्रता का सौभाग्य-सूर्य उदय हुआ है और उसके प्रकाश की किरणें गुलामी की जड़ता, अज्ञता और पतन को मिटा कर के ही दम लेंगी। आज भारतवर्ष की स्वाधीन जनता जाग रही है। नारियाँ जाग रही हैं। वे पुरुष के साथ मिलकर समाज में फैली कुरीतियों, जड़ताओं और अंधविश्वासों के प्रति विद्रोह करेंगी। वे सच्ची गृह-लक्ष्मी और सुयोग्य मातायें बनेंगी। वे चरित्र बल का आदर्श जनता के सामने पेश करेंगी। अशिक्षा के अन्धकार को दूर भगायेंगी। अपने व्यक्तित्व का निखार करेंगी और राष्ट्र निर्माण की सहायिका बनेंगी।

भारत की नारी निष्कलुष है। उसका आदर्श-जीवन संसार के आकर्षण की वस्तु है। आज के स्वाधीन प्रजातन्त्र युग में हमारी अधिकांश नारी-जीवन पवित्र और उच्च है। आरोप तो हमारा अधिकतर उन पुरुषों पर है—जो विदेशी शासन की गुलामी से पतन के अन्धकूप में गिर चुके हैं और नारी के लिए बन्धन के रस्सों की रचना कर चुके हैं। हमारे दुःखमय जीवन का कारण यही बन बैठे हैं।

अब जब तक स्त्री पुरुष एक दूसरे के साथ दूध पानी की तरह घुल-मिल न जायेंगे— राष्ट्र में खून की नदियों का बहना बन्द न होगा और अशान्ति के हाहाकारों से भारत की स्वर्ण-भूमि मैले धूलि कणों से लिपटी रहेगी।

क्या मैं पूछ सकता हूँ, आप कैसा भविष्य चाहती हैं? और आपको किस तरह का जीवन पसंन्द है? भारतीय उन्नति की सम्पूर्ण लाइनें रेल की पटरी की तरह आपके सामने खुली हैं और स्त्री पुरुष दोनों उन मार्गों से सफल-यात्रा समाप्त कर सकते हैं।

मैं अपने मित्रों से पूछता हूं—भारतवर्ष की नारी पहले क्या थी, आज क्या है और भविष्य में उसे क्या होना चाहिये? सहयोग से पहाड़ जैसे काम भी झरने की तरह पानी बन जाते हैं।

विज्ञान-मन्दिर
कलकत्ता
२५ अगस्त १९४३

मैं हूं आपका प्रिय मित्र —
गुलाबरत्न वाजपेयी



नारी विद्रोह



ग्रंथकार

स्विनी पार्वतीके रूपमें। यही है नारीका गौरव, नारीकी मर्यादा, नारीकी सफलता। पुरुष उसे सदैव विलास ऐश्वर्यमें डुबाये रखे, नारीको यह कामना कभी नहीं। उसकी तो कामना है जीवनका आदर्श मित्र। जिसे पति-ग्रहण करता है, समाज स्वीकार करता है, राष्ट्र गर्वसे छाती फुलाता है।

समस्त मानव-मंडलका निर्माण करती है स्त्री। यदि कोई माता अपने बच्चेको सिखलाती है—पढ़ो, लिखो और कर्त्तव्य पालनकर देशके सच्चे सपूत बनो तो बच्चेका ज्ञान दिन-दिन बढ़ता है और उसके मस्तिष्क में प्रतिभाका आकर्षक विकाश होता है।

मैं अपने चालिस करोड़ भाई-बहनोंसे कह रहा हूं यदि हम भारतीय नारीको न पहचानेंगे तो समझेंगे कैसे—स्वर्ग कैसा है? देवी-देवताओंकी पवित्रता कैसी है? भक्ति किसे कहते हैं, तपस्याका क्या मर्म है? नारीने शास्त्रोंकी रचनाकी है। शासन किया है, दुश्मनोंपर विजय प्राप्तकी है और ज्ञान-विज्ञानकी दुनियाको चमत्कारोंसे भर दिया है।

संसारकी प्रबल-शक्ति है नारी। वह नारी; जो माता, पत्नी, बहन और कन्याके रूपमें ममताकी मूर्त्ति है। मित्र! क्या तुमने देखा है—रहस्यमयी चांदनी? पृथ्वीका शस्य श्यामल रूप!—अथाह है, मधुमें नारी मूर्त्ति। प्रेमकी वह पुण्य-प्रतिमा।

सबसे अधिक तत्वकी बात तो यह है—भारतवर्षका आत्म-गौरव उन्हीं के हाथोंमें है। यद्यपि विश्वमें त्यागी बहु-बेटियां हो गयी हैं—लेकिन तुम्हारी आत्म-ज्योति जीवनका निर्माण करती है। यदि तुम्हारा अस्तित्व न होता तो अच्छे या बुरे पुरुषकी पहचान कौन करता? जागो, उठो, नारी! संसारके श्रेष्ठ पुरुष तुम्हारी अमर वाणी सुननेको उत्सुक हैं!

कुमारी-जीवन

मैं उन लड़कियोंसे कुछ कहना चाहता हूं—जो जवान हो गयी हैं और आजन्म कुमारी रहना चाहती हैं।

आजकी दुनियाकी बात मैं कहता हूं—जो रहस्य-रोमांचोंसे भरी है। अनेकों दुष्ट-द्रोही भोली लड़कियोंको बहकाकर लुभावने सब्ज-बाग दिखलाते हैं और उन्हें धोखेके चंगुलमें खींचकर कांटोंपर घसीटते हैं। यह दिन आपके लिये सावधानीके हैं। यदि आप झूठे प्रेमके नामपर आंखें खोलकर नहीं चलतीं, तो आपके चारों तरफ खाई-खंदक तैयार हो जाते हैं।

कुमारी हैं आप। विधाताने आपका शृंगार फूल जैसा किया है। यदि फूलकी सावधानीसे देख-भाल न की जायगी, तो दुश्मन असमयमें ही तूट जायगा।

आप पृथ्वीपर आई हैं। आपके जीवनकी कठिनाइयां और उनका उत्तरदायित्व आप पर है। यदि आप जिन्दगीका निर्माण सही रूपसे न कर सकीं तो भारतीय सभ्यता आपकी गलतियोंको क्षमा न करेगी।

यदि आप जीवनको भारतीय सभ्यतामें न ढालकर योरोपके लुभावने फैशनमें डुबाये रखना चाहती हैं—बदमिजाजोंकी आंधीमें उड़ी जा रही हैं—तो निकट भविष्यमें ही आप देखेंगी—जिस शरीरको लोभनीय बनानेकी चेष्टा चल रही थी, वही आपका खतरनाक दुश्मन बन बैठा है।

पौधा जब बड़ा होगा, उसमें फूल खिलेंगे। स्नेहके फूल, प्रेमके

फूल, मातृत्वके फूल। बारह वर्ष बादसे आपके जीवनमें परिवर्तन आरम्भ होते हैं। सौंदर्य और यौवनकी सूचना मिलती है। याने इस समय आप माता बननेकी तैयारी करती हैं। मेरे कहनेका मतलब समझ गयीं आप? स्वाधीन भारतकी माता बनने जा रही हैं और भारतवर्षको हर तरहसे सुखी बनाना आपका प्रधान कर्त्तव्य हो उठता है।

आज मनुष्य जाग रहा है, समाज जाग रहा है, जातियां जाग रही हैं और आप भी जागरणकी रोशनीमें विकसित हो रही हैं। कृपया जीवन-संग्राममें अपने पुत्रोंको उपहार दीजिये—जिन्दगी, शिक्षा और धन-जन।

आपके सामने जिन स्त्री-पुरुषोंका झुण्ड है, यदि आप उनके गुणोंकी प्रशंसा करती हैं, तो आपका सन्मान सहजमें ही बढ़ जाता है। आपके यही भाई आपके परमात्मा हैं, आपकी यही बहनें आपकी लक्ष्मी हैं। आपकी उपासनाका आधार होना चाहिये भारतवासी, आपसमें विद्रोहका वैमनस्य नहीं। एक दिन भारत आपको प्रतिष्ठाके सिंहासनपर बैठायेगा।

आप कुमारी हैं। आपको अपने संबंधमें विस्तृत ज्ञान होना चाहिये। आजकी कुमारी कलकी जीवन संगिनी है; परसोंकी माता। यदि जीवनके संबंधमें आपका ज्ञान विशाल न होगा, तो भारतको शक्तिशाली कैसे बनायेंगी? समाजका स्वास्थ्य कैसे सुधरेगा? मैं मानता हूं, आप शेक्सपियर, मिल्टन और शेलीके संबंधमें बहुत कुछ जानती हैं। कालिदासके नाटकोंका भी आपने अच्छा अध्ययन किया है। किन्तु आप अपने जीवनके संबंधमें बहुत कुछ अन्धकारमें हैं। क्यों? जीवन-ज्योति है आपकी जय यात्रा।

जो लड़कियां कहती हैं, मैं आजन्म कुमारी रहूंगी, उन्हें सर्व साधारण संदेहकी निगाहोंसे देखते हैं। स्त्रीको कभी न कभी पुरुषसे संबंध जोड़ना

ही पड़ता है, यदि वह नहीं जोड़ती तो पुरुष किसी न किसी बहाने जोड़ लेता है। योरोपकी बहुत स्त्री-लड़कियां कहती हैं— मैं कुमारी हूं। लेकिन उनके कुमार-जीवनकी भ्रष्ट कहानियां सर्व विदित हैं। सदैव कुमारी रहनेकी इच्छा चरित्र हीनताकी आदत है। जिसका पहला रूप मकड़ीके जालेकी तरह मुलायम होता है। बादमें वही आदत मोटी जंजीरका रूप धारणकर लेती है, और किसी भी जीवनको ध्वंस होते देर नहीं लगती।

मैं हमेशा कुमारी रहूंगी—यह प्रतिज्ञाकर न कोई स्त्री सुखी हो सकती है, न कभी सुख शांति पा सकती है। मैं कुमारी जीवन व्यतीत करूंगी,—किसी भी बर्बरताकी नकल करना, भारतीय नारीके लिये इससे अधिक लज्जाकी बात और क्या हो सकती है? इस तरहकी प्रतिज्ञा करनेवाली लड़कियां चाहे कितनी ही हिम्मत क्यों न रखती हों, स्त्री-समाजके लिये कलङ्क हैं।

जीवनमें बाधायें भी हैं, विपत्तियां भी। अनेकों शूलोंसे भरी है जिन्दगी। लेकिन यह सोचकर कोई लड़की विवाह न करेगी, इससे दोनों तरफके दरवाजे बन्द हो जाते हैं। आजन्म कुमारियोंके भी, विवाहित जिन्दगियोंके भी। माता बननेकी इच्छासे घबराना, बच्चे पैदा करनेकी कष्ट कहानियां सुन-सुनकर डरना, घोर कायरता और माता बननेकी जिम्मेदारीसे दूर भागना है।

दर असल नारीकी शोभा फूल बनकर मुरझा जानेमें नहीं, बल्कि फल उत्पन्न करनेमें है। इसीलिये मैं कहता हूं — जो स्त्रियां विवाह नहीं करतीं, वे मूर्खा हैं।

विवाह प्राकृतिक नियम, सुन्दरम् शृङ्गार और नारीकी पूर्णता है। स्त्रीका जब माताके सिंहासनपर जय-तिलक होता है, वह पतिको अधिक प्यारकी निगाहोंसे देखने लगती है। पत्नीके रूपमें ही वह झांसीकी रानी जैसी देवियोंको जन्म देती है, पत्नीके रूपमें ही वह दान देती है—

पटेल जैसे लोहेके आदमी।

नारीका निर्माण ज्ञान-विज्ञानका प्रकाश है। इसको जीवनके मर्मों में लिख लीजिये—"अपनी कमजोरियों और गलतियों सुधारनेमें जीवन का आकर्षक जागरण है। बच्चा सांपको देखकर पकड़ने दौड़ता है, लेकिन जब उसे ज्ञान हो जाता है—सांप जहरीली वस्तु है, तब वह सांपको फिर छूनेका साहस नहीं करता।



शिक्षाका मूल्य

भारतवर्षमें आध्यात्मिक-शिक्षाका प्रचार तेजीके साथ बढ़ रहा है। उसकी यह रफ्तार अँधेरी जिन्दगियोंमें दिव्य-प्रकाश भर देगी। हमारी माता बहनें और कन्यायें शिक्षाके विकाससे नवीन-स्फूर्ति और आकर्षक-जीवन प्राप्त करेंगी। लड़कोंके जीवन मनोहर आनन्दोंसे भर जायेंगे और अमीर गरीब सब अपनेको एक नया आदमी समझने लगेंगे।

शिक्षा सर्वत्र पूज्य है—चाहे वह अंगरेजी हो या अरबी। संस्कृत हो या गुजराती। महाराष्ट्री हो या बंगला। लेकिन शिक्षाके वह मायने तो कदापि नहीं, जो इन्सानको लंगड़ा बना दे—राष्ट्रको पतनके गड्ढेमें गिरा दे। भारतीय-शिक्षा वह आदर्श है जो साढ़े तीन हाथ के आदमीको असली मनुष्य बना देती है। उसका चरित्र निर्मल होता है—जीवन सुखी। ऐसी शिक्षा चाहे लड़कोंकी हो या लड़कियोंकी। भारतके चालिस करोड़ आदमी आज यही शिक्षा चाहते हैं—आज की कन्या कल की आदर्श गृहिणी हो, राष्ट्र-सेविका, भारतीय संस्कृतिकी पुजारिणी।

मैं कहता हूं—किसी भी लड़के या लड़कीके लिये भद्दीसे भद्दी कहानी उतनी हानिकारक नहीं; जितना कि बनावटी इतिहास, नकली राजनीति और बुराईसे भरा उत्तेजक साहित्य। आज किसी भी व्यक्तिको यह जानना चाहिये, आदर्श-ज्ञान या शिक्षा कच्चे घड़ेकी तरह

इसके जीवनको तोड़-फोड़ डालनेवाली न हो। स्त्री भारतीय-संस्कृतिको लेकर जो कुछ जानती है, चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो, पतिके साथ स्थायी सहयोग करेगी। लेकिन यदि वह आशा या [illegible] जानती है — और योरोपीय सभ्यतामें अपना गौरव समझती है — तो वह भारतीय पतिको एक दिन अवश्य रुलाती है।

आज बहुतसे स्कूल कालेजोंमें अंग्रेजीकी जो भद्दी शिक्षा दी जाती है, इसमें सबसे बड़ी बुराई तो यह है कि वह अधिकांश भारतीय कन्याओंके कामकी नहीं। वैसी शिक्षा भारतीय स्त्रियोंके मनपर इतना बड़ा प्रभाव डालती है, कि वे घर और समाजकी आवश्यकता भी समझती नहीं, उल्टे पाश्चात्य ढंगके फैशनमें पड़ जाती हैं और पुरुषोंके मनमें स्थान दे देती हैं।

क्या इन सब बुराइयोंके होनेकी आशामें [illegible] नहीं? यदि स्त्रियोंकी भारतीय-शिक्षाकी व्यवस्था बन जायगी तो गृहस्थ-जीवनको इस योग्य बना देगी जो भविष्यमें स्त्री-पुरुषोंके लिये सफलता [illegible] होगा। अब भी हमें इस युगके जीवन [illegible] शिक्षाका यह रूप [illegible] है। [illegible] और [illegible] स्त्रियोंके संसारमें [illegible] [illegible] नहीं। [illegible] शिक्षा [illegible] प्रकार डालती है और [illegible] गृहस्थाश्रम [illegible] देती है।

तुमने कितना पढ़ा-लिखा? किस रास्तेसे चल रहे हो? जो कुछ करते हो—किसके लिये और क्यों?"

शिक्षाके पाठशाले मानव-उन्नतिके कारखाने हैं। यहीं राजनैतिक और सामाजिक ऋषियोंका निर्माण होता है। साहित्यिकों, कलाकारों और कवियोंके कर्मक्षेत्रकी नींव यहींसे पड़ती है और वे स्वयं बन जाते हैं राष्ट्र।

यह सच है, कि आज हमारी भारतीय-शिक्षाका जिंदा रूप नहीं रह गया। इसीलिये आज हमारी कलायें लुप्त हैं। जीवन-विज्ञानका सौंदर्य नष्ट है। यदि शिक्षाके क्षेत्रमें स्त्रियाँ पिछड़ी हैं, तो आगे आवें, नवीन आत्म-ज्योतिसे उनके जीवन जगमगा उठेंगे। नवयुवक आगे बढ़ें—और शिक्षाकी उन्नतिमें अपना सर्वस्व न्योछावर कर दें। यदि बड़े बूढ़ोंने शिक्षाके दरवाजोंपर ताले लटका दिये हैं तो युवक-शक्तियाँ उन्हें खोल डालें—उनके जीवनके खजानोंमें कीमती धन मिलेगा। इस तरह शिक्षित व्यक्तिपर न किसीको अत्याचार करनेकी हिम्मत होगी, न अशिक्षित मातायें मूर्ख संतानोंको जन्म दे सकेंगी। लोग फिर वैसा ही तेजस्वी वीर्य प्राप्त करेंगे—और उनके ज्ञान-मंदिरमें पुनः उज्ज्वलता की रोशनी जगमगा उठेगी।

कोई भी लड़की, कोई भी लड़का—सिर्फ हाड़ मांसका पुतला नहीं, बल्कि देशका भाग्य विधाता है। मैं कहता हूं—आजके आदमियोंमें ज्ञान-विज्ञानका जो कुछ तेजस्वी रूप दिखाई दे रहा है—उनमें जो कल्पना और क्रांतिके भाव भर रहे हैं—उनकी जड़ोंमें छिपी है शिक्षा। शिक्षाकी प्यास और ज्ञानका असंतोष। जो एक दिन मनुष्यको महा-पुरुष बना देती है।

मनुष्यकी उन्नतिका प्रसार करना—यह है शिक्षाका सत्य रूप। मानसिक विकासकी बुनियाद। न्याय और अन्याय समझनेकी कसौटी-शक्ति!

६

हमारे जीवनको तोड़-फोड़ डालनेवाली न हो। स्त्री भारतीय-संस्कृतिको लेकर जो कुछ जानती है, चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो, पतिके साथ स्थायी सहयोग करेगी। लेकिन यदि वह आधा या गलत जानती है—और योरोपीय सभ्यतामें अपना गौरव समझती है—तो वह भारतीय पतिको एक दिन अवश्य रुलाती है।

आज बहुतसे स्कूल कालेजोंमें अँग्रेजीकी जो भ्रष्ट शिक्षा दी जाती है, उसमें सबसे बड़ी मूर्खता तो यह है कि वह अधिकांश भारतीय कन्याओंके कामकी नहीं। वैसी शिक्षा भारतीय स्त्रियोंके मनपर इतना भद्दा प्रभाव डालती है, कि वे घर और समाजकी भलाइयाँ तो समझती नहीं, उल्टे पाश्चात्य ढंगके फैशनमें पड़ जाती हैं और दुर्गुणोंको मनमें स्थान दे देती हैं।

क्या इन गलत रास्तोंको रोकनेकी आपमें हिम्मत नहीं? यदि लड़कियाँ भारतीय-शिक्षाकी उपासिका बन जायंगी तो मनुष्य-जीवनको उस योग्य बना देंगी—जो भविष्यके स्त्री-पुरुषोंके लिये समान रूपसे लाभदायक होगा। अब तो हमें उस युगको जीवित करना होगा, जो शिक्षाका नष्ट रूप बदल दे। आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारोंको संसारमें फैला सके। कुशिक्षाका एकमात्र उपाय है सु-शिक्षा। अशिक्षा तो हर्गिज नहीं। विकसित शिक्षा जीवनके प्रत्येक अंगमें प्रभाव डालती है और लड़कीके माता पिता या शिक्षक उसके जीवनको गौरवपूर्ण पुस्तकालय बना देते हैं।

बच्चेको लीजिये। बच्चेको सच्ची शिक्षा पहले पहल उसकी माता देती है, जिसमें बच्चा अपना कर्त्तव्य समझे और भारतका श्रेष्ठ नागरिक बन सके। आज भारतके लाखों मनुष्योंमें, लाखों गाँवोंमें, शिक्षाका घोर अन्धकार फैला है। शिक्षासे उनके जीवनमें नवीन विस्मय लाना होगा। करोड़ों मजदूर बच्चोंके मनमें शिक्षाका जागरण उत्पन्न करना होगा। जिसमें प्रत्येक बच्चेके प्रति माता पिताका रोजाना प्रश्न हो—"आज

तुमने कितना पढ़ा-लिखा ? किस रास्तेसे चल रहे हो ? जो कुछ करते हो—किसके लिये और क्यों ?"

शिक्षाके पाठशाले मानव-उन्नतिके कारखाने हैं। यहीं राजनैतिक और सामाजिक ऋषियोंका निर्माण होता है। साहित्यिकों, कलाकारों और कवियोंके कर्मक्षेत्रकी नींव यहींसे पड़ती है और वे स्वयं बन जाते हैं राष्ट्र।

यह सच है, कि आज हमारी भारतीय-शिक्षाका जिंदा रूप नहीं रह गया। इसीलिये आज हमारी कलायें लुप्त हैं। जीवन-विज्ञानका सौंदर्य नष्ट है। यदि शिक्षाके क्षेत्रमें स्त्रियाँ पिछड़ी हैं, तो आगे आयें, नवीन आत्म-ज्योतिसे उनके जीवन जगमगा उठेंगे। नवयुवक आगे बढ़ें—और शिक्षाकी उन्नतिमें अपना सर्वस्व न्योछावर कर दें। यदि बड़े बूढ़ोंने शिक्षाके दरवाजोंपर ताले लटका दिये हैं तो युवक—शक्तियाँ उन्हें खोल डालें—उनके जीवनके खजानोंमें कीमती धन मिलेगा। इस तरह शिक्षित व्यक्तिपर न किसीको अत्याचार करनेकी हिम्मत होगी, न अशिक्षित मातायें मूर्ख संतानोंको जन्म दे सकेंगी। लोग फिर वैसा ही तेजस्वी वीर्य प्राप्त करेंगे—और उनके ज्ञान-मंदिरमें पुनः उज्ज्वलता की रोशनी जगमगा उठेगी।

कोई भी लड़की, कोई भी लड़का,—सिर्फ हाड़ मांसका पुतला नहीं, बल्कि देशका भाग्य विधाता है। मैं कहता हूं—आजके आदमियोंमें ज्ञान-विज्ञानका जो कुछ तेजस्वी रूप दिखाई दे रहा है—उनमें उच्च कल्पना और क्रांतिके भाव भर रहे हैं—उनकी जड़ोंमें छिपी है शिक्षा। शिक्षाकी प्यास और ज्ञानका असंतोष। जो एक दिन मनुष्यको महा-पुरुष बना देती है।

मनुष्यकी उन्नतिका प्रसार करना,—यह है शिक्षाका सत्य रूप। मानसिक विकासकी बुनियाद। न्याय और अन्याय समझनेकी मेधावी-शक्ति!

एक अवसर प्राप्त प्रोफेसरकी बात याद आ गई। उनके दस वर्षका एक पुत्र था, तेरहकी कन्या। शिक्षाका उत्तम प्रबंध। बंगलेमें एक बागीचा था। जहां सांझ-सबेरे रंग-बिरंगे फूल खिलते थे। बच्चोंके लिये यह आनन्द-उल्लासका जीवन था। वे फूलोंके साथ खेलते, भंवरोंके साथ गाते। इससे उनका स्वास्थ्य सुन्दर होता, मनमें फुर्ती आती और वे रंगीन पेन्सिलोंसे कागज पर कितने ही आकर्षक चित्र बना डालते।

प्रोफेसर महोदयमें कई और चमत्कार मैंने देखे। वह अक्सर अपने साथ दोनों बच्चोंको ले जाते। कभी उन्हें मिउजियम दिखलाते, कभी चिड़ियाघर। इससे बालकोंमें ज्ञानका विकाश होता। उन्होंने बच्चोंके लिये एक मनोरंजन-क्लबकी भी स्थापना की थी। जिसमें बहुतसे बच्चे इकत्रित होते—प्रोफेसर महोदय उन्हें मनोरंजनके तरीके समझाते और श्रेष्ठ नागरिक बननेके प्रयत्न बतलाते। उनका कहना था—आजके बालक कलके श्रेष्ठ नागरिक होंगे—वे अपने घरको विश्वविद्यालय बना-येंगे—जिससे उनके जीवनकी मजबूत इमारत तैयार होगी।

एक दिन सांवली-संध्याको मेरे साथ टहलते हुए उन्होंने कहा—"अधिकांश मास्टर और मा-बाप सोचते होंगे—मारने पीटनेसे लड़के सही रास्तेपर चलते हैं। किन्तु मेरा अनुभव है—कठोर शासन क्षण भरके लिये चमत्कार भले ही दिखादे। किन्तु बादमें इसका परिणाम खतरनाक होता है। लड़केका मन टूट जाता है। वह सहानुभूतिकी जगह पाता है अत्याचार; और जब बड़ा होता है, तब बन जाता है उच्छृङ्खल, विद्रोही!

यह दुःखकी बात है। प्रत्येक माता पिताको इस विषयमें सतर्क रहना चाहिये। जीवनके अन्तस्तलमें बालकके महान कर्म छिपे रहते हैं जो समय पाकर बरसाती लताकी तरह फैल जाते हैं। इसलिये बच्चोंको जीवन-उन्नतिका विज्ञान बताना आवश्यक है। उनकी शिक्षा बालकोंकी मानसिक-शक्तियोंका विकाश करेगी। आजके बालक क्या चाहते हैं?

उनकी तबीयत किस ओर झुकती है? उनकी प्रतिभा-विकाशका क्या रूप होना चाहिये? जरा अन्तस्तल तक पैठ जाइये, सब बातें साफ साफ समझमें आ जायंगी और बच्चेकी बदमिजाजियोंका चेहरा बदलते देर न लगेगी।

शिक्षाकी संपूर्ण जिम्मेदारी है शिक्षक पर। बालक बालिकायें नर्म पौधेकी तरह हैं। शिक्षक जिधर चाहें, उन्हें मोड़ दें। बालक बालिकाओंका मस्तिष्क उनके सञ्चालनसे बने बिगड़ेगा। इसे न भूलिये—जैसे शक्तिकी आराधना बगैर भक्तिके पूरी नहीं होती, वैसे ही सरस्वतीकी साधना बगैर श्रद्धाके पूर्ण नहीं होती। उस समय न कोई बालक देश पूज्य हो सकता है, न कोई बालिका सौभाग्यवती।

शिक्षाके माने हैं—विद्वता, जीवन-निर्माण और विद्वानका गुण है—नम्रता।

बरसहिं जलद भूमि नियराये,
यथा नवहिं बुध विद्या पाये।

शिक्षित स्त्री चाहे गरीब हो या अमीर,—भविष्यमें वे कार्य करने होंगे, जिसमें पृथ्वीमें नारी-जातिका गौरव बढ़ सके। शिक्षा सिर्फ जीवनका चमत्कार ही नहीं, बल्कि संसारकी आंखोंका आकर्षक जुलूस है। घरमें जीता है मनुष्य; लेकिन विद्यालयमें विचारोंके आदर्श सीखकर आगे बढ़ता है। मैं शिवाजीकी तरह मातृभूमिकी रक्षा करूंगा। महात्मा गांधी जैसा देशको जगाऊंगा। तुलसीदास जैसा अमर कवि बनूंगा। इस किस्मकी कल्पनायें आजके भिखारी बालकको भी किस दिन भारत-गौरव बना देती हैं।

मैं बी० ए० एम० ए० हूं। न किसी लड़कीसे विवाह करूंगा, न किसीकी परवाह है मुझे। अंग्रेजी असभ्यताकी ऐसी कल्पनायें देवकृपोंसे भरी हैं। कई विद्यार्थियोंने मुझसे कहा—"मैं पढ़ता हूं डिग्री पानेके लिये।" "मैं पढ़ता हूं—डिग्रीकी इस ख्यालसे कोई आदमी तब

तक मनुष्य नहीं बन सकता, जब तक संसारके मनुष्योंकी भीड़ उसके गुणोंके सामने नतमस्तक नहीं हो जाती। डिग्री पाकर किसी दफ्तरकी कुर्सी संभालनेका ही नाम मनुष्यता नहीं, मनुष्यता प्राप्त होती है जीवन-निर्माण से।

आप बालिका हैं। किसी स्कूल कालेजकी पढ़नेवाली। मैं आपका स्वागत करता हूं। जागो मंगलमयी देवी !—भारतवर्षके दुर्भाग्यका इतिहास मिटा दो। मिटा दो अशिक्षाकी डरावनी काली रातें। शिक्षा का आध्यात्मिक सूर्योदय होने दो। स्वर्णाक्षरोंमें लिख दो अपना अमर नाम, अमर इतिहास -

मैं तुम्हारा अभिनंदन करता हूं !



विवाह क्या है ?

जैसे कवितासे अर्थको अलग करना असंभव है, वैसे ही स्त्रीसे पुरुषको दूर रखना भी असम्भव। मैं पुरुषकी बात कहता हूं, जबतक वह स्त्रीके साथ घुल मिल नहीं जाता, उसकी जिन्दगी अधूरी रहती है, वह पूर्ण नहीं कही जा सकती। जैसे लक्ष्मी नारायण और शिव पार्वती।

तुम मेरी हो, मैं तुम्हारा। आपसकी यह भावना आदर्श है, जीवन की महान पूर्ति। मनुष्यका यह सम्मिलित ज्ञान किसी दिन सफल-तपस्या का रूप बन जाता है और उस समय पुरुष एक पत्नीव्रतका समर्थक बन बैठता है।

यह हृदय-मिलन है विवाहका। कन्या घरमें रहती है। विवाह होते ही ससुरालकी यात्रा करती है। बचपनके साथी छूट जाते हैं और उसे एक नयी दुनियामें प्रवेश करना पड़ता है। उसके सामने नई जनता आती है और पेचीदा बन जाता है उसका इतिहास। उस समय लड़की की व्याकुलता बढ़ जाती है—पतिका वास्तविक रूप समझनेके लिये, उसके पवित्र प्रेमको पहचाननेके लिये। किन्तु उसी लड़की की सब बेचैनी समाप्त हो जाती है, जब वह आपसमें एक दूसरेको पहचान जाते हैं और प्रत्येक स्त्री पुरुषका आरम्भ होता है—वास्तविक सुखद-जीवन।

उस समय जिन्दगीमें आनन्दके जितने फूल खिलते हैं, वाद विवादके उतने ही कांटे भी। ब्याह हो गया। रंगीन स्वप्नोंकी तरह दिन

बीतने लगे। जैसे किसी जाग्रत देशमें पूर्णिमाकी चांदनी उदय हुई ह
एक विराट संसार आनन्दके झोपड़ेमें समा गया। संसारके समस्त राज्य तुच्छ हो जाते हैं—उस छोटीसी झोपड़ीके सामने। मनमें रहती है नवीन प्रेरणा। कर्ममें होता है उज्ज्वल उत्साह। किन्तु यदि उसी लड़कीसे आप सात वर्ष बाद मिलें तो ?—

सात वर्ष बाद,—उसके जीवनमें कितने ही परिवर्तन हो जाते हैं। वह संसारयात्रामें आगे बढ़ जाती है। पतिको पूर्ण रूपसे पहचान लेती है। अनेक नये स्त्री-पुरुषोंके साथ उसका परिचय हो जाता है। इसे कहते हैं—दाम्पत्य-जीवन। सुख-दुःखके झोंके आते हैं उस जीवन में। इसीलिये कहता हूं—दाम्पत्य-जीवन-मार्गमें जितने फूल खि हैं, उतने ही कांटे भी।

किन्तु फूलका आनन्द लेना तो सरल है। परन्तु कांटोंकी राहपर चलना तलवारकी धारपर दौड़ना है। दुःखी-जीवनमें आनन्दका कवित्व नहीं, करुणाके आंसू बहा करते हैं। याने यह संघर्षमय-जीवन है ? संघर्ष ? - इस संघर्षसे जो घबरा गये, नीचे गिर पड़े। जिसने बहादुरी के साथ मुकाबला किया —जयमाला उसके गलेमें पड़ी। उस समय हमें बनानेवाला कसौटीपर कसकर देखता है—सोना खराब है या पीतल का मुलम्मा।

मैंने नारीको हमेशा देखा है—त्याग, दया और उदारताके रूपमें। जब-जब पुरुषपर विपत्तियां पड़ती हैं, नारी मिल जाती है उसको आपत्ति रूपमें देवी जैसी। दोनोंमें चुंबक शक्ति है। दोनों एक दूसरे के आकर्षणमें अपनेको खो देते हैं। उनमें एक दूसरेके प्रति आत्म-समर्पणकी भावना आ जाती है। फिर क्या होता है ? कांटोंके वनमें किसी दिन वसंतकी बहार खिल उठती है। मानव दुर्बलतायें पी जाते हैं दोनों विषकी तरह। आंखें बदल जाती हैं और संसारकी दुःखमयी धरती उन्हें दिखाई देती है सुनहरे साम्राज्यके रूपमें।

कई नवयुवक कहते हैं—"मैं विवाह न करूंगा"— मैं कहता हूं—"विवाहसे पेचीदा समस्यायें हल हो जाती हैं। नारी-पुरुष-जीवनका शृंगार करती है।"

आपने महात्मा-गांधीका विवाहित-जीवन देखा है ? कस्तूरबा जैसी धर्म-पत्नी विवाहित-जीवनकी आदर्श है—सत्य, संयम और अहिंसा की परीक्षामें महात्माजीकी प्रधान सहयोगिनी थीं कस्तूरबा। ऐसे ही अनेक महा-पुरुषोंके जीवनका शृंगार किया है धर्म-पत्नीयोंने। समय-समयपर उन्हें बल दिया है, जागृति दी है, आत्म-ज्योति प्रदान किया है।

आजके गुलाम—हृदय सदियोंकी गुलामीसे इतना संकुचित हो गये हैं, कि मनुष्यने विचार शक्ति खो दी है। उनकी प्रतिभा लुप्त हो गयी है, साहसका पता नहीं। युवक-युवतियोंको शिक्षाके नामपर मानसिक पतनके पाठ पढ़ाये जा रहे हैं। उनके मुखसे सुन लीजिये लंबी चौड़ी वैज्ञानिक व्याख्यायें। किन्तु मनुष्यके अन्तस्तलमें जीवन-उन्नतिके जो विराट बीज छिपे हैं, उनकी शिक्षा युवक-युवतियोंको नहीं दी जाती। इस गलतीका परिणाम सुनिये--बड़ी-बड़ी लड़कियां कहती हैं—मैं विवाह न करूंगी। लड़कोंका नारा है—विवाह बंधन है और इस जालमें फंसना जंजाल मोल लेना है।

ऐसा क्यों होता है ?

विवाहके महान महत्वकी शिक्षाका अभाव। बर्बर पश्चिमीय सभ्यताने अधिकांश आदमियोंके दिमाग खोखले बना दिये हैं। उनकी लड़खड़ाती शिक्षा, निकम्मा मोह और बदनाम प्रेम आज अधिकतर घरोंको नर्क बना रहा है। न भाई-भाईको देख सकता है, न पुत्र माता-पिताको ? क्या युवक-युवतियोंकी इस बनावटी प्रगतिमें पाषाण जैसी पशुता नहीं है ?

पश्चिमी देशोंका लक्ष्य है—भोग और सुरति। भारतका गौरव पूर्ण

सिद्धान्त है—स्त्री-पुरुषकी मिलन-ज्योतिसे आनन्दमय कर्म-जीवन, ब्रह्मज्ञान। विवाहके बाद हम अर्जुन जैसे राष्ट्र कर्मी हों। युवतीका हृदय युवकके अनुकूल हो। युवकका युवतीके प्रति। गृह-शृंगारकी शुरुआत यहींसे होती है। देवताओंका रहना यहीं होता है—आनन्दमय जीवन, बालक-बालिकाओंके आत्मविकाशकी शिक्षा, माता-पिताका आदर्श-प्रबंध।

याद रखिये—विवाह है जीवन उन्नतिकी तपस्या। इससे शरीर और मनकी पवित्रता बढ़ती है। वर्ना काम वासनामें लिप्त रहना भारतीय संस्कृति नहीं, वर्बर सभ्यताका विकार है। पहले भोग-विलास, फिर अधिक उम्रमें विवाहकी तैयारी—यह है गुलाम जीवनसे अपनेको जकड़ लेनेका सबक। ज्यादासे ज्यादा वेश्याओंको जन्म देनेकी रचना पद्धति। प्राकृतिक नियमोंका उल्लंघन कर अत्याचारोंकी सृष्टि!

पश्चिमी सभ्यता और विदेशी संस्कृतिका हमारे भारतीय जीवनपर बहुत बुरा असर पड़ा है। एक तरहकी नष्ट सभ्यताने हमारे हृदयमें जड़ जमा ली है। जिसमें इतना नकली-आकर्षण है, कि लोगोंके सामाजिक जीवन बहुत ही बुरे तरीकेसे नष्ट हो गये हैं। और साहित्यकी तत्वपूर्ण-सृष्टि बंद सी हो गयी है।

आप विलास रंगमें रंगी कुमारियोंको देखिये—जैसे बबूलमें पीला फूल। दुर्बलता और असफलताओंसे न उनके यौवनमें उत्साह है, न मानसिक उज्ज्वलता। लोग प्रगतिशीलताके नामपर महानाशके दरवाजे खोल रहे हैं। सभा समितियोंमें गला फाड़-फाड़कर सुधारकी ढोल पीट रहे हैं। लेकिन पर्देकी ओटमें कुछ दूसरी ही लीलायें चलती हैं। इसीलिये कहता हूं—गरजनेसे बरसनेकी कीमत ज्यादा होती है।

अनेकों कुमारी युवतियां पूछती हैं—मैं विशेषता कैसे प्राप्त करूं? मेरा उत्तर है, पहले दाम्पत्य-जीवन मधुर बनाओ, फिर सरस्वती और लक्ष्मीके रूपमें भरदो—जीवनमें उज्ज्वल शिक्षाका चमत्कार और धन

का अक्षय भंडार !

अविवाहित युवक पूछते हैं—"मैं किस रास्तेसे चलूं ?"—मैं कहता हूं—"पहले विवाह करो। विवाहसे उलझी समस्यायें सुलझ जाती हैं और आदमी संकुचित कुवेंका मेंढ़क न बनकर मुक्तगगनका पक्षी बन जाता है। उनके दाम्पत्य जीवन हो उठते हैं सजीव और सफल।

आज मैं उन आदमियोंकी बातें कहता हूं—जो धनके अहंकारमें जमीन पर पैर नहीं रखते। वे जानवर जैसे काम वासनाकी पूर्तिके लिये अनेक स्त्रियोंसे विवाह कर लेते हैं। याने झुंडके झुंड नकाब पोश पहले अबला नारीका हाथ पकड़ लेते हैं। फिर वासनापूर्तिके पश्चात उसे ढकेल देते हैं पहाड़की चोटीसे। क्या मनुष्यके लिये यह कलंक और नारी अपमानकी पर्यन्तता नहीं ?

भारतवर्षका ऐसा ही जबरदस्त कोढ़ है—वृद्ध विवाह। बुड्ढा रुपयोंके पहाड़पर बैठा है। काम तृप्तिके लिये उसे चाहिये सुंदरी युवती। बुड्ढा रुपयोंके बलपर जनताकी आंखोंमें धूल झोंक देता है। और कर लेता है किसी अल्प वयस्क लड़कीसे शादी। याने वह भोली भाली जनताका जीवन नष्ट कर उसे डाल देता है दलदलमें। कुछ दिन आनन्दसे कटते हैं, लेकिन जब वृद्ध पति महाशय नर्कका रास्ता नापते हैं, तब विधवा युवती महसूस करती है, उसका बुड्ढा पति था, उसका जानी दुश्मन। जो हत्या कर जानेसे बढ़कर उसके साथ दुश्मनी कर गया है और उसकी भरी जवानीको वैधव्यकी ज्वालामें जला डालनेकी भट्ठी सुलगा गया है।

जो लड़की-लड़के नौजवानीमें विवाह कर लेते हैं, आत्मीयजनोंमें उनकी प्रशंसा होती है। ऐसे विवाहित लड़कोंको मां बाप सपूतके रूपमें देखते हैं। घरका शृङ्गार, मानो जिन्दगीमें समुद्रकी सी लहरें उठने लगती हैं। किसी न किसी दिन कुमार-व्रतकी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ती है युवकको, और जब वह विवाहकी पहली सीढ़ीपर कदम रखता है, उसका संसार बदल जाता है। वह निर्भय हो चलता है दुनिया में।

समाज भी उसे देखता है रहस्यमय निगाहों से। यह है कर्म जीवन। लेकिन जहां कर्ममें शिथिलता आई, कर्त्तव्यका पालन जबरदस्ती किया जाता है—वहीं एक दिन बदलेमें मिलती है—असफलता और घोर निराशा

सच तो यह है, पृथ्वीमें व्याह साधना की वस्तु है, जो एक दिन संसार भरमें फैल जाता है। महापुरुषोंको देखिये, उनके गौरव पर्दे में छिपी बैठी हैं उनकी जीवन संगिनियां। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, ऋषि टालस्टाय, महात्मा गांधी और रूजवेल्ट की पत्नी इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

पत्नी प्रारम्भ से ही पतिको उत्सर्ग मार्ग पर ले जाती है और एक दिन इन्हीं उत्सर्ग के द्वारा वह बन बैठती है राष्ट्र की महान देन। वह जानवरको मनुष्य और खूनी को महात्मा बना देती है। यदि कोई पत्नी अपनेमें इन गुणोंको नहीं खींच लाती तो उसका जीवन कलह और पतनकी चिनगारियोंसे भर जाता है। झगड़े फिसाद और पारिवारिक ध्वंसके नाटक आपने अनेकों देखे हैं। यदि ऐसी ही ध्वंस लीलायें आपके जीवनमें भी चलती रहीं तो दाम्पत्य जीवनके लिये आपके परिवार और देशके लिये एक घातक समस्या है।

एक मित्रने कहा—"जबसे मैंने शादी की मुझे आश्चर्यजनक शांति मिली है।" एक लुटेरेकी कहानी है—"पहले मैं खतरनाक था। लेकिन जबसे शादीकी, लोग परेशानियोंसे बच गये" एक उच्छृंखल युवककी रिपोर्ट है—"शादीके बाद मैं एक बड़ी कम्पनीका संचालक बन गया और मेरी जिन्दगी मधुर बन गयी।"

चाहे पुत्र हो या पुत्री,—दोनों परमात्माकी सृष्टिके प्रधान अङ्ग हैं। व्याहके पहले लड़के लड़कीकी सम्मति लेना, उनमें समानता देखना, माता पिताका मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिये। योग्यता, स्वास्थ्य, सौंदर्य, आर्थिक स्थिति और सद्गुणों पर ध्यान देना तो बहुत ही आवश्यक है।

विवाहका प्रश्न लेकर मुझसे मिलने वाले युवक युवतियोंकी संख्या

कम नहीं। मेरा उत्तर एक ही है—"मैं विवाहका समर्थक हूं। वह भी जल्दी ही, नव जवानीके बागीचेमें कदम रखने तक। यदि ऐसा नहीं, तो प्रत्येक युवक युवतीकी उम्र खतरेमें पड़ जाती है।"

नव जवान जिन्दगीसे बच्चे सबल, स्वस्थ और बहुत दिनों तक जीवित रहते हैं। लेकिन जो विवाह न करने की झूठी डींगे हांकते हैं—वे या तो पतिताओंके हाथके खिलौने बन जाते हैं या चारों तरफ व्यभिचारकी सृष्टि करते हैं। कुछ ऐसे भी बदमिजाज लड़के हैं, जो विदेशोंसे शादी कर लाते हैं। किन्तु जब विदेशी पत्नी भारतीय जीवनका वायुमण्डल देखकर झगड़े उपस्थकर देती है तो पति देवताकी आखें खुलती हैं और उनके मुंहसे निकल पड़ता है—कहां की आफत मैंने मोल ली।

मैं सब तरह की, एक दूसरी जातियोंके साथ विवाहका पक्षपाती हूं, लेकिन कब, जब सांसारिक समुद्रके दोनों प्रतिकूल किनारे अनुकूल हों। दोनोंका मिलन मधुर हो। दोनों संसार सागरमें जीवन नौका सही रास्तेसे खेना जानते हों।

मैं एक नेताकी राय अबतक नहीं भूल सका। उन्होंने विवाहके दिन लड़कीसे कहा—"अपने घरका श्रृंगार करना तुम्हारा धर्म है। पतिको हमेशा प्यार करना, जिससे तलाककी नौबत न आये। दुनिया प्यारसे ही फूलती फलती है।"

'इमीटेशन' या नकली जिन्दगी आत्मा और परमात्माके बीच गहरा परदा डाल देती है। यदि दाम्पत्यका मधुर जीवन इस ज्ञानतक अबतक नहीं पहुंच सका तो प्रत्येक स्त्री पुरुषको इस विषयका विद्वान बनना चाहिये। यह कभी न भूलिये—

विवाह सृष्टि है और सृष्टि आनन्दमय संघर्षों और सफलताओंकी गुफा—जिन्दगी !

भयो क्यों अनचाहतको संग ?

एक युवतीका बयान है—"मेरे हृदयमें अनेकों घाव हैं। पति देवता दुराचारी हैं। मैं उन्हें राहपर लानेके लिये जमीन आसमान एक कर रही हूं। शायद काले मेघोंका ज़ाल छिन्न भिन्न कर किसी दिन आनन्द की किरणें चमक उठेगा।"

मैंने देखा—युवती की आखों से टपाटप आंसू चू रहे हैं।

ऐसे कितने ही आंसू मैंने दाम्पत्य जीवन में टपकते देखे हैं। कहीं जबरदस्ती शादी के कारण सोने का संसार मिट्टी में मिल गया। कहीं पत्नी को पति पसंद नहीं, कहीं पति पत्नी से घृणा करता है।

ऐसा क्यों होता है ?

मां बेटे का झगड़ा देखा है आपने ? और सास बहू की लड़ाई ? सबके जीवन-तारोंको एक ही झंकार है—"भयो क्यों अनचाहत को संग ?"

मूर्खा स्त्रियोंसे आपसी झगड़े दाम्पत्य जिन्दगियोंमें अधिकतर झगड़े पैदा कर देते हैं। यदि उस समय पति बुद्धिमान हुआ तब तो गनीमत है, वर्ना दोनों एक दूसरेके कट्टर दुश्मन बन जाते हैं। गृह युद्ध तो आज घर घर लगे हैं। आपसी अविश्वास और भीतरी चालबाज़ियां बढ़ रही हैं, एक दूसरेकी आंखोंमें धूल झोंकी जाती है। यदि कहीं घरमें कुरूपा बहू आगयी—तो और भी आफत। विधवाओंके मलिन चेहरे और अत्याचार पीड़ित स्त्रियोंके मन,—सबमें एक ही दर्द भरी आवाज

आती है—"भयो क्यों अन चाहतको संग ?"

किसी दिन इन बर्बर विचारोंका अवश्य अंत होगा और समाजमें उज्ज्वलता जरूर बढ़ेगी। चाहे स्त्री हो या पुरुष—जब तक दोनों एक दूसरेके अभावकी पूर्ति न करेंगे—तब तक जिन्दगियोंका सफल होना मुश्किल है। क्या पति जिस चीजका भिखारी है, पत्नी उसकी पूर्ति नहीं कर सकती ? और पत्नी जो दान चाहती है, क्या पति उसे नहीं दे सकता ?

अजी, पति अन्वेषक है और रक्षक। उसका उत्साह तो तभी बढ़ेगा जब स्त्री उसे विजयकी उत्तेजना दे सके। वह प्रबंध, निर्माण और निर्मल शासनमें पुरुषकी सहायता कर सके। यदि स्त्री किसी विवादमें शामिल नहीं होती, आपत्तियोंसे पुरुषको बचाकर सांसारिक प्रलोभनोंसे बची रहती है तो वह निश्चय प्रशंसाके लायक है। पुरुष बहुधा पथ भ्रष्ट हो जाते हैं, किन्तु सुयोग्यनारीके शासनमें उसे रामराज्यका आनंद मिलता है।

आदमी घर क्यों बनाता है ? सुख और शांतिसे रहनेके लिये। यदि उसमें संदेह, भय और पार्थक्यका प्रवेश हो जाता है, तो उसकी बुनियादको कमजोर होते देर नहीं लगती। भीतर बाहर दोनोंका ही प्रबन्ध उत्तम होना चाहिये। यदि आपने घरमें शांतिकी दीवाल उठा दी और अन्दर आग सुलगने लगी तो कोई घर कभी देव मन्दिर नहीं बन सकता।

मैं कहता हूं, यदि आपका दाम्पत्य-जीवन सुखी है तो आपकी छोटी-सी झोपड़ीके चारों तरफ उज्ज्वलता फैल जाती है। भारतीय संस्कृति कहती है—स्त्री उत्पत्ति, विकास और संहारका मूल तत्व है। जैसे ज्ञानकी रचना सरस्वती करती है और सार्वत्र मंत्रोंके सिंहासनपर बैठी है गायत्री। वैसे ही हमारे घरोंमें अन्नपूर्णाके रूपमें नारी विराजमान है। यदि पुरुष मन है तो नारी प्राण। प्रत्येक मनुष्यकी पूर्णता दो

भागोंमें बंटी है—स्त्री और पुरुष। यदि दोनोंके जीवनमें पूर्व और पश्चिम की झाँकी है, तो एक दिन दोनोंको कहना पड़ता है—"भयो क्यों अनचाहतको संग?"

मैं मिट्टीकी बात नहीं कहता, किन्तु मानव प्रकृति एकांत चाहती है और प्रत्येक स्त्री अपने पतिके साथ रहनेकी इच्छा रखती है। माता कस्तूरबाने महात्मा गांधीके सत्संगमें आत्मबलिदान दे दिया। दाम्पत्य सुखका इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है? जहाँ पति नर्क है, और कुलक्षणी स्त्री है कर्कशा-मूर्ति—वहाँ सोनेका संसार मिट्टीमें मिल जाता है।

मैं अनेकों विवाहित किन्तु उदास रमणियोंको देखता हूं और उनमें निवेदन करता हूं—"मनुष्यमें उदासी आती है, चिंताकी ओर ध्यान दौड़ाने से। भयभीत कल्पनाओं से। सच तो यह है, जिसने खुशियोंसे अपनेको जीत लिया—बड़ेसे बड़े राजमहल और शहर उनके कब्जेमें हैं।"

एक असफल युवकका बयान है—"मैं जीवनसे निराश हूं।"—मैं कहता हूं—"चमकते सूर्य और आशामें कोई फर्क नहीं। जहाँ आशा है वहाँ आंधीमें भी चिराग जला करते हैं।"

जिस दाम्पत्य—जीवनमें अशांतिकी आग भड़कती है। जहाँ आनंदके फूल खिलनेकी आशा थी, वहाँ निराशाके काँटे हैं, तो दाम्पत्य प्रेमका बंधन रेशम जैसा आकर्षक नहीं, फांसीके फंदे जैसा भयानक है। मैं उस जीवनको दर्दके साथ अध्ययन करता हूं—"जो व्यक्तित्वकी महानता खोकर साधारण आदमी बन बैठा है।"

जिदकी बात लीजिये। जिद स्त्री पुरुष दोनोंके लिये खराब है। यदि कोई अपनी हार मान लेता है, तो सारा झगड़ा समाप्त हो जाता है, और किसीको यह कहनेका मौका नहीं मिलता—"भयो क्यों अनचाहतको संग?"

एक दूसरेसे कोई बात छिपाना तो और भयानक है। चेहरेकी

तनाव किसी भी समय उलट सकती है। फिर तो बड़े बड़े अनर्थ हो जाते हैं। वर्षोंका संचित प्रेम कपूरकी तरह उड़ जाता है।

सु-शिक्षाका अभाव, स्वास्थ्यको न संभाल सकनेकी बीमारियाँ, मानसिक पीड़ायें और जीवन-उन्नतिको न समझ सकनेकी अज्ञानतायें, दाम्पत्य-जीवनको मटिया मेट कर देती हैं। मौन या चुप रहनेका सिद्धांत भी खतरनाक है। क्या ही अच्छा हो, यदि एक दूसरेकी गलतीको लोग समझा दें। संसार चाहता है जरासी मुस्कुराहट। जो एक दूसरे की सहायतामें जादूसा असर कर दिखादे और उनके जीवन फूल जैसे खिल उठें।

एक सूत्रमें संयुक्त होकर स्त्री पुरुष संसारकी विराट शक्ति बन जाते हैं। इसलिये एक दूसरेके आत्म सम्मानमें किसी तरहका धक्का न लगना चाहिये। एक दूसरेका आदर करना जीवनकी विजय है। यदि समझ-दारीसे काम लिया जाय तो हर बातका फैसला खुशीके साथ हो सकता है।

प्रेमको लीजिये। प्रेम दुनियाकी किसी भी वस्तुसे ज्यादा कीमती है। उसकी राजधानी में आदर्शोंको किसी न किसी दिन प्रवेश करना ही पड़ता है। और जो उसकी गहराईमें पैठ जाता है, उसकी कल्याण बुद्धि कभी घायल नहीं होती। दाम्पत्य जीवन उस समय आत्म संयम के साथ एकाकार हो जाता है, और दिमागी कामोंमें इतनी दिलचस्पी लेने लगता है कि उसकी तल्लीनतामें उन्हें गहरा आनन्द मिलने लगता है।

रामायण जैसा पवित्र ग्रन्थ किस भाग्यशालीने न पढ़ा होगा? सीताका चरित्र देखिये, रामके लिये उन्होंने क्या नहीं किया? वह पतिके सुखमें सुखी थीं, दुखमें दुखी। जंगलोंमें सदा ही पुरुषोत्तमके साथ रहीं सेविका बनकर रहीं। इसे कहते हैं—आदर्श दाम्पत्य—जीवन। ऐसी ही स्त्रियाँ देवी हैं और लक्ष्मीके रूपमें पूजी जाती हैं। जो संकटोंके

तूफानको वसंतके झोंके वना देती हैं, उस हंसी खुशीपर न कोई सम्राट शाशन कर सकता है, न कोई खजाना उसकी कीमत चुका सकता है।

ईमानदारी, सचाई, साहस और प्यारसे दाम्पत्य—जीवनमें महान वल मिलता है। पति पत्नीको जिस वातमें आनंद आये और संतोप प्राप्त हो, वैसी ही सामग्रियोंका चुनाव करते रहना चाहिये। यदि ऐसा नहीं होता तो नतीजा क्या निकलता है? राष्ट्र-पतनके रास्ते खोल दिये जाते हैं। पारिवारिक व्यक्तित्व तथा आत्म—मर्यादाका संहार होने लगता है।

मैं आपको नारी-द्रोहियोंकी सूचीमें नाम लिखानेको नहीं कहता। यदि दाम्पत्य-जीवन आनन्दकी राहपर चलते हैं तो दोनोंकी आयु वढ़ जाती है और वे संसारमें वहुत दिनों तक जीवित रहते हैं।

दाम्पत्य-जीवनको मधुर वनानेकी सफल सीढ़ियां निम्नलिखित हैं:—

(१) दोनोंका एक सिद्धांत
(२) सफलताकी साधना
(३) एक दूसरेके प्रति दोनोंमें सम्मान
(४) सहानुभूति
(५) ऊँचे विचार
(६) विपत्तिमें एक दूसरेके साथी
(७) सादगी और आनन्दमय जीवन

मैं कहता हूं :—

जिन्दगीका साझीदार वनानेके पहले युवक-युवतीको खूव सावधानी के साथ चलना चाहिये। कदम-कदमपर कांटे विछे हैं।

सूर्य तपता है। हवा गर्म होती है और हम दरख्तकी छायामें खड़े हो जाते हैं। क्यों? शांति पानेके लिये।

आप ही हैं भारतकी आशा, वुद्धि और विकाश-शक्ति। आपके देश और समाजमें जागरणकी इतनी रोशनी फैली रहनी चाहिये कि स्वाधीन-भारतकी जनता उससे सवक सीखे और आपसे सफलताका आशीर्वाद ले सके।

नव्वे प्रतिशत मनुष्य नकली छायाका अनुभवकर प्रचंड धूपकी लपटोंमें झुलस रहे हैं।"

स्त्रियाँ सरे बाजार अपमानितकी जाती हैं। लोग गृह युद्धको सुंदर वायु मंडल समझने लगे हैं। पृथ्वीमें एक नया फैशन फैला है। जो भारतीय-संस्कृतिको भूल गया है। उसे गीता रामायणसे कोई दिलचस्पी नहीं। वह रावणको प्यार करने लगा है और रामको इतिहासकी कल्पना समझने लगा है। इसीलिये मेरे जीवन पृष्ठोंमें साफ-साफ लिखा है—"आज बाजारमें घासकी कीमत है, लेकिन आदमीकी नहीं।—क्यों?—शराब, औरत और मनुष्य-हत्याका फैशन?"

अकालके दिनोंमें भूख-प्याससे तड़प-तड़पकर मरनेवाले स्त्री-पुरुषों के वीभत्स दृश्य, नवाखाली, कलकत्ता, पंजाब और सिन्धकी पैशाचिक अराजकता, अन्न-वस्त्रका हाहाकार, हजारों निरपराध कन्याओंका हरण;—कितनी भयंकर तबाही है मनुष्यकी। बड़े-बड़े पूंजी-पतियों से मिलिये, आर्थिक सहायताकी बातें कीजिये - उनके संगीतकी तान है—धन मैंने कमाया है। किसीको क्यों दूँ? और मैं भी कहता हूं—आप किसी जीवनका विकाश क्यों करें? आपको लाखों मिल गये तो करोड़ों चाहिये। करोड़ोंका बंदोबस्त हो गया तो पृथ्वी पति होनेकी प्यास। अजीब-सा है आजके मनुष्यका पैशाचिक रूप! असंतोष, निन्यानवे का चक्कर, मनुष्यताका पतन! अपनी अलग डफली हैं, अगणित अलाहिदा राग,—मनुष्य तबाह न होतो क्या हो? वह आंखोंसे देखता है, लेकिन उसकी दृष्टि-शक्ति अंधी है। और जबतक उसके तीसरे नेत्र न खुलेंगे—न तो उसकी तबाही दूर होगी, न उसमें जीवन-निर्माणका महत्वपूर्ण विकाश होगा।

आज अधिकांश बेवकूफ व्यक्ति फशनमय जिन्दगीको आर्ट या कला कहने लगे हैं—जिसमें विषवृक्षके जहरीले बीज बो दिये गये हैं—शराब, औरत और गृहयुद्ध। मैं कहता हूं—बंदकर दो भारतकी पवित्र

और [illegible] जीवन-मरणके, यह भी सत्य । [illegible] चक्करोंकी भीतिसे स्वाभाविक रहना ही बुद्धिमानी है । जब किसी [illegible] आकर्षणोंमें मन फँसता दिखे—उससे दूर भाग जाओ । यह किसी भी तरह आकर्षणमें न फँसेगा । मनुष्य अपना ही दोस्त है, अपना ही दुश्मन !

शराब, जीवन और जुआ, [illegible] इनकी स्तुति होती है वैराग्यकी जगह से । फिर [illegible] पुस्तकोंमें जीवनका आकर्षण मालूम होता है । बाद में आत्मग्लानि, फिर पतन और हाहाकार !

[illegible], यह प्रमाण काफी है—जो [illegible] आदमियोंको पागल और कमजोर बना देते हैं । मनुष्य-जीवनमें दुर्भाग्यका इससे बड़ा इतिहास कहीं नहीं दिखाई पड़ा । यह है सत्य । आदमी इससे, [illegible] देखता है और उसीमें [illegible] अनुभव करता है । क्या सच ! —संसार [illegible] है और वैराग्य सिर्फ मनुष्य [illegible] है ।

अब मनुष्यका [illegible] अध्ययन कीजिये । केवल मनुष्य-[illegible] दुर्लभ है । [illegible] देखो ही [illegible] जाता है । मैं [illegible] । [illegible] संसारके इन [illegible] की [illegible] है [illegible] भी [illegible] नहीं [illegible] रहे ।

[illegible] और देखिये

[illegible] है । [illegible] लिखा है :—

[illegible] पहचान, [illegible]

[illegible]

विधवा-जिन्दगी

मैं उस युगकी कहानी नहीं लिखने वैठा हूं, जिस युगमें भारतके ऋषि मुनि गङ्गा किनारे लोगोंको उपदेश दिया करते थे। मैं उस युगका लेखक भी नहीं हूं, जिस युगमें भारतकी स्त्रियां तलवार चलाती थीं। मैं संवत् २००६ का आदमी हूं, जो आज भारतवर्षकी गलियोंमें चक्कर काट रहा है और जिसका प्रवेश पूंजीपति, मध्यम श्रेणी तथा मजदूरोंकी झोपड़ियोंमें है।

विधवा!—कितना पवित्र और त्यागमय शब्द है। जिस देशकी विधवाओंका आदर्श था, मृत पतिकी यादगारमें अपनेको अखण्ड तपस्या में लीनकर देना, अभिलाषाओं और जिन्दगीके सारे सुखोंका त्याग, प्रलोभनोंसे विरक्ति, आज उन्हीं तपस्विनी विधवाओंकी क्या दशा है? अपमान और अत्याचार। दुःख और विपत्तियां!

उन्हें मनुष्यकी तरह जीनेका भी अधिकार नहीं। आदमीकी तरह उन्हें शांति लाभकी भी आज्ञा नहीं। ऋषि युग पलट गया। मनुष्य मात्रने अपने रहन सहनमें तबदीली कर दी। किन्तु विधवाओंके सामाजिक जीवनमें किसी तरहका परिवर्तन न दिखाई दिया। आजके इस पतन-युगमें भी उन्हें ब्रह्मचर्य पालनके कठोर उपदेश दिये जाते हैं।

भ्रूण हत्याओंसे लोगोंको प्रोत्साहन दिया जाता है कि समाजके कलंक छिपा डालो। सभी तरहके पापोंपर पर्दा डाल दो और क्या कहूं? समाजके मूर्खोंकी तरफ देखो, बुद्धि हीन स्त्रियोंकी ओर नजर दौड़ाओ—

ये जंगली जीव विधवाओंको चंडालिनी और अभागिनी नामसे पुकारते हैं। आज उनके दीमक लगे इतिहासमें विधवाओंको हंसने, बोलने और पहनने ओढ़नेकी आज्ञा नहीं। आज भी उनकी सड़ीगली पुस्तकों में लिखा है—"यदि किसी विधवाको गलत रास्तेसे चलते देखो तो उसे दूधकी मक्खीकी तरह समाजसे बाहर निकाल फेंको, वह विधर्मियोंके पास जाती है, जाने दो। उसका जीवन वेश्याओंकी घृणित सोसायटी में बीतता है, बीतने दो। लेकिन तुम दूधके धोये बने रहो। व्यभिचार करो और छिपकर खूब करते रहो, मगर जब समाजके सामने आओ—जनतासे विधवा-विवाहका विरोध करो। मैं पूछता हूं और आदमी की शक्लमें फिरने वाले इन जानवरोंसे पूछता हूं, जो गंगाजीमें गोते लगाकर भीतर ही भीतर मछलियां गटकते हैं और धर्मकी आड़में अधर्मी कलंकों का प्रचार करते हैं। क्या जमाना नहीं बदल गया? क्या आप उसी ऋषि-युगमें चल फिर रहे हैं? आप बुढ़ापेमें नौजवान स्त्रीसे विवाह करते हैं। ऐश्वर्य भोग करते हैं। किन्तु आपकी विधवा पुत्रियां,—भारतवर्षमें आज जिनकी संख्या लाखोंकी है, क्या वैधव्यकी जलती भट्टियोंमें जीवनकी आहुति नहीं दे रही हैं? क्या इन कुसुम कलियों को, भारतकी इन आनन्द-ज्योतियोंको, आज हजारों लाखों नर्कके कीड़े उन्हें अत्याचार व्यभिचारके कांटोंमें नहीं घसीट रहे हैं? आजके अस्सी सैकड़े नवयुवक देश सेवाके लिये अपना सर्वस्व त्याग रहे हैं। मेरी उनसे प्रार्थना है—दौड़ो! तुम्हारे घरमें आग लगी है। भारतकी विधवाओं को जलनेसे बचाओ। नहीं तो तुम्हारा घर, जिसे तुम भारतवर्ष कहते हो, जलकर भस्म हो जायगा।

रास्तेमें आप हजारों, लाखों आदमियोंको चलते देखते हैं, जरा गौर से इनके चेहरे देखिये, इनमें सभीके दो आंखे हैं। किन्तु मैं कहता हूं, इनमें आपको ऐसे कम आदमी मिलेंगे, जो अपनी आंखोंका ठीक ठीक प्रयोग करते हों। उनके एक सिर भी होता है, मगर दिमागमें आपको

खोखलापन मिलेगा। मैं पूछता हूं, क्या वे अपने मस्तिष्कका ठीक-ठीक प्रयोग करना जानते हैं? आजके मनुष्यको क्या होना चाहिये? हमने विधवाओंकी आदर्श ज्योतियोंको कहां तक खो दिया है? और आज के वर्वर युगमें उनका प्रयोग किस तरीके से करना चाहिये?

सच पूछा जायतो आजका विधवा शब्द कमजोरी और परतंत्रताका सूचक है। जातीय-कलंकों के धव्वे निर्मल आकाशमें नक्षत्रोंकी तरह जल रहे हैं। जरा मनुष्य रूपी पशुओंको देखिये—एक तरफ वे गउओं को माता कहते हैं। दूसरी तरफ निर्दयता पूर्वक उनके स्तनोंका दूध निकालकर अपने मोटे शरीरको और भी मोटा वनाते हैं। याने वच्चोंका दूध खुद हजम कर जाते हैं। जरा देखिये, मनुष्य रूपी पशुओंका अन्याय।

पुरुष मरते समय तक विवाह करते रहते हैं और स्त्रियोंको वाल विधवा होने पर भी आजन्म ब्रह्मचारिणी रहनेके लिये मजवूर किया जाता है। नित्य सैकड़ों नव प्रसूत वालक सड़कोंपर, रेलके डिव्वोंमें, झाड़ियों नदियों और गली कूचोंमें, कूड़ेके ढेरमें निर्दयता पूर्वक फेंके जाते हैं। जिससे उनकी अभागिनी मातायें समाजके अभिशापसे निर्वा-सित न हो सकें। अनेकों गर्भपात, भयंकर सामाजिक परिस्थितियां, क्या विधवाओंके जीवन में सर्वनाशी वायुमंडलकी सृष्टि नहीं करतीं। एक ओर उनपर अन्न वस्त्रके लिये अत्याचार किया जाता है। दूसरी ओर इस असभ्य युगमें उन्हें सीता द्रोपदी और अनुसूयाके जीवन चरित्र पढ़नेको दिये जाते हैं। और उनसे कहा जाता है—तुम भी अपना जीवन इन देवियोंकी तरह पवित्र वनाओ। सदाचार और संयमसे रहो।

मैं पूंछता हूं, क्या इन उपदेशोंमें कोरी भावुकता नहीं? क्या वेद-शास्त्र और पुराणोंके उपदेश आज वाल-विधवाओंको सती सावित्री वनानेमें सफल हो रहे हैं? क्या आजके अस्सी सैकड़े पुरुष कामवासना की फुलवारियोंमें टहलते नहीं पाये जाते? क्या आजकी हजारों विध-

वाओं को बहकाकर उन्हें भ्रष्ट स्त्री-पुरुषों के हाथ नहीं बेचा जाता ? क्या नारी-हरणके समाचार आप अखबारों में नहीं पढ़ते ? सब तरहकी दुर्बलताओं का त्याग कीजिये और खुलकर समाजके सामने जोरदार आवाज उठाइये।

आप समाज और राष्ट्रमें सिर्फ पृथ्वीका बोझ बढ़ानेके लिये ही संसार में नहीं आये, यदि आप विधवा जीवनमें सुधारकी लहर बहा देंगे तो स्वाधीन-भारत आपका अत्यन्त कृतज्ञ होगा।

सन १९३१ की मनुष्य गणना याद है आपको ? उस समय भारत में स्त्रियों की संख्या १६,९५,४३,७३४ थी। जिनमें २,६२,४८,४८६ विधवायें ! -- याने प्रत्येक ६ स्त्रीमें एक विधवा थी। और अब सन १९४९ का जमाना चल रहा है। जहां विधवाओं की संख्या घटनेके बजाय बढ़ती ही जाती है।

यह है बर्बरता ! आज यदि हिन्दू-समाजमें कोई कलंक है तो वह है विधवाकी अनाथ-जिन्दगी। जिसके आगे पीछे कोई नहीं होता और उन्हें हड़पनेके लिये घात लगाये बैठा रहता है गुण्डा समाज, वेश्याओं का दल, विधर्मियों का विकृत मस्तिष्क।

विधवा संसारकी सबसे दुखी आत्मा है। इन बर्बाद जिन्दगियोंसे ऊबकर कुछ विधवाओंका पुनर्विवाह स्वामी दयानन्दके विद्रोही आन्दोलनसे किया गया। कुछके राजा विद्यासागर महोदयकी कृपासे खुल गये। कुछ आहोंको राममोहन रायने बंद कर दिया। लेकिन आज ९० सैकड़े विधवाओंकी क्या हालत है ? पाखंडी धर्माचार्य उन्हें आगे नहीं बढ़ने देते। और विद्रोही आत्मियोंका कलेजा यह देख देखकर जल रहा है, आज ये समाज सभी दलदलकी जिस उनको छिपाते हैं, इसमें फूलकी जगह पत्थर बरसते दिखाई देते हैं।

आजका संसार देखिये। कौन किन देशोंसे उन्नतिकी ओर दौड़ रहे हैं ? क्या अमेरिका, क्या रूस, प्रायः सभी राष्ट्रोंने पुरानी बेड़ियां

तोड़कर नया जीवन धारण किया है। सोती आत्माय जाग उठी हैं। चारों ओर नवीन जागरणकी लहरे हैं। क्या स्वाधीन भारतकी वे लहरें अत्याचारोंको वहाकर हमें निर्मल जल न प्रदान करेंगी ?

विधुर कौन है ? जिसकी पत्नी मर गई है। और विधवा उसे कहते हैं, जिसका पति मर गया है। तो क्या हिन्दू समाज मदारी का खेल है ? जो विधवा होना तड़पा तड़पा कर जलना और अभिशाप वना दिया जाताहै, तथा विधुर को क्वांरी कन्या के साथ विवाह करने की आज्ञा दे दी जाती है। वाह रे न्याय !—जमीन फट कर समुद्र में क्यों नहीं समा जाती ? हिन्दू समाज का नया कानून तो यह वनना चाहिये—विधुर पुरुष की शादी विधवा स्त्री से ही हो। यदि कोई विधुर या विधवा ऐसा नहीं करती तो उसे कानूनन कठोर दण्ड दिया जाना चाहिये।

स्त्री इधर विधवा हुई, उधर संसारिक सुखों की सूची से उसका नाम गायव। वह किसी से दिल खोल कर वातें नहीं कर सकती। वह न अव सुन्दरी है, न उसे अच्छे गहने कपड़े पहनने का अधिकार है। पति के जीवन काल में उसे रानी कहा जाता था। पति मर गया, वह भिखारिणीसे भी वदतर वना दी गई।

यह कैसा अन्याय है ? क्या विधवा जीवन पत्थरका वना होता है ? इस अन्यायके प्रति हे विधवा नारी ! तुम विद्रोह करो। ऐसे अन्यायी शास्त्रोंको जला दो। विधवा भी उसी हाड़ मांसकी सृष्टि है जिस हाड़ मांससे ईश्वरने पुरुषकी रचनाकी है।

प्राचीन भारतमें नारीने विधवाके रूपमें जो वलिदान दिये हैं, तपस्या की है, क्या उसकी कीमत आज अन्याय और अधर्मसे चुकायी जायगी ?

प्राचीन युगमें पतिके न रहने पर चितामें जल मरनेकी प्रथा थी। मध्ययुगमें जव विधवायें इस कानूनसे हाहाकार करने लगीं और पुरुष जवरदस्ती उनपर अत्याचार करने लगे, तव समाज भयसे कांप उठा

और उसने चितामें जल मरनेका कानून उठा दिया। समाजने चूं तक न की और वह चूं करे भी क्यों? उसमें पापोंको हजम करनेकी अच्छी ताकत थी। जब चितामें जल मरनेकी प्रथा उठ गयी, तब आदमी द्वारा गढ़ा हुआ समाज और भी खुलकर खेलने लगा। उसने विधवाओंको सरे आम मैदानमें आकर विवाह करने की आज्ञा नहीं दी। हां, इस आज्ञाका प्रचार जरूर कर दिया गया कि समाजके सामने तुम विधवा बनी रहो, तपस्याके नामपर पाखण्डकी माला फेरो और पराये कामुक पुरुषोंके साथ, जो तुम्हें आंखोंकी ऐयाशीमें आकर्षित कर लेते हैं, गुप्त व्यभिचार करती रहो। जीवन मरणके श्मशानमें दग्ध होती रहो। किन्तु जब मौका लगे, उस तपस्यासे ऊंचे उठनेकी तुम्हारी हिम्मत न हो, पुरुष तुम्हें लोभ-लालचमें फंसानेको उत्सुक हों—तुम उनके शैतानी पंजों में जकड़ जाओ। भ्रूण हत्यायें करो और जब कामी पुरुषका मतलब निकल जाये, वह तुम्हें छोड़कर भाग जाय, तुम वेश्या बनजाओ या विधर्मियोंके साथ जीवन व्यतीत करो।

नारी गौरवको, विधवा जीवनको यही शुभ उपदेश देता है कलंकित समाज। क्या इस तरह के अधर्मी समाजको बदल डालनेकी तुम में हिम्मत नहीं? यदि है तो किसी से भय न करो। भय इंसानका सबसे बड़ा दुश्मन है। मैदानमें आओ। तेजीसे आगे बढ़ो।

लोग कहते हैं, विधवा जीवन तपस्याकी जिन्दगी है। उससे भगवानका आसन डोल जाता है और वह उसे वरदान देने आ पहुंचते हैं। मैं भी उन्हीं के स्वरमें स्वर मिलाकर कहता हूं—हां, बात ऊंचे दर्जेकी है। किन्तु मैं उन्हीं लोगोंसे यह भी पूछता हूं—आज ऐसी कितनी विधवायें हैं जो तपस्या और त्यागका जीवन व्यतीत करती हैं? मैं ऐसी हजारों विधवाओंको जानता हूं—जो पुरुषके स्वार्थी शिकंजोंमें दब कर कराह रही हैं। वे तपस्वी जीवन व्यतीत करती हैं और पुरुष उन्हें अपने शिकंजेमें जकड़नेके लिये, उन्हें पंजा पर मारनेके लिये आकर्षक

फैशनोंमें अपना शृङ्गार करता है। वाह्रे समाज! तुम्हारा मायावी रूप कविताके छन्दोंमें गाने लायक है।

तुम नारी हो। हिंदू संसारकी गौरव मूर्ति। तुम्हारी साधनाने दिग्गज पुरुषोंको जन्म दिया है। यदि समाजमें भ्रष्टता फैल गयी है, लोग तुमपर अन्याय और अधर्मकी कटारें चलाते हैं तो तुम विद्रोह करो। अपने जीवन और राष्ट्रकी तरफ देखो। तुममें समाजको रास्ता दिखाने की पूर्ण शक्ति है। समाजको वदल डालनेकी ताकत है। तुम्हें जीवनकी लम्बी यात्रामें अभी वहुत दूर तक दौड़ना है। पति तो पत्नीके वियोगमें दो बूंद आंसू तक नहीं वहाता, झट दूसरी शादीकर नयी पत्नीके साथ किलोलें करता है। तुम क्यों जबरदस्ती वैधव्य जीवन व्यतीत कर मन ही मन जल रही हो? आगे बढ़ो, पुनर्विवाह करो और नये पतिके साथ कन्धेसे कन्धा मिलाकर देशमें जागरणकी ज्योति फैलाओ। तुम्हारा समाज, तुम्हारा धर्म, तुम्हारा देश, वारंवार तुम्हारी पूजा करेगा। तुम गलतियोंको लम्बे अर्से तक देख-देखकर पश्चाताप मत करो। गलतियों से जब ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तब सुनहरे जीवनकी स्थापना होती है। मैं मानता हूं—बीती घटनायें बदल डालनेका कोई उपाय नहीं, लेकिन भविष्य-जिन्दगीको बनाना विगाड़ना तुम्हारे हाथकी बात है। तुम्हीं हो भविष्यकी जीवन ज्योति! राष्ट्रकी महान शक्ति!

"जीती रहो और दुःख भोगती रहो।"—विधवा-जीवनको इसी सिद्धान्त पालनका उपदेश दिया जाता है। पति मर जाता है तो अस्सी फीसदी सास ननदें उसपर अत्याचार करती देखी जाती हैं। कष्टमयी यंत्रणायें देना तो उनके बांये हाथका खेल हो उठता है। वह अपने मृत पतिकी जायदाद में किसी तरहका अधिकार या हिस्सा भी नहीं पा सकती। क्या पुरुषोंकी ये स्वार्थमयी नीतियां स्वाधीन भारत में अब भी चलेंगी? क्या यह न्याय है? प्रति दिन रोना, धिक्कार, तिरस्कार और अपमान,—क्या यही इनके भाग्यकी कलंकित

लकीर है?

आज छोटे-बड़े शहरोंमें अनेकों युवतियाँ रूप लावण्यका बाजार खोलकर बैठी हैं। कामी कुत्तोंके हाथ अपने शरीरको बेंच रही हैं। जरा गहराईसे पता लगाकर देखिये—इनमें अस्सी प्रतिशत वेश्यायें हमारे ही समाजकी ठुकराई हुई कुल बालायें हैं। जो अपने सौंदर्य और सतीत्व को सरे बाजार बेंच रही हैं। बहुत दिनोंसे उड़ रही हैं ये चिनगारियाँ, बरसोंसे धधक रही है ये आग। अब विधवाओंने अपनेको पहचान लिया है। यह ज्वालामुखी भड़केगी, फूटेगी और समस्त पृथ्वीमें हड़कंप मचाकर ही दम लेगी।

सूर्य और चन्द्रमाकी उज्ज्वलता होते हुये भी विधवाओंके मनमें चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा है। यदि आपके पास दिमाग है, तो विधवाओंके कष्टोंपर गंभीरता पूर्वक विचार कीजिये। क्या ये दुःखिनी महिलायें हमारे समाजकी सदस्या नहीं हैं? क्या इन्हें झांसीकी रानी और दुर्गाबाई नहीं बनाया जा सकता? सच तो यह है, ज्यों-ज्यों अशिक्षितों के दिमागमें शिक्षाकी रोशनी फैलती जायगी—लोग माँ-बहनोंकी कद्र करना सीखेंगे। साथ ही यह भी सीखेंगे—स्त्रीके दुःखमें कैसी सहानुभूति चाहिये और मानवताकी जिम्मेदारी क्या है?

यदि राजीसे कोई विधवा पुनर्विवाहकर लेती है, उसे आश्रय और योग्य सहायता मिल जाती है, तो एक दिन वह अवश्य विदुषी और धर्म योगिनी बन जायगी। आप घरका सारा प्रबंध उसके हाथोंमें दीजिये। अन्य बहू-बेटियोंकी तरह उसका भी आदर कीजिये। घर के बालक-बालिकाओंको देखकर उसके वात्सल्य-रसमें स्नान करने दीजिये आपका महत्व बढ़ेगा, देशका कल्याण होगा—समाजकी स्थिरता चमक उठेगी।

यदि हिन्दू जातिको सत्यानाशसे बचाना है तो विधवाओंको सादरपूर्वक उन्हें उन्नति मार्गमें आगे बढ़ने दीजिये। जिन्दगीकी उड़ानों मजबूत

वनानेवाले धार्मिक, साहित्यिक, सामाजिक तथा राजनैतिक आन्दोलनों में भागलेने दीजिये—इससे उनके जीवनको महान शांति मिलेगी और वे स्वाधीन भारतका आकर्षक शृंगारकर सकेंगी।

प्राचीन भारतके आदमी थे तपस्वी, संयमी और मानव हितैषी। किन्तु जवसे भारतवर्षमें मुसलमान आये, अंग्रेजोंने कदम रखे, भारत का गौरव छिन्न-भिन्न हो गया। समाजिक व्यवस्थायें नष्ट हो गयीं। भ्रष्टताका प्रचार किया गया। आदमियोंपर फैशनकी चमक-दमक ला दी गयी। और उनमें इस तरहका भय भर दिया गया कि वे आलस्य के मरीज वन गये। विधवायें मनुष्य-जीवन व्यतीत करनेसे लाचारकर दी गयीं। भारतीय संस्कृति भूल गयी और पाश्चात्य सभ्यताकी नकल करनेमें लोग अपना गौरव समझने लगे। यही कारण है जो विपत्तिकी आंधियोंसे हमारा भारतवर्ष भर गया और दुःखके तूफान हमारी जिन्दगियोंको झकझोरने लगे।

हिन्दू समाजमें विधवाओंकी समस्या चाहे कितनी ही वड़ी क्यों न हो? परमात्माकी सृष्टिमें सभी दुःखोंका निवारण है, संत तुलसीदासने ठीक ही लिखा है :—

"सकल पदारथ हैं जगमांही,
कर्म हीन नर पावत नाहीं।"

आज जव दुनिया कुत्सित जमीनपर नव जागरणके फूल खिला रही है, भ्रष्ट-दुनियाके आदमी सड़े-गले विचारोंके कांटे पैदाकर रहे हैं। क्या इस निंदनीय मनोवृत्तिका असर भविष्य-संतानोंपर नहीं पड़ेगा? और क्या वह विष हिन्दू समाजको जहरीला न वना देगा? क्या विधवाओं की अतृप्त आहोंसे आजका समाज सड़ नहीं रहा है? क्या उसकी दुर्गन्ध समूचे संसारमें नहीं फैल रही है? तो इसका उपाय?—

पत्नी नाशे यथा पुंसो भर्तृ नाशे तथा स्त्रियः।
पुनर्विवाह कर्तव्यः कलावपि युगे तथा। (व्याघ्र पद्र)

याने कलियुगमें स्त्रीके मरनेपर जैसे पुरुषका पुनर्विवाह होता है, उसी तरह पतिके मरनेपर स्त्रियोंका भी पुनर्विवाह कर देना चाहिये।

बहुत-से लोग कुकर्म करते नहीं सकुचाते। वे टट्टीकी ओटमें शिकार करना चाहते हैं और मनुस्मृतिके उदाहरण देकर बचना चाहते हैं। मैं पूछता हूं, मनुस्मृति के नियम कब बनाये गये? वह कौन-सा समय था? स्वयं मनुजी और अन्य ऋषियोंका कहना है—"स्वर्ग में रहनेवाले देवता मनुष्योंके लिये ही मनुस्मृतिकी रचना हुई है।"—जब इस शास्त्रकी रचना हुई थी— पृथ्वीमें मनुष्य थे ही नहीं। स्वर्गसे ऋषियोंके झुण्ड क्रमशः जमीनपर उतरे और उन्होंने ही मनु संहिताके अध्यायोंका प्रचार करना शुरू किया।

परन्तु समयके प्रवाहसे जिस ईश्वरने बंधनकी ताकत दी है, मुक्ति प्रदानकी भी उसमें उदारता है। जिसका हृदय वज्र-सा कठोर है, उसमें फूल सा कोमल मन भी दिया है। हमारे जो विप्लवी युवक रात दिन क्रांतिका सपना देख रहे हैं क्या वे अभागिनी विधवाओंको अपनी जीवन संगिनी बनाकर राष्ट्रका उपकार नहींकर सकते? क्या शिक्षित बहनें नारियोंके उपकारके लिये कुछ समय नहीं खर्चकर सकतीं?

नित्य नये विप्लव हो रहे हैं। क्या आजका स्कूल जो कमजोर, जाहिल और कायर है, अपने आत्म-विप्लवसे समाजका श्रृंगार नहींकर सकता? ढूंढो निर्मल प्रकाश। कुकर्मोंमें पहले आकर्षण है, फिर तूफान, फिर महानाश। प्रकाश जिन्दगी देता है, आत्माको निर्मल बनाता है। अंधकारमें मृत्युका दानवी रूप है।

यह न समझो मुझे अपने वैभव और पदका गर्व है। या चीजें पाकर मैं दूसरोंको तुच्छ समझता हूं। यह झूठे अहंकार हैं, जिन्हें पाकर किसी भी आदमीको मिटते देर नहीं लगती। आदमीको चाहिये, यदि वह देवताके दर्शनकी इच्छा रखता है, तो मन्दिरकी धूल बन जाय।

जितना ही आदमी अपने आपको मिटाता है, उतना ही उसके जीवन का विकाश और निर्माण होता है। और जितना ही वह ऊँचे होने का घमण्ड करता है, उतना ही ज्यादा गढ्ढेमें गिरता जाता है। जब उसे आत्म-ज्ञान हो जाता है। पत्थर हृदयको फूल बनते देर नहीं लगती।

मनके तहखानेमें ज्ञानका दीपक जलाओ। उसके प्रकाशमें तुम्हें सब कुछ मिलेगा। जीवन भी, शक्ति भी !



राष्ट्र की जमीन पर—

आज मनुष्यको भूमिकम्प और तूफानसे उतना भय नहीं, जितना आदमीसे डर है।-- मनुष्य रास्तेमें चलता है, लेकिन चौकन्ना होकर, उसे खुद तो अपने ऊपर विश्वाश रहा नहीं, वह दूसरोंको भी शककी निगाहों से देखता है। यह क्यों? आदमी चरित्रहीन है। उसके पास वीर्य का अभाव है और उसकी पशुता जागउठी है। इसीलिये उसके पास आर्थिक कठिनाइयां हैं। सामने अन्न वस्त्रका हाहाकार है। आदमी चूसा गया है। पीसा गया है। साहित्यिक जीवन लंगड़े बन गये, सामाजिक जिन्दगियोंमें जहर फैल गया। हम एक दूसरेसे नफरत करने लगे।

कैसा ध्वंसमय पतन है?

याद है आपको १५ अगस्त सन् १९४७ की आधीरात? इसी दिन परतंत्रताकी बेड़ियां कटी, गुलामीकी जंजीरें टूटीं। और हम स्वतंत्र होकर राष्ट्रकी जमीनपर चलने लगे। संसारके इतिहासमें इस तरहकी स्वतंत्रता प्राप्तकर लेना हंसी खेल नहीं। बिना हथियारकी क्रांति! चमचमका चाक और सुखिया मनोहर आनन्द!

राष्ट्रकी जमीन सुन्दर बन गयी, लेकिन मनुष्य असुन्दर हो गया। क्यों? वीर्यका अभाव, बल विद्याकी लुप्त शक्ति!—जहां मनुष्यको सागरकी तरह विशाल और गंभीर बनना चाहिये?—वहां हमारे मस्तिष्क सिकुड़ते सिकुड़ते इतना सिकुड़ गये कि हम कुएंके मेंढ़ककी तरह टर्रा रहे हैं। हमने लाखों जातियों और करोड़ों सिद्धान्तोंकी

भेद भरी रचनाएं कर डाली हैं। यह बहुत बड़ी मुसीबतें हैं। और इन मुसीबतोंसे छुटकारा पानेके लिये हमें वीर्य धारण करना होगा। राष्ट्र की जमीनपर देवताओंकी रचना करनी होगी। वे देवता अमृत पियेंगे और कमसे कम एक हजार वर्ष तक जीवित रह सकेंगे।

और देखिये—

लोग रामराज्यकी भी कल्पना करने लगे हैं, सौभाग्य!—लेकिन पहले वीर्य धारण करना होगा। रामराज्य अपने आप आ जायगा। समाजकी रूढ़ियां, कुरीतियां और भ्रष्टतायें वदलनी होंगी। मनुष्य अपने आप बलवान वन बैठेगा। जिन्दगीमें आशाकी ज्योति और विश्वासका प्रकाश फैलाना होगा—आनन्दोंके ढेर अपने आप लग जायँगे। और हम इस सिद्धान्तको वदल देंगे—कि जो चमार फुट पाथ पर बैठकर जूते सिलाई करता है, वह हमेशा चमार ही बना रहेगा। उसे राष्ट्रपति बननेका कोई हक न होगा।

वीर्य रक्षा और शिक्षित ज्ञान-धर्म हमें उज्ज्वल बनायेंगे। हमारे राष्ट्रकी नींव मजबूत होगी। फिर उस दिन हमें वह दिन देखनेको नसीब न होंगे, जब कन्याकी उत्पत्ति देखकर श्मशानकी सी उदासी छा जायगी। लोग लड़कियोंका महत्त्व समझेंगे और कोई भी स्त्री सिर्फ भोग विलासकी सामग्री न समझी जायगी।

कितनी भयंकर बात है कि पचास वर्षका वृद्ध एक चौदह वर्षकी कुमारी कन्याके साथ विवाह करे? बदल दो इस तरहके निरंकुश समाज, ध्वंसकर डालो इस तरहकी अत्याचारी मनोवृत्तियां! वर्ना दुराचारी आदर्शोंके फेरमें फँसकर किसी भी स्त्रीका जीवन नीरस और भार स्वरूप बन जायगा। और एक दिन उसके जीवनका नकली आदर्श-महल बालूकी दीवालकी तरह ढह पड़ेगा।

जहां नारी गृह लक्ष्मी थी। देवी और माताके नामसे पुकारी जाती थी, वहां उसका अपमान होने लगा। कुछ सभा सोसाइटियां

हुई। कागजी प्रस्ताव पास किये गये। बस, सब समाप्त। समाजमें कोई परिवर्त्तन न हो सका। लड़कियोंसे झूठे वायदे किये गये कि तुम्हारी तरक्की कर दी जायगी। बड़े-बड़े सब्जबाग भी दिखलाये गये—लेकिन सब ढोलमें पोल निकली। भीतर ही भीतर रंग रेलियोंका बाजार गर्म होता गया और धीरे-धीरे इन बनावटी प्रलोभनोंका सुबूत जनताको मिलता गया। इस तरह मुट्ठीभर आदमी समाज सुधारका मुलम्मा चढ़ाकर जाति, वर्ण और समाजका रक्त जोंककी तरह चूसने लगे।

इन माया जालोंको, इन बनावटी चेहरोंको अब महिलायें समझने लगी हैं। बनावटी विद्यालय और महाविद्यालयसे भी बढ़कर अब उन्हें चाहिये, जिन्दगीको ऊपर उठानेवाली विद्या—जिसमें उनकी बुद्धिका विकास हो। और दाम्पत्य-जीवनके गुण दोष देखनेमें वे कसौटी का काम दे सकें।

एक बार द्रौपदीने श्रीकृष्णसे कहा था—"मैं शूरवीर पाण्डवोंकी निन्दा करती हूं, जो अपनी पत्नीको इस तरह दुखी देखते हैं।"

श्रीकृष्णका जवाब था—"मैं तुम्हें राजरानी बनानेकी प्रतिज्ञा करता हूं। चाहे हिमालय गिर पड़े और पृथ्वी चूर चूर हो जाय।"

क्या स्त्रियोंके सन्मानका यह उम्दा उदाहरण नहीं? विष्णु पुराण देखिये—लिखा है:—"पति सूर्य है, पत्नी प्रकाश। पति समुद्र है, पत्नी किनारा। पति युद्ध है, पत्नी शक्ति।"

रामायण और महाभारत-युगकी स्त्रियां पूर्ण स्वाधीन थीं। सभ्य, पवित्र, और बलवान। लेकिन उनकी नम्रता, सहन शीलता, और त्याग पूर्ण जीवनका लोग दुरुपयोग करने लगे। स्त्रियां गुलामीकी जंजीरों में जकड़ दी गयीं और स्वतंत्रताकी शुद्ध वायुसे उन्हें वंचितकर दिया गया। यह अंधकार देखते देखते दूर हट गई, जाग उठी और अत्याचारोंके विरुद्ध तन कर खड़ी हो गई। अब उन्हें गृहलक्ष्मी और

सुयोग्य माता बनाना पड़ेगा। भारत का अंधकार दूर कर देने के लिये उसे अपने को समर्पित कर देना होगा। योरोपीय सभ्यता से नहीं, भारतीय —संस्कृति के साथ। क्योंकि भारतीय आकाश में जो प्रकाश है, वह अमिट है। योरोपीय सभ्यता में जो तेज है, उसमें मुलम्मा चढ़ा दिया गया है।

पौधे को जिस तरफ झुकाओगे, झुकेगा और फूले फलेगा। नारी के कोमल जीवन के लिये भी यही वात है। यदि वे आदर्श शिक्षा से शिक्षित हो जायंगी तो पुरुष जीवन भी विकसित होगा, स्त्री जीवन भी याने दाम्पत्य जीवन एक साथ मिल कर राष्ट्रका शृङ्गार करना सीखेंगे। लोग अशिक्षित जनता के हृदय में प्रवेश कर जायंगे और हमारे जीवन यौवन में नया रंग आजायगा।

आज स्त्रियों में चार समस्यायें वड़ी जटिल हैं—विधवा, छुआ छूत, अंध विश्वास और दुराचार। विधवा के लिये पिछले परिच्छेद में मैं वहुत कुछ लिख चुका हूं। अंधविश्वाश का मतलव है-हमारे सत्य-धर्म का विकृत रूप। जो मनुष्य के लिये अफीम के नशे की तरह है, और जिसमें वेहोश रह कर आज मनुष्य की हत्या स्वयं मनुष्य कर रहा है। छुआ छूत का हिसाव तो पूछिये नहीं। यह चीज सिर्फ चूल्हे चौंके की ही घृणा नहीं रह गई—वल्कि अशिक्षित स्त्रियों में तो इसका दानवी रूप देख कर कांप उठना पड़ता है। और दुराचार अत्याचार तथा व्यभिचार की कहानियां में कहां तक लिखूं, एक भारतीय लेखक के नाते मुझे इसका नाम पतन युग लिखना पड़ता है।

ढोंग की विदेशी- लालटेनों का प्रकाश पाकर हम पतिंगे कीतरह उड़ चले और हमें सूर्य की रोशनी अच्छी न लगने लगी। मैं कहता हूं— उठा दो नकली दूकानों से ढोंग की नशाखोरी और ले आओ जीवन में दर्पण जैसा स्वच्छ प्रकाश। दुनिया मनुष्य की है और दुनिया की रक्षा का भार मनुष्य के कंधों पर है। उसे उठना होगा,

आगे बढ़ना होगा। मैं मानता हूं भारतवर्षमें न अब वह राम हैं, न अयोध्या। लेकिन अनेकों जानवरों के बीच मनुष्य भी चल रहे हैं। भेड़ बकरियों में हमें सीता सावित्री के भी दर्शन मिलते हैं। विकास का नया युग आने ही वाला है। जिसमें मनुष्य मनुष्य कहलावेगा। धर्मकी जय होगी और अधर्मका नाश। अब हम अपने बीच उन मनुष्योंको पायेंगे जो विद्यामें वृहस्पति जैसे विद्वान, कृष्ण जैसे कर्मयोगी— कुबेर जैसे धनी और अर्जुन जैसे वीर होंगे। साहित्यसे दूर रहनेवाले कायर और कमजोर तथा दरदर भीख मांगनेवाले बेवकूफोंकी अब हमें जरूरत नहीं।

मानसिक और शारीरिक गुप्त बीमारियोंको लीजिये। अपनी बेहूदी आदतोंसे मनुष्य इन दानवी शक्तियोंका गुलाम बन गया है। आँखकी शर्मको लेकर विरले ही इन बीमारियोंकी चर्चा दूसरोंसे करते हैं। उनका यह बीमार जीवन अंतमें श्मशानकी लपटें बन जाता है और उनकी जिन्दगीमें विश्वप्रसिद्ध कोई रौनक नहीं फैलती। मान लीजिये कोई व्यापारी किसी गुप्त रोगका शिकार बनकर चुपचाप बिछौनेमें पड़ा रहता है, तो क्या इससे जीवनमें कोई उन्नति हो सकती है? इस तरहके आदमी सिर्फ रोगी सन्तानोंकी संख्या बढ़ाते हैं और समाज तथा राष्ट्रको उनसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ता है।

अस्वाभाविकता और चित्तकी अस्थिरता भी जीवनको विकट उलझाते हैं। प्रान्तीयता और जलन तो आत्महत्याके समान है। मैं बिहारी हूं तुम बंगाली, मैं मारवाड़ी हूं, तुम गुजराती। मैं मद्रासी हूं, तुम बंगाली। यह सब क्या है? मनुष्य की मूर्खता, स्वार्थमयी निकृष्ट बुद्धिका फूहड़ा प्रदर्शन। आदमी तो वही है जो सम्पूर्ण विश्वका सेवक है। एक दूसरी जातिको देखकर घृणा नहीं करता और उसका जीवन प्राचीन चीनी महिलाओंकी तरह छोटे छोटे पैरोंवाला नहीं, बल्कि आकाशकी तरह विराट और मंगलमय है।

आज लाखों करोड़ों भारतवासियोंका नारा होना चाहिये:—

१. अत्याचार पीड़ित महिलाओंका उद्धार और संसारमें उनका वास्तविक नारी रूप।

२. वृद्ध विवाह बंद।

३—बाल विवाह अनर्थोंकी जड़

४—स्त्री शिक्षाकी आवश्यकता

५—स्त्री-जागरणके प्रति पुरुषका आकर्षण

६—नारी हरण करनेवाले गुंडोंको फांसीकी सजा

७—अंध विश्वासका त्याग; इत्यादि

तभी होगा मनुष्यका मंगल।

प्रत्येक बालिका फूल है। उसे फुलवारी बनकर खिलने दो, धूपमें टहलने दो। धूलमें न गिर पड़े। उसे ताजी हवाकी जरूरत है। उसे फूलने फलने दो। जिसमें जिन्दगीके दरख्तमें रसीले और मीठे फल लगा सकें। नारी सिर्फ खाने, पहनने और मरकर जला देनेके लिये ही संसारमें नहीं आई। उसका प्रधान कर्त्तव्य है शांति और सुख। अन्याय नहीं, न्याय। हम उसे फैशनकी तितली जैसी उड़ती नहीं देखना चाहते। हम उसे उस रूपमें देखनेको उत्सुक हैं—जो सरस्वती और लक्ष्मीके रूपमें दर्शन देकर हमारे जीवनको सार्थक बना दे।

रातके बाद दिन होगा और दुनियामें जरूर चमत्कार फैलेगा। समय और समुद्रकी लहरें नित्य आगे बढ़ती हैं। जीवनका एक क्षण भी बेकार खोना खतरेसे खाली नहीं होता।

मैं पन्द्रह मिनटमें लिफाफेकी चिट्ठी लिखता हूं और पांच मिनटमें पोस्ट कार्ड। आपको क्या पसन्द है? लिफाफेकी चिट्ठी है या पोस्टकार्ड?

स्वतंत्रताका आनंद

मैं संसारमें जब स्वतंत्रता और सफलताकी सड़कोंपर चक्कर काटता हूं, मुझे प्रत्येक हरे भरे मैदानमें फूल खिले दिखाई देते हैं, किन्तु गुलामी और असफलताकी कल्पना करते ही मैं मुर्दा बन जाता हूं और मुझे चारों तरफ नर्कके दृश्य दिखाई देते हैं।

हर तरहके बंधनसे मुक्ति,—इसका नाम है स्वतंत्रता। याने असमर्थ दुर्दशाओंसे निकलकर समर्थ सड़कोंपर आगे कदम बढ़ाना, शक्ति सञ्चय और आत्म-चेतनाका विकाश। राष्ट्र उन्नतिके लिये संगठन और सहयोग।

पृथ्वी भरके मनुष्य आज स्वाधीन होना चाहते हैं। न वह दूसरोंके द्वारा शासित होना चाहते हैं, न उनकी इच्छा है वह स्वयं दूसरोंपर शासन करें। वह बलवान बनकर स्वयं अपनी रक्षा की फिक्रमें हैं। लेकिन यह हो तो कैसे ?

षड्यंत्र दूसरी ही तरहके चल रहे हैं। बीस सैकड़े आदमी अपनेको मज़बूत बनानेमें लगे हैं। भीतर ही भीतर दांव पेंच चल रहे हैं कि वह अस्सी सैकड़े आदमियोंको कमजोर बना दें। और उनकी जड़ें इस तरह काट दें कि उनमें सर उठानेकी ताकत न रह जाय। किन्तु मैं पूछता हूं—क्या इस तरहके षड्यंत्र बहुत दिनों तक टिक सकेंगे ?

मनुष्य जाग उठा है। उसने स्वाधीनताके हाथ मुक्त कर दिये हैं। अब वह ऐसा चमत्कार दिखायेगा कि सम्पूर्ण विश्व उसकी बुद्धिके आगे

नत मस्तक होगा। उसका आदर्श महान आदर्श होगा। और वह भारतीय सभ्यताकी आखिरी मंजिल तक पहुँचकर ही दम लेगा।

पुरुषकी अर्द्धांगिनी है नारी। किन्तु पराधीनता के कारण नारियाँ अपना विकाश नकर सकीं। चीनी महिलाओंके पैर जैसे छोटे-छोटे बना दिये जाते थे, गुलामीके कारण वैसे ही स्त्रियोंको भी कुयेंकी मेंढ़की बना दिया गया। नारीको राष्ट्रकर्मोंसे अलगकर दिया गया। लेकिन अब स्वाधीन देशकी नारी,—चाहे कन्या हो, वधू, माता या बहन राष्ट्रीय कार्योंमें उसे अपनी शक्ति फैलाना ही होगा। उसकी समस्त शंकायें स्वातंत्र्य-प्रकाशकी उज्ज्वल किरणोंमें ध्वंस हो जायँगी।

आजकी नारीको प्रकाश चाहिये। रोशनी चाहिये, शक्ति चाहिये। उसकी साधना उसे सफल बनायेगी। अब वह पराजयसे घबराकर पीछे पैर न हटायेगी। वह आगे बढ़ेगी और ध्येय धामतक पहुँचकर ही दम लेगी। सूर्यकी स्वाधीनकिरणें उसकी आखोंमें भर देंगी—जागरणका नवीन गोरखधंदा।

आज स्त्री समाजके अधिकांश क्षेत्रोंमें महान अंधकार फैला है। देहातकी अधिकांश स्त्रियाँ यह भी नहीं जानतीं, स्वाधीन-भारतका वास्तविक रूप क्या है? यह काम जागृत स्त्री-पुरुषोंका है कि वे अज्ञान के अंधकारको दूर करें और अपने चारों ओर ज्ञान-विज्ञानकी रोशनी फैलने दें। अब गिरे हुये दकियानूसी खयालोंको, जिनके द्वारा समाज और व्यक्तिका बहुत बड़ा नुकसान होता है, दूरकर देनेमें ही हमारी मुक्ति है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, कि जिस एटमबमके आविष्कार ने शक्तिशाली जापानको विट्रेनके सामने आत्मसमर्पणकर देनेके लिये बाध्यकर दिया था, उसका आविष्कार करनेवाली हैं—एक यहूदी महिला डा० मेहनढार। आप बर्लिन कैंसर विलियम इन्सीट्यूटकी सभानेत्री थीं।

नारी स्वतंत्र पैदा हुई है और उसे स्वतंत्र रहनेका पूर्ण अधिकार है। स्वतंत्र न होनेसे न तो कोई उन्नतिकर सकता है, न सुखका भागी बनने का उसे अधिकार है। स्वतंत्रता ऊँचे उठनेका प्रधान लक्ष्य है। इस उत्थानसे मनुष्यकी समस्त चेष्टायें, उद्योग, व्यापार तथा प्रयत्न सफल होते हैं। हर आदमीको यह बात याद रखना चाहिये—"प्रकृतिके सम्पूर्ण साधन हमारे कब्जेमें हैं। बशर्ते कि मनुष्य अपनेको पहचाने और धीरज तथा साहससे काम ले।"

यदि आप किसीका भला करनेके लिये तैयार हैं तो आपकी भलाई में भी लोग अपना त्याग पसंद करेंगे। अधिक शताब्दियोंसे पिसी कटी छंटी और दलित जीवात्माओंमें यदि कोई नव-जीवन संचार करनेवाली संजीवनी है तो वह है स्वतंत्रता। जिसमें वह ताकत है कि उसके स्मरणसे ही गिरीसे गिरी आत्मा उन्नत होती है और उसका अनुभव कर्ता अपनेको एक नवीन और अद्भुत संसारका प्राणी समझने लगता है।

तुम प्रकाशकी पुत्रियां हो, भारत माताकी पृथ्वी तुम्हें देख रही है कि तुम किस तरह आगे बढ़ रही हो? यदि किसी स्त्रीकी हाहाकार-मयी पुकारें आकाश-पाताल विदीर्ण नहीं कर देतीं, तो मैं कहूंगा, नारी शक्तिकी ओरसे किसी दिन विद्रोह होगा और वह अपनेमें बिजली जैसी ताकतें उत्पन्न करेगी। आज जैसे स्वाधीन पुरुष अपने अधःपतनको मटिया मेटकर देना चाहता है, कल वैसे ही स्त्रीको भी अपनी तपस्यामें लग जाना पड़ेगा।

अब हमें भारतवर्षमें नरसिंहोंकी आवश्यकता है। जिनके तेजस्वी प्रकाशसे भारतीय-जीवनका आकर्षक शृङ्गार होगा। चलो, आगे बढ़ो। भारतके सात लाख अर्द्ध मृतक गांवोंको जीवित करो। गरीब पैसेवालों की जेलमें कैद हैं, उन्हें मुक्त करो। क्रान्तिमें नवाङ्कुर आ गया है। कामोत्तेजक रूपकी उपासना नहीं, आगे बढ़नेवाले कदमोंकी पूजा करो।

जिसमें नवयुवकोंके ताजे खूनमें क्षय रोगके कीड़े न उत्पन्न हो सकें। हमारे लिये आज चाहिये नया आकाश, नयी जमीन।

प्रत्येक मनुष्यकी जय उसकी क्षुद्रतामें नहीं, बड़प्पनमें है। क्या मैं पूछ सकता हूं आप स्वतंत्र और स्वस्थ्य हैं ? ऊंचे विचार उस मैशीनके कल-पुर्जेके समान हैं, जो जीवन-मंजिलको सहजमें ही तयकर डालते हैं। कोई भी वस्तु हो, उसकी गहराईमें पैठकर उसकी असलियतको ढूँढ़ निकालनेका ही नाम है—विज्ञान। जिसने किसी वस्तुकी असलियतका आविष्कार नहीं किया, समझना, उसने कुछ भी नहीं किया।

यह सत्य है कि मनुष्य जिस बातको गहराईसे सोचेगा, भविष्यमें वही हो जायगा। यदि कोई सोचता है, मैं बीमार होऊँगा और मर जाऊँगा तो उसे बीमार होते देर न लगेगी और वह मर भी जायगा। जिसके मनमें एकता नहीं, जिसका मन चारों तरफके काममें घूमता रहता है, वह एक दिन अवश्य हार जायगा।

आज पृथ्वीका नक्शा बदल गया है। मनुष्यको भी सिरसे पैर तक बदल जाना पड़ेगा और समयके भी आगे चलना होगा। प्राणहीन प्रचलित प्रथाओंके सामने कोई भी महान व्यक्तित्व शीश नहीं झुका सकता।

हमें महान व्यक्तित्वका मंत्र देती है सबसे पहले माता। इस पृथ्वी पर जितने भी आदमी-मनुष्यके रूपमें आये हैं, माताओंने ही उनके ललाटपर विजय-तिलक लगाया है, आगे बढ़नेका आशिर्वाद दिया है। इसलिये हे नारी ! अपने उजाड़ जीवनमें वसंत ऋतुका उत्सव ले आओ। प्रस्तुत करो अपना उज्ज्वल भविष्य। तुम्हारे परिवर्तन बलपर भारतके जीवन-मरणकी समस्या निर्भर है।

यदि पुरुष विलासिताका गुलाम है और वह नारी-स्वतंत्रताके हला-हलको नहीं पचा सकता तो यह ठीक है, वह नारीके सत्य शिव और

सुन्दर अंशके दर्शन भी नहीं कर सकता। यदि आप भारतवासी हैं, आपके खूनमें भारतीय रक्तका चमत्कार है, तो वह नारीके शक्ति-रूप को अवश्य पहचानेगा। संसारके सर्वश्रेष्ठ महापुरुष महात्मा गांधीने ठीक ही लिखा है—"मैंने स्त्रियोंको त्याग और सेवाकी सजीव मूर्ति माना है। उनकी पूजाकी है। उनमें आत्म त्याग, सेवाकी जो शक्ति और भावना है, उसे पुरुष नहीं पा सकता"

यदि हमारे जीवनमें स्वतंत्रताकी तीव्र लहरें हैं तो जो कुछ जीर्ण-शीर्ण है, सब कुछ बदलकर रहेगा। संस्कार बदलेंगे, त्योहार बदल जायेंगे, त्योहारोंका रूप दूसरा होगा।

आज लाखों भारतवासी जीवित रहकर भी मृत-जीवन बिता रहे हैं। क्या इन अत्याचारोंको देखकर नवयुवक उत्तेजित न होंगे? और क्या इन अत्याचारोंसे मोर्चा लेनेके लिये झुण्डकी झुण्ड पीड़ित आत्मायें घरोंसे न निकल पड़ेंगी? आजका युग मरते हुये आदमियोंके संघर्षका युग है। मेरा विश्वास है, इन मूर्खताओं और उदासीनताओंको पुरुष भी मार भगायेंगे, स्त्रियाँ भी।

भारतकी उज्ज्वल-संस्कृति कमलका वह फूल है, जिसकी हर पत्तियां खुशीसे नाच रही हैं। प्रत्येक भारतवासीके जीवनमें इस फूलकी खूबसूरती छिपी है। लेकिन यदि वह अज्ञानता वश इसे नोचकर फेंक देता है, तो उसे स्थायी आनन्दके दर्शन कैसे मिल सकते हैं?

मैं यह पुस्तक गृहयुद्धके जमाने सन् १९४६ में लिख रहा हूं, जब समस्त संसारके आदमियोंमें दर्द भरी हलचलें मच रही हैं। मनुष्य अपने खोखले दिमागको लेकर एक दूसरेको निगल जाना चाहता है। उसने मूर्खतावश अपने विकासको भुला दिया है और उसका काम रह गया है— सिर्फ गर्भमें रहना, दुर्बलता, रुपयेके लिये एक दूसरेका खून चूसना, स्वार्थकी गुलामी, खाना कमाना और अंतमें मर जाना। ऐसे ही आदमियोंके लिये किसीने कहा है :—

"येषां न विद्या, न तपो, न दानं,
ज्ञानं न शीलं, न गुणो न धर्मः,
ते मृत्यु लोके भुवि भार भूता,
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरंति ।"

और देखिये—संत तुलसीदास 'मनुष्य' की कितनी सुन्दर व्याख्या करते हैं—

"नर समान नहिं कवनेहु देही,
जीव चराचर जांचत जेही।
नरक स्वर्ग अपवर्ग नसेनी,
ज्ञान, विराग, भक्ति दृढ़ देनी।"

दोनों तरहके आदमियोंको कसौटीपर कसकर देखिये। आजका मूर्ख सत्यको छोड़कर असत्यका भक्त बन रहा है। कोई अधिकारके लिये कटता मरता है, कोई दूसरोंकी उन्नतिसे जल भुन रहा है। क्या यह सब पशुताके रूप नहीं ? सच तो यह है, कि आदमी बननेमें सब बातोंका निचोड़ है—"संसारमें इस तरह रहे कि मृत्यु पश्चातापका कारण न बन जाय।"

भारतवर्षके अर्द्ध मृतक पीड़ितोंने दुनियाको ठगनेके लिये एक बेहूदे नियमकी रचनाकी है। वह नियम है, स्त्रियोंको वेद नहीं पढ़ना चाहिये। मैं पूछता हूं क्यों ? क्या ऐसे नियम स्त्रियोंको गिरानेके लिये नहीं बनाये गये ? मैं कहता हूं—प्रत्येक स्त्री उच्च कोटिके ग्रंथ पढ़े। इससे स्त्री विदुषी बनेगी और अंधविश्वासोंके विरुद्ध विद्रोह करेगी।

तुम मौलिक और सद्गुणी भावनाओंको सींचती रहो। कुछ न कुछ अच्छा ही होकर रहेगा। हां, यह समझ लो, जो काम तुमने हाथ में लिया है, उसे करनेमें पूर्ण समर्थ हो। यदि तुममें आत्म-विश्वास मौजूद है तो तुम असंभव कार्योंको भी संभव कर दिखा सकती हो।

तपस्विनी नारी ! तुम मनुष्यको ले चलो—अमृत पिलाकर। वहां

मनुष्य जियेगा। याद रखो, तुम्हें भविष्यकी पृथ्वीमें अनेकों वीर स्त्री-पुरुषोंके रूप देखने हैं। अपनी दुर्बलतापर विजय प्राप्त करो। तुममें सिर्फ जीव ही नहीं, जीवन भी चाहिये।

यदि आप कोई लेख या कविता लिखती हैं, तो मैं आपसे कहूंगा—आपकी रचनाओंमें तलवारकी चमक चाहिये। बोलनेमें मिठास और अंतरमें निर्मलता। जो बात मनमें हो, वही मुखमें भी। यही सत्य है, और इस सत्यकी रोशनी सहस्रों सूर्यसे बढ़कर प्रकाशमयी और बलवती है।

आज मनुष्यको सब कुछ सीखना पड़ेगा। और आदमीके प्रतिकूल नियमोंको अनुकूल सांचेमें ढालना होगा। यदि मनुष्यके मनकी संपूर्ण शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं और उसका दिमाग शिक्षित हो जाता है तो वह गंभीर समुद्रकी तरह शांत हो जाता है। संत तुलसीदासजीके शब्दोंमें—

बरसहिं जलद भूमि नियराये।
यथा नवहिं बुध विद्या पाये॥

एक जाति, एक भाषा, एक राष्ट्र हमें चाहिये। बुद्धिमान आदमी इन शब्दोंसे बहुत कुछ सीखते हैं और दुर्बल हृदय इनकी असफलताओं से घबराते हैं। प्राचीन भारतकी भाषा एक थी। आज अनेकों डफली हैं, अनेकों राग। ईर्षाने आदमीके जीवनपर कब्जा कर लिया है, जिसमें वह दूसरोंको न जलाकर खुद जल रहा है। लेकिन समझता नहीं। जब समझ जायगा, तब उसकी आँखें खुलेंगी और वह सबसे प्रेम करने लगेगा। किसीकी तारीफ करना बुद्धिमानी है और चार आदमियोंमें किसीकी गलती पकड़ते फिरना, सबसे बड़ी नादानी।

आजके दिनका महत्व समझा है आपने? किसी भी आदमीका तगड़ा मित्र है आजका दिन। किसी भी आदमीका बुरा दुश्मन है कलकी बातोंका पश्चाताप!

नावके एक सूराखने केवटको भी डुबा दिया, उसकी नौकाको भी। घड़ीका पैण्डूलम जहाँ बिगड़ा कि घड़ी बंद हो गयी। मेरे कहनेका मतलब है, अपनी कमजोर जंजीरकी लड़ियोंको बढ़ाते मत चलो। नहीं तो गिरोगे और ऐसा गिरोगे कि फिर कभी उठ न सकोगे?

मान लो, तुम कोई काम करने बैठी हो, तो तबतक न उठो, जबतक उसे पूरा न कर लो। या तो किसी काममें हाथ न लगाओ और यदि लगाया है, तो उसे पूरा करके छोड़ो। वह तुम्हारे सामने नये उद्योग धंधोंका मुंह खोल देगा। नवीन ज्ञानसे एक नवीन राज्यकी रचना होती है। वह राज्य चाहे कैसा ही छोटा क्यों न हो, एक दिन तुम्हारे सिंहासन पर सफलताका राजतिलक करेगा। गलतियाँ, असफलतायें और आलस्य कभी किसीके जीवनको पूर्ण नहीं बना सकतीं।

मेरा मित्र एक लोहार था। उसकी छोटीसी बांसकी दूकान थी। वह दिनभर कड़ी मेहनत करता और मुझसे बातें करता जी लगाकर। कई वर्षों बाद जब मैं उससे मिला – वह एक लंबे-चौड़े कारखानेका मालिक था। मैंने उससे सफलताका रहस्य पूछा। उसने कहा—"मैं जो काम करता हूं, मन लगाकर और पूर्ण एकाग्रतासे। मुझे लोग भाग्यशाली कहते हैं और वह इसलिये कि मैं मेहनतकी राहपर बराबर चलता रहता हूं।"

जिसे दस आदमी मानते और आदर करते हैं। समझना, उस आदमीमें कोई न कोई चमत्कार जरूर है। जैसे शीशा साफ होनेपर उसमें मुंह दिखाई देता है, वैसे ही हार्दिक पवित्रतासे हमें बनाने वालेका प्रतिबिंब दिखाई देने लगता है। यह बात याद रखने लायक है—फलके बड़े होनेपर जैसे फूल अपने आप मुरझाकर गिर जाता है, वैसेही जहाँ मनुष्य मनुष्यताको पाकर सुखी हुआ – उसकी पशुता धूलमें मिल जाती है।

कोई भी घर हो, अंधेरेमें पड़ा हो, उसमें दीपक जलानेसे तुरंत प्रकाश

हो उठता है, वैसे ही सदियोंसे गुलामीमें गिरा हुआ आदमी जब अपने में व्यक्तित्व प्राप्त कर लेता है, प्रत्येक आदमी उसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। पारसको छूकर लोहा सोना बन जाता है। फिर चाहे उसे मिट्टीके अंदर रखिये या कूड़ेमें फेंक दीजिये – वह जहाँ रहेगा, सोना ही बन कर।

मनुष्य साधारण नहीं, विराट शक्ति लेकर उसने पृथ्वीपर जन्म लिया है। अब उसकी रक्षा वैसी ही पुरानी जिन्दगी लेकर चलनेमें नहीं। उसे स्वयं उन्नत होकर जनताके उत्थानका नवीन संदेश देना है। हमारे विचार एक दूसरेके प्रति सहानुभूति पूर्ण होने चाहियें। हम अपने मतलबके लिये एक दूसरेकी निन्दा करते हैं। एक दूसरेको गिरानेकी चेष्टा करते हैं। यह भावनायें पशुतासे भरी हैं। असलमें हमें एक दूसरेके साथ प्रेम और सहयोग करना चाहिये। सहयोगी आदमियोंकी आँखोंके साथ अपनी तुलना करो। हमें क्या करना और क्या बनना है?

क्या आप जानते हैं, मनके खतरनाक दुश्मन, जीवनकी शक्तियाँ और आपके गुण दोष क्या हैं? अच्छाई और बुराईकी गहराईमें पैठकर अपने मनको तौलिये। अपने मानसिक रोगोंकी दवाका आविष्कार कीजिये। ताजा जीवन प्राप्तकर शक्तिशाली पीढ़ियाँ तैयार करना आपका प्रधान कर्त्तव्य है।



वीरांगना

आज भारवर्षमें हजारमें आठ सौ स्त्रियाँ सड़ी गली जिन्दगी बिता रहीं है। उन्हें यह भी मालूम नहीं कि दुनिया नारंगीकी तरह गोल है या कलकत्तेमें बिकनेवाली बादामकी बरफीकी तरह चौकोर। उन्हें इस बातका पता भी नहीं रहता कि संसारमें कहाँ क्या हो रहा है? गौरसे उनके चेहरे देखिये, जैसे गुलाबी फूल पीला होकर मुरझा गया है। उन्हें न प्राकृतिक हवा मिलती है, न ताजी रोशनी। घरोंमें कैद हैं। यदि कभी बाहर निकलनेका मौका भी मिलता है तो रास्तेमें चलती हैं जैसे निर्जीव। कदम आगे बढ़नेके लिये तैयार नहीं होते! जरा रेलगाड़ीके सफरमें उन्हें देखिये! जैसे कोई गठरी सीटपर रखी हो य निर्जीव गुड़िया बैठी हो। उनकी यह हालत बनानेका अपराध किस पर है? मैं कहूँगा—उन पुरुषों पर, जो बाहर शेर मारनेकी डींगे हाँकते हैं और अपने घरको चूहेका बिल बनाकर रखते हैं। इन अपराधियोंने स्त्रियोंकी फुर्तीको आगे नहीं बढ़ने दिया। बेशर्मीका जामा पहन कर वे स्वयं अपने स्वास्थ्य-सुधारकी ओर निगाहें फेंकते रहे। लेकिन उन्होंने स्त्रियोंका स्वास्थ्य उन्नत बनानेमें हमेशा लापरवाही दिखायी। जिसमें वे राष्ट्रके प्रति उदासीन रहकर विलासी फैशनकी पुतलियाँ बनी रहें। इस तरह उन्होंने स्त्रियोंको परदेके जेलखानेमें बन्दकर इस कदर सड़ा डाला कि हमारी भविष्यकी संतानें कमजोर, व्यभिचारमें उतावली और माता पिताको जलानेवाली बन गयीं। गुलामी, खुशामद और गुण्डई

उनके रोम रोममें समा गयी और इस भ्रष्टताका समर्थन करनेमें वे अपना गौरव समझने लगे।

सबसे पहले मुसलमानोंने भारत पर अपना सिक्का जमाया। उन्होंने भारतवासियोंको कुचला, पीसा, लूटा, और जब वे सिर्फ हाड़ मांसके पुतले रह गये, अंग्रेजोंने मुसलमानोंको बर्बाद कर अपना सिक्का जमा लिया। भारतवासी उसी दिनसे गुलामीकी चक्कीमें पीसे जाने लगे और अपनी दुर्दशासे तंग आकर उन्होंने स्त्रियोंको बंद कर दिया कोठ-रियोंमें। दास दासियोंकी रचना की गयी। चारों तरफ फूटके विष बीज बोये जाने लगे—लेकिन स्त्रियोंका पवित्र जीवन तो देखिये। हिन्दू संस्कृतिकी रक्षा वे बराबर करती आईं। धार्मिकता, सरलता और सद्-गुणोंको वे अपनेसे आज तक अलग न कर सकीं।

अंग्रेजोंने गुलामीकी जञ्जीरमें सबको जकड़ लिया। खुशामदकी रचना की गई और उसकी जड़को मजबूत बनानेके लिये वे और भी आगे बढ़ने लगे। उन्होंने स्त्रियोंको विलासकी पुतली बनानेका प्रचार करना शुरू किया। लोगोंको यह बताया जाने लगा—मोहम्मद साहबके जमानेमें अरबवाले लड़कियोंको मार डाला करते थे। यह जंगली प्रथा भारतवर्षमें भी फैलायी जाने लगी और इसने सबसे पहले राजपूतों और कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंका इतिहास कलंकित किया। नवजात कन्याओंके मार डालनेकी प्रथाका पता यहींसे लगना शुरू हुआ। और इस प्रचा-रके परिणामको तो जरा आप आंखें खोलकर देखिये—आप शहरों और देहातोंमें जो कुलटाओंके गुप्त और प्रकट बाजार खुल गये हैं—क्या वे मुसलमानों और अंग्रेजोंकी घातक चालबाजियोंके नमूने नहीं हैं?

मैं कहूंगा कि स्त्री इस तरहसे कुचल दी गई कि सिवा धर्म और आंखोंके उनके पास कोई बल नहीं रह गया। अब उनका भारतवर्ष स्वाधीन है। अब उसने प्रकाश देखा है। अब यह सच्ची वीरांगना बन-

कर उठ खड़ी होगी उसके आस पास बगावतका झंडा लहरा रहा होगा और वह अपमानसे क्रुद्ध होकर बगावत करेगी। क्या मैं पूछ सकता हूँ, लोग कमजोर और सीधी सादी गायको क्यों मारकर खा जाते हैं, लेकिन क्या वजह है, जो शेरोंकी दहाड़के सामने कोई खड़ा भी नहीं होता!

हममें परिवर्तन चाहिये परिवर्तन! विचारोंका परिवर्तन, कर्त्तव्यका परिवर्तन। सांपको नयी जिन्दगी तब मिलती है, जब वह पुरानी केंचुल छोड़ देता है। दरख्तोंमें रसीले फल तब आते हैं, जब नये पत्ते निकलते हैं। मैं समुद्रकी लहरोंको बुलाता हूं। वे आयें और प्रचण्ड लहरें लेकर आयें—जिसमें स्त्रियोंकी सम्पूर्ण दुर्वलता, नम्रता और गंदगीका कूड़ा कर्कट उनमें वह जाय।

पुराने अंधविश्वास, मनहूसियत भरे रस्मो रिवाज, स्त्रीको दुखी-बनानेवाले विचार, और अंधी कार्य प्रणालियोंने मनुष्यको उस नर्कमें ला गिराया है जहां निर्बुद्धि और नाशके सिवा और कुछ नहीं। आदमीके दर्शन सिर्फ कंकाल रूपमें होते हैं।न उनमें स्वास्थ्य रह गया है, न यौवन जीवन। इस तरह भारतवर्षकी नींव हिल उठी है अब उसमें नवीन शक्ति और परिवर्तनकी जरूरत है। स्त्री पुरुष और बच्चे सभीमें जान डालनेकी आवश्यकता है। जिसमें हम इतने बलवान बन जायं कि सभी तरहकी विरोधी शक्तियोंका मुकावला कर सकें और आदर्श व्यक्तियोंकी कतारमें हमारा आकर्षक स्थान हो।

आप अधिकांश महिलायोंको देखिये —उनके जीवनमें आग लगी है मन अतृप्त है। वे जो चाहती हैं, नहीं मिलता। उनके सुनहरे संसारकी कल्पनायें नष्ट हो रही हैं। ऐसा क्यों होता है? असंतोषकी यह आग भीतर ही भीतर क्यों सुलग रही है? पुरुषोंको चाहिये—पत्नीके इन भावोंको समझें और महिला समाजके संगठनमें उन्हें आगे बढ़ने दें। आज कोई भी शिक्षित पुरुष स्त्रीको सिर्फ अपनी कामवासनाकी तृप्तिका

साधन नहीं, बल्कि उसे जीवन संगिनीके रूपमें देखना चाहता है। जो उसे सच्ची सलाह दे सके। बंदूक चला सके और राज्य संचालनमें पुरुषोंकी सहायिका बनकर रह सके।

आपने रानी पद्मिनीकी जीवनी अवश्य पढ़ी होगी? लक्ष्मीबाई की राज्य संचालन शक्तिसे भी आपका परिचय होगा। उनके गौरव सम्मानसे हमारे सिर ऊँचे हैं। यदि वे ही स्त्रियां परदे की चहार दीवारियोंमें बंद होतीं, शिक्षाके नामपर नाक भौं सिकोड़तीं तो क्या उनके द्वारा देशोद्धारके कार्य सुचारु रूपसे संचालित हो सकते थे? क्या दमयंती, चिंता, तारामती इत्यादि वीराङ्गनायें कमजोर माताओंकी गोदमें पली थीं? आजकी स्त्रियोंको चाहिये, वे पुरुषोंको आकर्षित करनेकी फैशन प्रियता छोड़ दें और जीवन का अमूल्य समय नष्ट न कर शिक्षा की ओर कदम बढ़ायें, वीर संतानों को जन्म दें। आज हमें रास्ते में बीड़ी पीते हुए और सिनेमा के गंदे गीत गाते हुये दिमाग भ्रष्ट बालक नहीं, राणा प्रताप जैसे वीर पुत्र चाहिये।

क्या आपके लिये निम्न लिखित विचार लाभ दायक नहीं?

(१) आपको कविता, नाटक, उपन्यास या कहानियां लिखने की स्वतंत्रता चाहिये।

(२) शिक्षा का जीवन में चमत्कार।

(३) स्वास्थ्य रक्षा का उचित प्रबंध।

(४) भारतीय शासन में भाग लेने का अधिकार।

(५) संकट निवारण के लिये राष्ट्र-शासन की ओर से उचित प्रबंध। जिससे विपत्तियों के जालमें फंस कर कोई मानसिक हत्या न कर सके। न कोई काम आत्म-विचारों के विरुद्ध।

(६) प्रेसों की स्वतंत्रता, जहां सेंसरकी आवश्यकता न समझी जाय।

मित्र और महापुरुष कौन हैं? जिनकी आज्ञा मानते हैं। जो

विषय लुब्ध, जिसकी आत्मा क्षुद्र है, जो अपने अमूल्य समय का दुरु-योग कर रहा है, सांसारिक चिंताओं के काले बादल जिनके हृदयाकाश में मंडला रहे हैं—वे ही हैं—दीन दुर्बल और नकली मनुष्य। लेकिन सुखी और सफल कौन है ? जो दुख सुख को समान रूप से देखता है। दूसरों के आनन्द को अपना आनन्द मानता है। वह एक होकर भी अनेक है और मनुष्य मात्र के अंतस्तल में उसका स्थान है। उसके रोग शोक और विपत्तियों के दूर करने की एक मात्र दवा है—आनन्द।

बहुत से लोग अपने राष्ट्र निर्माताओं, प्रोफेसरों और वैज्ञानिकों को जानते तक नहीं। ऐसे आदमी दिमाग के बेहद कमजोर होते हैं। वे उपरोक्त आदमियों को देख कर शर्मा जाते हैं, और उनसे बात तक करने की हिम्मत नहीं पड़ती। ऐसा क्यों होता है ? उनमें साहस का क्यों अभाव है ?

मैं कहूंगा—गिरे हुये दिमाग का खोखलापन !

साहस से काम लीजिये। मनुष्य के अन्दर साहस की शक्ति अद्भुत है। मैं एक लड़ाके फौजी आफिसर को अबतक नहीं भूल सका,

पिछले जर्मन युद्ध में एक हिन्दुस्तानी आफिसर घायल हो गया। उसने अस्पताल पहुंच कर सर्जन से कहा—" मेरी बांह में गोली लगी है। कितने दिनों में अच्छा हो जाऊंगा ?"

सर्जन बोला—"तीन महीने लगेंगे।"

"यदि बांह काट दी जाय तो ?"—हिन्दुस्तानी आफिसर का प्रश्न था—"तो मैं कितने दिनों बाद रणक्षेत्र में उपस्थित हो सकूंगा ?"

"एक महीने में।"—सर्जन का कण्ठस्वर था।

"आफिसर—" तो कृपया बांह काट दीजिये।"

सर्जन दंग रह गया। लड़ाई में उस आफिसर की बहुत आवश्य-कता थी। और वह अपनी बांह से ज्यादा लड़ाई के मैदान को प्यार करता था।

इसे कहते हैं साहस। आप चाहे जिससे बातें करें। दिमागको खोखला बना कर घबरायें नहीं। यदि आपके शरीर के अन्दर रोग है तो उसकी दवा भी आपके मन में मौजूद है। और वह दवा है साहस। जो मन में फुर्ती और सौंदर्य लाती है।

मैं अपने सभी भाई बहनों से कहूंगा—जब तक आप किसी तक-लीफ में नहीं पड़ जाते, आपके मनको चोट नहीं लगती,—जीवन के सही कल पुर्जों को पहचानना मुश्किल है। यदि आदमी आगे बढ़ कर साहस से काम ले तो उसकी अनेकों मुसीबतों का अंत होजाये और दिमाग में खोखलेपन की लहरें हवा में भाप जैसी उड़ने लगें।

बंदर देखा है आपने ? और बंदरोंका गिरोह ? एक दिन आमको टोकरी मेरे हाथमें थी और मैं मजेमें आम खाता रास्ता तय कर रहा था। बंदर खांव-खांव कर मेरी ओर दौड़े। मैं घबड़ा गया, अब क्या होगा ? लेकिन साहसने मेरे कानोंमें मंत्र फूंका यह कोरी बंदर घुड़की है। मैंने ढेले उठाये और बंदरोंका झुण्ड भाग गया। यहां यदि मैं कमजोरीसे काम लेता तो मेरी बुरी हालत होती। आम तो सब चले ही जाते। साथ ही मैं घायल भी हो जाता।

और एक मजाक सुनिये—

बहुतसे स्त्री पुरुष दूसरोंके दोष ढूंढ़ते रहते हैं। लेकिन अपनी गल-तियोंकी समालोचना नहीं करते। दिमागकी कमजोरीका यह अच्छा सुबूत है। एक दिन एक रईसके घर में दावत खाने गया। कान्यकुब्ज ब्राह्मण हूं। मेरे ही जिलेके रहनेवाले एक सज्जन वहां मौजूद थे। बाबू साहबके दरवान। मुझे पहचानते थे। जब हाथ धुलाने आये तो धीरेसे बोले—"बनियांके हिंया खाव लिन्हेंव। जाय तुम्हार धर्म नष्ट होइगा।" मैं मुस्करा कर चला आया। एक महीने बाद मैंने देखा वही सज्जन हलवाईकी दूकान पर बैठे हुए पूड़ियां खा रहे हैं। मुझे देख

कर जरूरतसे ज्यादा झेंपे और झटपट पैरोंसे जूते उतार कर बोले—"आव दादा! आव!"—मैंने नमस्कार किया। थोड़ी सी मिठाई खरीदी और सड़क पर चलता दिखाई देने लगा।

खोखले दिमागका यह मजेदार नमूना है। यदि वह सज्जन मुझे दोषी न बताकर स्वयं अपनी समालोचना कर डालते और बाजारकी पूड़ी खाना धर्म भ्रष्ट समझते तो शायद मुझे चिकोटियां न काटते। लेकिन आदमीकी बुद्धिका गलत रास्ता—वह स्वयं अपना दोष न देखकर दूसरों को उल्लू बनाता है। यदि आदमी अपनी समालोचना करना सीखे तो उसे यह ज्ञान पाते देर न लगे—मुझे पृथ्वीपर खड़ा होना है और वहांके मानसिक खजानेमें अमूल्य धन भरा है।

क्या मैं पूछ सकता हूं, आप अपनी गलतियोंकी समालोचना करते हैं और आपका स्वास्थ्य कैसा है? मानसिक बीमारियोंसे बचते रहिये और वे काम कीजिये, जो आपको आगे बढ़ानेवाले हों। भविष्यमें स्वाधीन भारतके आदमियोंकी भीड़ आपसे अनेकों प्रश्न पूछेगी और सबको आपको सही जवाब देना होगा। कौआ कान ले गया। यह सुन कर कौयेकी तरफ न दौड़िये। अपना कान टटोलिये। कान मौजूद मिलेगा।

मनुष्य मात्रको स्नेहकी निगाहोंसे देखनेका नाम है—पवित्र प्रेम जो मनुष्य प्रेमके साथ अपना परिचय देते हैं—वह सहजमें ही दूसरोंका हृदय जीत लेते हैं। उस प्रेममें न राजा रंकका भेद रहता है, न मूर्ख विद्वान का। वह सबमें समान भावसे रौनक वितरित करता है उसका कहना है, सबकी जय हो! पूजा करनेवाले की भी, ठुकरानेवाले की भी।

सच तो यह है, आजके मनुष्यकी दुनिया खुशामद और गर्वसे भरी है। हमारे अपनेही सामने अपराधोंके ढेर लगे हैं। यदि हम आज संगठित होते, एक मालाके फूल बनकर रहते, तो हमारी माला प्रभु के

चरणोंपर अवश्य चढ़ती, दो और दो मिलकर चार होते हैं। यह है आनंदकी दुनिया। रस्सीके टुकड़े एकमें जोड़ दीजिये, हाथी बंध जायगा। पण्डित मदनमोहन मालवीय कहा करते थे—"संघे शक्ति कलियुगे।"

हर आदमीके सौभाग्यका सूर्य तब उदय होता है, जब पराये अपने हो जाते हैं और उस समय मनुष्य बड़ी विपत्तिमें पड़ता है, जब अपने पराये हो जाते हैं। आज ९५ सैकड़े आदमी उपेक्षित हैं। एक दूसरेकी परवाह नहीं करता। इस लापरवाही और उपेक्षामें नारी समाज तो बुरी तरहसे पिसा है। जैसे सब तरहके कुचक्र चल रहे हैं नारी समाजके विरुद्ध। दंगोंमें स्त्रियोंका सबसे ज्यादा अपमान किया गया। क्योंकि स्त्रियोंकी संख्या पुरुषोंसे ज्यादा रही। यह क्यों? स्त्रियां तो बिल्ली बना ही दी गयी थीं, पुरुष भी गीदड़ बन गये। संगठन नामकी कोई चीज नहीं रही उनमें। एक दिनकी बात है—

कलकत्तेमें हिन्दू-मुसलमानोंका दंगा चल रहा था। आदमी गाजर मूलियोंकी तरह काट काटकर सड़कोंपर फेंके जा रहे थे। ट्राम दौड़ रही थी—यात्रियोंमें पंचानबे सैकड़े मर्द थे, पांच सैकड़े स्त्रियां। विधर्मियोंकी भीड़ने एक जगह ट्राम रोकली। मर्दोंको घायल कर दिया और स्त्रियोंको ले भागे, लोग तमाशा देखते रहे। किसीकी हिम्मत न पड़ी कि डटकर मुकाबला करते और शहीद हो जाते। लेकिन उन्हें इतनी तकलीफ करनेकी क्या जरूरत?

आजके आदमीका दिमाग खोखला है। वह पैसेके लिये पागल है। लेकिन वह क्या जियेगा, जो मरना नहीं जानता। नारीका अपमान और समाजका यह अधःपतन सिर्फ कष्ट दायक ही नहीं भविष्य संतानोंके लिये घातक भी है।

हमें तलवारोंकी चमक चाहिये। राष्ट्र और समाजमें वीरांगनाओंके दर्शन। हमें जीवन चाहिये, जो सभी उपयोगी वस्तुएं प्रदान करे।

चरित्र और शारीरिक बलकी भी हमें आवश्यकता है। यदि हम अपनी मां-बहिन और पत्नीकी रक्षा नकर सके, तो क्या हम मर्दोंको जीना उचित है? यदि हम मेलों-तमाशोंमें छेड़-छाड़, झाड़-फूंक, नामधारी महन्तों, पुजारियों और गुण्डोंसे स्त्रियोंकी आत्म-मर्यादाकी रक्षा नकर सकेंगे तो हम और भी गिरते जायेंगे और हममें उठनेकी ताकत न रह जायगी।

क्या स्त्रियां अपने मनको निम्नलिखित उपायोंसे सुखी रख सकती हैं?—

(१) आत्मरक्षाका ध्यान हर समय हो। मनको वीरोचित बनायें। कायरोंको देखकर भागें नहीं।

(२) भोजन पुष्टिकर हो। ऊंचे विचारोंसे स्वास्थ्य कायम रखना शरीरमें ताजा खून दौड़ाना है।

(३) भय, घृणा, ईर्षा जहरीली आदतें हैं। रक्तकणोंमें इनका फैलना शरीरका नाश है। क्योंकि इनसे दूसरेका नुकसान नहीं होता, मनुष्य अपने पैरोंपर स्वयं कुल्हाड़ी मारता है।

(४) दुःखकी घड़ियां दूर करना आपका सिद्धान्त होना चाहिये। जिन्दगीमें बहुत-सा अंधेरा भी है, उजेला भी।

(५) निराश और उदास स्त्री-पुरुषोंसे दूर रहो, ये महान पापी हैं और पाप इनका भोजनकर रहा है। यदि आप इनके पास बैठ जायंगी तो अपना रोग यह आप पर लाद देंगे। और आपको बीमार होते देर न लगेगी।

(६) रोज एक नयी सहेली बनाइये। इससे आपके साथ उनकी दिलचस्पी बढ़ती जायगी। यदि आप किसीका आदर करेंगी तो वह भी आपका गौरव बढ़ाये बिना न रहेगी।

(७) बीती घटनायें न सोचिये। आजकी घटनाओंपर ध्यान दीजिये और अपने भविष्यको तगड़ा बनाइये।

(८) अपना सुख अपने-ही पास रखना गैर कानूनी है। उसे दूसरों को भी बांटिये। वे जीवन चाहते हैं।

(९) पतिपर विश्वास कीजिये। जब कोई भी संदेह या गलत फहमी का मौका आये तो झगड़ेको चट-पट निपटा डालिये।

(१०) यदि दो आदमी कहीं बातें करते हों तो छिपकर न सुनिये। दुनियामें फूल भी हैं, कांटे भी।

(११) यदि कोई भद्दी शक्का है तो न उसकी हंसी उड़ाइये, न बेहूदा प्रचार कीजिये। किसी अवगुणको विषकी तरह घूंट जाना बड़प्पन है।

(१२) बार-बार डांटने फटकारनेसे न स्त्री सुधर सकती है, न कोई युवक। जैसे पौधा सींचनेसे बढ़ता है, प्रेमकी उम्र भी उसी तरह धीरे-धीरे बढ़ती जाती है।

उपदेश कहकर चार बेवकूफोंमें इनकी हंसी भले ही उड़ाई जाय, लेकिन हैं ये कामकी बातें। जिन्हें जरूर सीखना चाहिये।

आप लड़कोंपर तो अक्सर चक्कर काटते हैं। जरा स्कूल कालेजकी लड़कियोंको देखिये। पढ़ना शुरु नहीं हुआ कि चढ़ गया इनकी आंखों पर चश्मा। स्वास्थ्यकी तरफ ध्यान नहीं। बस, भविष्यमें कई कमजोर बच्चोंकी मां बनकर दम तोड़ देती हैं। याद रखिये, माता और बरसात दोनों एक हैं—जो फूल फलोंसे पृथ्वीको जीवन दान देती हैं।

यदि फूल मुरझा जाय तो किसका दोष? ठण्डी हवा और पालेका—क्यों? जिसने उसे सुखा दिया। यदि औरत कमजोर और अशिक्षित है तो किसका अपराध?

भारतवर्ष विराट ऐतिहासिक संस्कृतिका गुरु है। जिस दिन वह जागेगा, उसमें अच्छेसे अच्छे विज्ञान, मार्दि देवताओंके समान स्वर्गो-पाले स्त्री-पुरुष जन्म लेंगे। लड़कियां मानसिक शक्ति लेकर उत्पन्न होंगी। इस भूमिसे अत्याचार और झूठ बोलनेकी आदतें हमेशाके लिये दूर हो जायंगी।

नारी! तुम शक्ति रूपी बनो। भारतके सामाजिक और राष्ट्रीय

जीवनको संचालित करो। अब तुम्हें मान लेना होगा कि संसारमें सबसे बड़ा धर्म है – सत्य।

सड़कों, गलियों और पार्कोंमें घूमिये। तितली युवतियोंको देखनेके लिये लोगोंकी आंखें चलती-फिरती रहती हैं। सिर्फ यही नहीं; आवाजें भी कसे जाते हैं। क्या पुरुषका यह सौंदर्य—क्षेत्र दुर्दशाओंसे नहीं भरा है? क्या उनकी यह शोचनीय हालतें समाज, धर्म, अर्थ और जीवनको महानाशकी ओर नहीं खींचे लिये जातीं? क्या आप वीभत्स नारी रूपोंमें विशाल बल धारिणी नारीके रूप नहीं प्रकाशित कर सकते? एक आदमी बार-बार यही राग अलापते हुये मुझे मिला—"किसी वीभत्स स्त्रीसे घड़ियाल बेहतर है। क्योंकि घड़ियाल किसी आदमीको पकड़ लेनेपर भले ही छोड़ दे, लेकिन जब स्त्री-पुरुषको एकबार पकड़ लेती है, उससे छुटकारा पाना असंभव हो उठता है।"

नारी हृदयका ध्येय होता है कि पुरुष उसके शरीरके प्रति नहीं, बल्कि आत्माकी तरफ आकर्षित हो। क्योंकि वह जानती है, यौवन और सौंदर्यका आकर्षण क्षण भंगुर है। लेकिन पुरुषको जैसे नारी चाहिये, नारीको वैसे ही पुरुष भी। यह ऐसा स्पर्श है, जो चरित्रको पवित्र बना देता है। जिससे वह स्वयं आशीर्वाद तो प्राप्त करता ही है, उसे दूसरों को भी आशिर्वाद देनेका हक प्राप्त हो जाता है। वह हक क्या है? मेशीनगन या एटम बम नहीं, आत्म-बल है।

मनुष्य इसीलिये बनाया गया है कि वह संसारको मुक्तिका मार्ग बताये। हर तरफ फैल सके। मैं मानता हूं, यह संघर्षकी चीज है। लेकिन बगैर संघर्षके बुद्धि नहीं बढ़ती। यदि आप कुछ लिखना चाहते हैं तो खुली सड़कोंपर चलें। लेखकोंका घर कालेज नहीं, बल्कि जनताका समूह है। हर जीवनका कोई न कोई कोना सौंदर्यसे जगमगाया करता है।

आपके लिये यह दिलचस्प अध्ययन होना चाहिये कि संसारमें

भारतीय-संस्कृतिकी हमेशा रक्षाकी गई है। किसीकी भी जिन्दगी फूलों की सेज नहीं, संघर्षोंकी कंटकित-फुलवारी है। अपना काम करते चलो—कभी न कभी उपहार स्वरूप सुन्दर और स्वादिष्ट फल जरूर मिलेंगे। महात्मा गांधी लिखते हैं—"मेरे जीवनमें असफलताओंका महासंग्राम चला करता था। यदि गीताके उपदेश मेरी जिन्दगीमें चमत्कार न भर देते तो आत्महत्याके सिवा दूसरा उपाय न था।"

जब कोई अचानक युद्ध आ पड़े तो उसमें भाग लेना सिर्फ पुरुषोंका ही कर्त्तव्य नहीं हो जाता—स्त्रियोंको भी उसमें हाथ बंटाना चाहिये। वर्ना देशकी रक्षा कैसे होगी? नारीकी मोहिनी मोर्ति जितनीही खूबसूरत है, उतनी ही भयंकरी भी। मैं और आप, आपकी पोशाकें, धर्मतत्व, संस्कृति, भाषा और नागरिक जीवन; जरा आलोचना कर देखिये तो आप गहरे पानीमें हैं या कच्चे तालाबमें तैर रहे हैं। आत्म-विच्छेदकी घातक नीति चलाकर शासकोंने हमारे जीवन बेकार कर दिये? फूट डालो और शासन करो,—क्या यह मनुष्यता है?

गुण्डई बढ़ गयी है। सभ्य गुण्डे धनका लालच दिखाकर लड़कियों के विश्वास पात्र बन जाते हैं, फिर उन्हें थियेटर, संगीतालय या फिल्म कम्पनियोंमें बनावटी कॅन्ट्रैक्ट दिखाकर माँ-बापसे छीन लेते हैं और धीरे-धीरे उसे वेश्या बनाकर नारकीय जीवनमें धकेल देते हैं। लड़कियोंको जब अपने दुर्भाग्यका ज्ञान होता है, वह अपनेको गुंडोंके चंगुलमें पाती है तो उसे दुःखदायक यंत्रणायें होती हैं। लेकिन उपाय क्या? उपाय है सरकारके हाथमें। जो नागरिक जीवनका संचालन करती है—और राष्ट्रको रोंगटे खड़े कर देनेवाली दुर्घटनाओंसे जनताकी रक्षा कर सकती है। स्त्रियां सरकारका साथ दें और गुण्डाशाहीके खिलाफ कदम उठावें। वीर सिर्फ वही नहीं है जो हाथमें तलवार लेकर युद्ध करता है। वह भी वीर है, जो अन्याय और अत्याचारोंका डटकर विरोध करता है।

आज सामाजिक और राजनैतिक दुर्घटनाओंको देखते हुए—

भारतवासियोंको मानना पड़ेगा—इस समय स्त्रियोंकी सैनिक शिक्षा बहुत जरूरी है। आज पुरुष भी दुर्बल हो गया है, उसकी सेविका नारी भी। कई दिन हुये मैंने स्त्रियोंकी एक छोटीसी पलटन देखी उनके एक हाथमें बन्दूक थी—दूसरीमें भैनिटी वैग। भला जिन हाथों में राखी बांधी जाती थीं, उन हाथोंमें भैनिटी वैग कहांतक शोभा दे सकती है? क्या भारतकी वीर कन्या, वीर पत्नी और वीर माताका यही रूप है? योरोपके आदमी मरते हैं असंतोषकी युद्ध ज्वालामें, और हम भारतवासी मर रहे हैं नकली चमक-दमक और फैशन में।

आजका नकली मनुष्य सभ्यताका सफेद पोश है। लेकिन उसका अंदरूनी पशुवल वढ़ रहा है और नारीको देखकर अश्लोलताकी निगाह फेंक रहा है। भला आपकी संतान कामुक, गुंडईके रोपसे धधकती चिनगारी, और राष्ट्रकी ध्वंस मूर्त्ति न होगी तो और क्या होगा? इंसान मनमें जो कल्पनायें करता है, जिन कल्पनाओंका उसके हृदयमें तूफान उठा करता है - वह वैसा ही वन जाता है और उसकी भविष्य संतानें भी उसी मार्गपर चलनेको वाध्य हो जाती हैं। यह जीवन-विज्ञान समझ लीजिये—साधू-संतोंका सौंदर्य उनके आत्म विश्वासमें छिपा रहता है। जानवरोंका सौंदर्य उनकी तन्दुरुस्तीमें और नारीका सौंदर्य उसकी वीर-भावनामें निखरता है।

हम आज अमृतके प्यासे हैं, लेकिन वर्तन टूटा है। हमारा देश रोगी है, हम राष्ट्रकी कमर तोड़ रहे हैं! हमें जीवन दायिनी उन नर्सोंकी आवश्यकता है जो अपनी ताकत भरी दवाओंसे जनताका स्वास्थ्य आकर्षक वना सकें। आज जनताको वह दवा चाहिये—जो प्रत्येक मनुष्यकी आत्मामें प्रवेशकर जाय और उसे ऐसी अमृतमयी घूंट बना दे कि उससे मनुष्य जीनेकी कला सीख जाय। और प्रसन्नतायें चारों तरफ से उसे घेर लें।

आशा और अभ्युदयका युग दौड़ा चला आ रहा है। आज अंधकार

है। मनुष्य रास्तेमें भटक रहा है—लेकिन एक दिन संपूर्ण पृथ्वीमें जागरणका सूर्योदय होगा। और पददलित स्त्री-पुरुष नये उत्साहके साथ ऊपर उठेंगे। अगर तुम्हारा मन ऊँचा है, तो जीवनमें सब कुछ सही होता जायगा। ऊँचे दर्जेके आदमी हमेशा मित्र हैं। जो आपको नित्य ऊपर उठानेका प्रकाश देंगे। आज आध्यात्मिक शक्तियां लुप्त हैं—उनका विकाशकर एकमें मिल जाओ—लोहेके टुकड़े एकमें मिल जानेसे मजबूत हथौड़ा बन जाते हैं!



स्वास्थ्य

मैंने एक दिन समुद्र देखा। विशाल फेनिल तरंगें। जैसे सफेद फूल। एक मालामें गुंथकर भारत माताके गलेका हार बन चाहते हैं।

मैंने समुद्र देखा। जैसे विधाता जादूगर हों और उनकी बाजीगरका खेल। सोचने लगा—यह वह समुद्र है। जिसे देवताओं ने मंथनकर उसमेंसे निकाला था - अमृत, लक्ष्मी और उर्वशी। संसार को अपनी तरफ खींचनेवाली आकर्षक वस्तुयें। एक दिन वे थे, एक दिन आजके हैं। आज मनुष्यकी गलतियोंसे अमृतका एक बूंद नहीं दिखाई देता। उर्वशी यक्ष्मासे मर रही है। पुरुष उसकी सहायता तक नहीं करता।

आजके दुनियाकी स्त्री सूखकर कांटा होगयी है, या इतना ज्यादा मोटी होगयी है कि उसके आकर्षक रूपको पहचानना मुश्किल है। ... आदमी कहते हैं, उर्वशी सभ्य होगयी है, उसके जीवन वनमें शिकारी फूल खिल रहे हैं। उसे विलास रंगोंमें लिप्त देखकर मुग्ध रह जाना पड़ता है। लेकिन मैं कहता हूं—कहां गया उसका रूप लावण्य? किधर है उसका यौवन सौंदर्य? एक दिन वे थे, एक दिन आज, नारी विचित्र पहेली बन गई है।

और हम आज इस युगके सिर्फ स्त्री समाजपर ही क्यों दृष्टि ... पुरुषोंकी भी वैज्ञानिक दृष्टिसे नाप तौलकर डालें। आज नब्बे प्रतिशत पुरुषोंके शरीरमें जैसे घुन लग गया है। यदि उर्वशी यक्ष्माकी बीमारी से भोग रही है, तो कर्मयोगी कृष्णके चरण चिन्होंपर चलनेवाले पुरुष पेटकी बीमारी या अन्य घातक शिकायतोंसे तंग हैं। आज हम ... भी भूल गये—श्रीकृष्ण जैसे महा पुरुष अर्जुन-रथके सारथी थे—हमें ...

भी याद नहीं रहा—श्रीकृष्णने उंगलीपर गोवर्धन पहाड़ धारण किया था। वे काले सांपके सरपर नाचे थे। सब भूल गये—याद है सिर्फ श्रीकृष्ण गोपियोंके साथ प्रेम करते थे और कदंबके झूलेपर झूलते हुये वशीकरणकी बांसुरी बजाते थे। अफसोस! अशिक्षित्त काम पिपासा, क्षीण पुरुषत्व, जो कुमारी जीवनको माता बननेके लिये बाध्य न करे। आज इस अविचारको लेकर मातृ गौरवको ऊपर उठानेवाली स्त्रियां मृत्युके मार्गपर अग्रसर हो रही हैं।

वे सौंदर्य चाहती हैं, खूबसूरत बच्चोंको प्यार करती हैं। लेकिन माता बनाना उन्हें पसन्द नहीं। वे बच्चोंको रुपये कमानेकी कलामें तो होशियारकर देती हैं—लेकिन स्वास्थ्य रक्षा कैसे करनी चाहिये, यह न वे स्वयं जानती हैं, न बच्चोंको बता सकती हैं। इस तरह आज अधिकांश नारियोंकी यौवन—चेतना विलासमय जिन्दगीसे नष्ट हो रही है। पारवारिक जीवन भंग हो रहे हैं। अंधेरा हो, दरख्तोंकी छाया और कुछ छिपकर घूमने-फिरनेकी बहार,- यही बन रहा है—नारी-जीवनका प्रधान लक्ष्य। मनुष्यका सबल स्वास्थ्य जीवनकी श्रेष्ठ कविता है—आज इसे भी हम स्वीकार करनेको तैयार नहीं हैं।

रास्तों और बाजारोंमें घूमिये। दुकानदारोंमें कितने ही ऐसे महात्माओं! के दर्शन होंगे, जिनके बदनमें कोढ़ होता है। उनकी चीजोंमें बीमारियोंके कीड़े भरे रहते हैं। यदि आप उनकी चीजें खरीदते हैं—तो इसका यह मतलब हुआ—आप अपने परिवारमें बीमारियां बांट रहे हैं। भिखारियोंसे दूर रहिये—कारण, उनकी गंदगीके कीड़े आपका स्वास्थ्य जरूर नष्टकर देंगे।

चाय आप पीते हैं न? चायकी दुकानोंमें ऐसे ऐसे चायके सिपाह हैं, जो किसी न किसी बीमारीके शिकार हैं। यौन-व्याधियोंसे पीड़ित तो अनेकों हैं। सर्व साधारण होटलोंकी जिन प्यालियोंमें आप चाय पीते हैं, उनमें बीमारियोंके कीड़े रहते हैं। जो इतने छोटे होते हैं, कि आप उनको

पता तक नहीं पा सकते। आपको तो चाय पीनेसे मतलब। स्वास्थ्य जहन्नममें जाय। आपने किसी मैले होटलमें चाय पी। बीमारीके कीड़े लेकर घर लौटे। जिन्हें आपने अपने स्त्री-बच्चोंमें फैला दिया। कैसा आश्चर्य!

एक दिनकी घटना देखकर तो मैं दंग रह गया। कुत्तेकी लाश सड़ककी नाली पर पड़ी थी। उससे चार पाँच हाथ दूर खोमचेवाला कटे फल,—जैसे अनारस, केला, पपीता वगैरः बेच रहा था। सड़ी लाशकी बदबूसे दिमाग फटा जा रहा था—दो घंटे बाद मैंने लौटकर देखा—कुत्तेकी लाश ज्योंकी त्यों पड़ी है, खोमचेवालेके फल आधेसे ज्यादा बिक गये हैं। सड़कपर चलनेवालोंकी इतनी ज्यादा भीड़ है कि कोई किसीकी तरफ नहीं देखता—सब अपनी धुनमें मस्त चले जा रहे हैं।

आपके स्वास्थ्यपर इसका क्या प्रभाव पड़ा?—किसी सुयोग्य डा० से पूछ देखिये।

इंसानका स्वास्थ्यहै—अच्छे दिमागका श्रेष्ठ खजाना। शक्ति संचय और आनंदका प्रधान सहायक। जब सम्पूर्ण शरीरमें ताजा खून दौड़ता है, कार्य—शक्ति बढ़ती है। चेहरा सुन्दर और फ्रेश मालूम पड़ता है।

प्रातःकाल और संध्याकी शुद्धवायु अत्यंत लाभदायक होती है। बदन में तेलकी मालिश भोजनकी पुष्टिसे दसगुना फायदेमंद है। सप्ताहमें एकबारका उपवास शारीरिक मशीनोंको विश्राम देता है, जिससे आगे कदम बढ़ानेमें फुर्ती बढ़ती है।

उपवासका अद्भुत असर मैंने महात्मा गांधीमें देखा। एकबार 'विशाल भारत' के संपादक पं० बनारसी दास चतुर्वेदीके साथ मैं पूज्य महात्माजीसे मिलने गया। हम हिन्दी साहित्य सेवियोंकी सभा थी और हमें उसमें महात्माजीको सभापति बनाना था। उस समय बंगाल नेता श्री देशबन्धु दास जीवित थे। हमलोग उन्हींके मकान भवानी

पुरमें जा जमे। महात्माजीने अपने मनोविनोदसे हमें खूब हँसानेके पश्चात् सभापति होना स्वीकार कर लिया। सभाके दिन पंडालमें महात्माजी पैदल ही चल रहे थे। भीड़ बहुत ज्यादा थी। लोग एक दूसरे पर पिले पड़ते थे। महात्माजीको तकलीफोंकी रक्षाके लिये हमने कतारें बांधकर रास्ता निकाला। मैंने देखा महात्माजीमें चलनेकी अद्भुत फुर्ती है। वह बड़ी जल्दी जल्दी चल रहे थे और उनके चलनेकी फुर्तीने मुझे आश्चर्यमें डाल दिया। पूछनेपर मालूम हुआ—यह उपवासका असर है और इससे शारीरिक कार्य-शक्ति बहुत बढ़ती है।

मैं आपके शहरकी सड़कोंके बारेमें कहता हूँ। हमारी सड़कें फूलोंके बिछौने नहीं। यहां ट्रामें दौड़ती हैं। बस, मोटर, रिक्शे और घोड़ागाड़ियोंकी ठेलमठेल है। कितनेही आदमी मोटरोंपर सैर करते हैं। कितने ही कुचलकर मर भी जाते हैं। पास ही विवाहकी बारात निकलती है—पड़ोससे मुर्दा जाता है। ऐसी रहस्यमयी सड़कोंपर लोगोंका ध्यान बहुत ही कम जाता है। इसलिये स्वास्थ्य रक्षाके नाम पर मैं आपसे कुछ कहूंगा।

अपने शहरमें यातायात और राहगीरोंकी बेहद भीड़ रहती है। यहांके खोमचेवाले कितने उदार हैं, जरा ध्यान दीजियेगा। धूप तेज है, राहगीर थके हैं। खोमचेमें लुभावने कटे फल सजे हैं। भूखे राहगीरोंने लालच वश उन्हें खरीदकर खाया। किन्तु इन खाद्यमें कितना अमृत रहता है, कितना जहर। क्या आपने कभी इसका ख्याल किया है? सड़कों पर असंख्य आदमी चलते हैं-- खोमचेवालेके आस पास किसीने थूक दिया। कोई मोटर आई और बहुतसा पेट्रोलका धुआं उड़ाते आगे बढ़ गई। गर्द भी तमाम उड़ी, जो कटे फलों पर जा गिरी। वही फल आपने खरीदे और खाये। पर लौटे तो अपने साथ इनमें जहर लेकर। मैं कहता हूं—जैसे ईश्वर सर्वत्र है—मौत भी वैसेही आपके आस पास चक्कर काट रही है। जरा देखभाल कर बाजारकी चीज खाइये। और

स्वास्थ्यमें खराबी पैदा करनेवाली वस्तुओंसे परहेज रखिये। आज स्वास्थ्यकी खराबीके ही कारण हम भारतवासियोंकी आयु सिर्फ २७ साल की रह गयी है। जहाँ अच्छे स्वास्थ्यके कारण आस्ट्रेलियाके लोग ६० वर्ष, इंगलैंड और जर्मनीमें ६३ तथा जापानमें ४७ वर्ष तक जीते हैं।

भारतवर्षमें हैजा, प्लेग, मैलेरिया तथा शीतलाकी बीमारीसे लोग जल्दी जल्दी मर जाते हैं। यह क्यों ? स्वास्थ्य रक्षाकी तरफ लोगोंका ध्यान बहुत ही कम जाता है और लोग दीर्घ जीवन पानेमें लाचार हो जाते हैं। भला बताइये तो लम्बे अर्से तक जीना किसे पसन्द नहीं ? वृद्ध दादाभाई नवरोजीका नाम तो आपने अवश्य सुना होगा। वह हमारे प्रिय भारतके एक प्रधान नेता थे। उनकी छीयासठवीं वर्ष गाँठके दिन एक आदमीने पूछा—"इतनी उम्र पाकर भी आप किन नियमोंके कारण इतने हृष्ट पुष्ट हैं ?" —दादाभाईने कहा—"मैंने, अभी तक किसी नशीली वस्तुका सेवन नहीं किया। मांस तो कभी हाथसे छुआ तक भी नहीं। न कभी तम्बाखू खायी, न पी, न सूंघी। बासी भोजनसे मैं परहेज करता हूं। अधिक मिर्च या चरफरारा खाना नहीं खाता। अपने तथा दूसरोंके काम हमेशा मिहनतसे किये हैं।" क्या इन नियमोंका पालन आपको दीर्घजीवन नहीं दान कर सकता ? जरा स्वास्थ्य रक्षाके नामपर इनका प्रयोग कर देखिये तो सही।

प्रत्येक मनुष्यमें त्रुटियां हैं। यदि आप उनका संशोधन करते चलें तो आपका बड़ा उपकार हो। आपकी जिन्दगीमें जो घुन लगा है, गलतियोंका संशोधन उन घुनोंको तहस नहस कर देगा। अपना नया इतिहास बनाइये। सच तो यों है—आपके अंदर एक नये ढंगका जोश, नयी चिन्ता और नया आदर्श चाहिये। विचार कीजिये और खूब विचार कीजिये। हम सब परिवर्तनकी दुनियामें जिन्दगी बसर कर रहे हैं। जहां जीवनमें नित्य संघर्ष होता है, घात प्रतिघात होते हैं और आनन्दोंके रंग बिरंगे फूल खिलते हैं। कभी हम खुशीसे मुस्कुरा देते

हैं—कभी दुख दर्दसे कराहने लगते हैं। किस लिये ? आजकी दुनिया का आदमी हँसी खुशी चाहता है। उसे पतझड़ पसंद नहीं, वह वसंतकी बहारोंमें झूमना चाहता है। क्या आप अच्छा स्वास्थ्य लेकर यह जीवन-विज्ञान अपने मित्रोंको सिखलायेंगे ? भटकती हुई आँखें खोलकर चलना अपराध नहीं, मनुष्यता है।

एकने नहीं, मेरे कितने ही मित्रोंने कहा है—आजकल अधिकांश स्त्री-पुरुषोंकी हालत शोचनीय है। वे मनोरंजनके नामपर जिन्दगीको गिरानेवाली फिल्में देख रहे हैं। भद्दी, अश्लील और बाजारू पुस्तकें खरीद रहे हैं। रहस्य रोमांचोंकी ओर दौड़ रहे हैं। वीर्य रक्षा नकर वीर्यको पानीकी तरह बहा रहे हैं। और उस दुनियामें चल रहे हैं—जो गलतियोंसे भरी है। क्या आप सदगुणोंको लेकर अवगुणोंका त्याग नहीं कर सकते ?

विशाल है कर्मक्षेत्र। जिन्दगी है थोड़ी। कमजोरकी मृत्यु है, वीर जीतता है। क्या आपकी यह धारणा सब बीमारियोंकी रामबाण दवा नहीं है ? मैं कहता हूं—आपका स्वास्थ्य अच्छा है। आपकी आत्मिक शक्तियां जाग रही हैं और नवीन व्यवस्थाओंके लिये आपके कदम उठ रहे हैं।

हां, देखिये—एक बात मैं आपसे जरूर कहूंगा। आपको जब फुरसत मिले, आप सैर सपाटे को कहीं जायँ ? तो 'काम' जैसा शब्द एकदम भूल जाय। यह भी भूल जायं—हमें किसीको कुछ लेना-देना है। स्वच्छन्दता पूर्वक बाग-बागीचोंकी सैर कीजिये और यह समझ लीजिये कि अब हमें कोई काम नहीं, हमारे सब कार्य समाप्त हो चुके हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा होनेके लिये बाध्य है। मनमें नये विचार प्रवेश होने दीजिये—नयी चीजें पहनिये और खरीदिये—मैं कहता हूं—आप खुशीसे मुस्करा देंगे। आपकी आंखोंके आंसू मोती जैसे सुन्दर बन जायेंगे।

"मैं यह कामकर डालूंगा"—आपकी आत्मामें ऐसा विश्वास होना चाहिये। शक्ति संचालन और शांति—स्वास्थ्यको सुंदर बनानेकी सुनहरी सीढ़ियां हैं, जो आपकी आंखोंको नया प्रकाश देंगी और जीवन के अंधकारमय कोनेको ढूंढ़ निकालेंगी।

आपके अर्द्ध मृतक जीवनमें रोशनी भी है, अन्धकार भी। कितने ही लोग यह भी नहीं जानते—मैं क्या चाहता हूं? एक मित्रने कहा--"मैं धन चाहता हूं।" लेकिन जब मैंने धन प्राप्त करनेके तरीके पूछे—तो वह सिटपिटा गया और कुछ न बता सका।"

एक महिला बोली—"मैं संसारमें अपना नाम अमर कर जाना चाहती हूं।"—जब मैंने पूछा—"कैसे ?,,—तो चुप रह गयी। मैंने उसे कभी समाचार पत्र पढ़ते नहीं देखा। पुस्तकोंसे उसकी खास दिलचस्पी नहीं है। अभिनय कला उसे पसन्द है। लेकिन सर्वसाधारण से परिचित होना नहीं चाहतीं। क्या उसका नाम अमर होगा?

एक मजदूरने कहा—"रात दिन परिश्रम करके किसी तरह सूखी रोटियां खा लेता हूं। लेकिन संतोष नहीं। मुझे इतने रुपये चाहिये कि मैं आरामसे जिन्दगी बसर कर सकूं।"—तीन वर्ष बाद वही मजदूर फिर मिला और कहने लगा--"मैंने कपड़ेकी दूकान खोली है। फिर भी बहुत तंग हूं। यदि अच्छी आमदनी होने लगे—तो सब दुःख दूर हो जायं। कुछ अर्से बाद वह अच्छा सौदागर बन बैठा। फिर भी उसकी धनकी प्यास न मिटी और लखपति होनेपर वह बिल्कुल कंजूस बन गया। दिमाग भी उसका सिकुड़ कर छोटा सा रह गया। और एक दिन मैंने उनसे पूछा—"आपने शिक्षा कहां तक प्राप्त की है?" तब हुजूर मुस्कुरा कर बोले—"मैं सिर्फ अंगूठेका निशान लगाना जानता हूं।"

मनकी तरंगे समुद्र जैसी विशाल और गंभीर हैं। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता— कब और किस उम्रमें पुरुष या स्त्रीकी इच्छा पूर्ण होती है। हां, जीवनमें यह स्वर्ग किरण एकबार चमकती; जरूर है।

और खूब चमक उठती है। जैसे अलेकजेण्डर ड्यूमाका पहला उपन्यास उनकी बाइस वर्षकी ही उम्रमें सफल हो गया। और मिल्टनका महाकाव्य "पैराडाइज लाष्ट" उनकी ४१ वीं वर्ष की उम्रमें संसार-प्रसिद्ध हो सका।

स्वास्थ्यका मनके साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। जिसका शरीर स्वस्थ नहीं, उसका मन एकाग्र न होकर बराबर घूमता है। जैसे अभी घरमें है तो फौरन दिल्ली या अमरीका चला गया। फिर गृहस्थीके झंझटोंमें फंसा ; फिर राजनीति,—समाजवाद या कम्युनिज्म की चर्चा करने बैठ गया। यह अस्वस्थ्य जीवनकी बीमारी है, जो कभी सफल नहीं हो सकती। कमजोरी बढ़ती है और काम-वासनाकी प्यास मनमें जल्द जागृत होती है। इस काम वासनाका रूप क्या है? यह वासना पहले आंखोंसे आरम्भ होती है। कमजोर स्त्री पुरुषोंकी आंखें एक दूसरेसे लड़ीं और दोनों तरफसे बेचैनी पैदा हो गयी। यह बेचैनी आंखों के बाद रूप सौंदर्यकी उपासना करने लगती है। और दोनों नित्य नये फैशनके पुजारी बनने लगते हैं। जिसमें एक दूसरेको देखकर रीझे। एकका दूसरेके प्रति आकर्षण बढ़े। ऐसेही अनेकों उपाय काममें लाये जाने लगते हैं। यहां जो मिलनमें सफलता मिली, वह चारित्रिक पतनके मार्गपर चलकर आयुको क्षीण करने लगी। यदि दोनों न मिले तो उसमें विकार आगया। एक दूसरेके दुश्मन बन बैठे। जैसे अर्जुनने उर्वशीके प्रेमको ठुकरा दिया तो उर्वशी अर्जुनको नपुंसक कहने लगी। क्या यह स्वास्थ्य और प्रेम है? नहीं, इसे मोहका उन्माद कहना चाहिये। और यह उन्माद तब रफा होता है, जब स्वास्थ्य अच्छा होता है। सड़े गले विचार और गत बातोंका पश्चाताप नव जवानको भी बूढ़ा बना देता है और मानसिक उन्नतिकी सनसनी अस्सी वर्षके वृद्धमें भी नवजवानी का रोब पैदा कर देती है।

स्नानको लीजिये। दैनिक स्नान स्वास्थ्यको ताजी फुर्ती देता है

लेकिन जो लोग दैनिक स्नान नहीं करते, उनका जीवन तो मनहूस हो ही जाता है। मनमें भी मूर्खताके कीड़े पैदा हो जाते हैं। इस तरह की मूर्खता कभी अपने पास न आने दें। जहां स्वास्थ्य है, वहां आनंद है। जहां आनन्द है, वहां सौंदर्य है। संसार मात्र सौन्दर्यका उपासक है। उसकी यह उपासना प्रत्येक आत्माकी अमरवाणी है। लेकिन यह सौंदर्य-प्रकाश बनावटी फैशनके शृङ्गारसे किसीको आकर्षित नहीं कर सकता। जो प्राकृतिक गुणोंसे सुन्दर है, स्वाभाविक है—आत्माका प्रकाश उसी मंदिरके परमेश्वरकी पूजा करता है।

आपके आस पास यदि कोई पुस्तकालय है तो उसके सदस्य जरूर बन जाइये। जो पुस्तकें पढ़िये उसमें फायदेमें आनेवाली चीजोंका प्रयोग करते जाइये। आप जब थके हों, आराम करने लगें, या किसी कष्टमें हों—पुस्तकें जरूर पढ़िये। आपकी पुस्तकें जादूघर हैं और अपनी जीवन संगिनीके पश्चात सर्वश्रेष्ठ सेविका।

याद रखिये, पुरुष नेतृत्व करता है, स्त्री पथ-प्रदर्शन। पुरुषकी त्रुटियां शक्तिकी त्रुटियां हैं, स्त्रीकी त्रुटियां निर्वलताकी त्रुटियां हैं। पुरुष का स्वास्थ्य तीक्ष्ण होता है, स्त्रीका द्रुतगामी। पुरुष चुनाव और प्रस्ताव करता है, स्त्री प्रोत्साहन देती है। पुरुष कुटुंबका मुखिया है, और स्त्री परिवारका हृदय।

स्त्रीके जवान रहनेके क्या तरीके हैं? मनकी पुस्तकमें लिखते जाइये—

(१) जमाना कैसा गुजरा? आपने इसी उम्रमें कितने दुख सहे, कितने सुख—इस बात पर ध्यान न दीजिये—सिर्फ वर्तमान गति और भविष्य-उन्नतिकी राहपर चलिये।

(२) अपने जीवनको दिलचस्प और मनोरंजक बनाना आपका प्रधान कर्त्तव्य होना चाहिये।

(३) विचार हमेशा ऊँचे रखिये, गिराइये नहीं।

(४) अपनेको, परिवारको, और अपने देशको सुखी बनानेकी वे आदतें डालिये—जिन्हें आप रोजाना कर सकें। यह नहीं कि दिन भर पलंगपर लेटी हुई उपन्यास या कहानियां पढ़कर समय बर्बाद कर दें। आपका प्रत्येक दिन परिश्रम और सौन्दर्यमयी दिनचर्यासे पूर्ण होना चाहिये।

(५) ज्यों ज्यों आपकी मानसिक शक्ति बढ़ती जायगी, त्यों त्यों आपको नयी रोशनीके दर्शन होते जायंगे।

(६) अपने आसपास की सखी सहेलियों और अन्य स्त्रियोंसे परिचय प्राप्त कीजिये। और तरक्कीके वे नियम बनाइये, जिन्हें आप और आपकी सखियां कार्य रूपमें परिणत कर सकें।

(७) भोजन पर हमेशा ध्यान रखिये। मनुष्य जो खाता है, उसके रूप सौंदर्यमें वैसी ही वृद्धि होती है। मनुष्य जो खाता है, उसी हिसाबसे उसका आध्यात्मिक पतन होता है।

(८) सड़ी और बासी चीजें खाना क्रमशः अपनेको मौतके मुखमें धकेल देना है। भोजन साफ जगह पर बैठकर कीजिये। उस स्थानका भोजन जहरीला है– जहां गंदगी रहती है और मक्खियां भनभनाया करती हैं।

(९) गर्मीके दिनों को छोड़कर अन्य ऋतुओंमें दिन को सोना अच्छेसे अच्छे स्वास्थ्यको नष्ट कर देता है।

(१०) मुख ढककर सोना मानसिक शक्तिके विकाशमें बाधा पहुंचाता है। हवादार कमरेमें रहना बुद्धिमानी और दूसरेके जूठे बर्तनोंमें खाना बेवकूफी है।

मनुष्य जो खाता है, उसी अनुसार उसमें बुद्धि पैदा होती है। शरीर बनता है, मन संचालित होता है। आजके अनेक स्त्री-पुरुष हिंसक और मांसाहारी हैं। यह सही है, मांस भक्षणसे कामोत्तेजना अधिक होती है, किन्तु इस उत्तेजनाका रूप क्षणिक होता है। इनके

प्रतिकूल जो लोग मांस नहीं खाते—उनकी उत्तेजना स्थायी होते है। यह सच है कि मांसाहारी मनुष्योंका जीवन-सुख और शान्तिमय नहीं होता। यही बात अन्य खाद्य पदार्थोंके लिये भी है। पुष्टिकर खाद्य सब तरहके रोगोंको दूर करता है। स्वास्थ्य सुन्दर बन जाता है और हमारे दैनिक जीवनमें आती है—सुख और शान्ति। यदि पति पत्नी दोनों एक साथ निकलकर इसके लिये पूर्ण प्रयत्न नहीं करते, अपने आचार-विचार शुद्ध नहीं रखते—तो यह सोचना गलत है- उनके जीवनमें कोई अनोखा चमत्कार फैल सकता है।

आज सौ में मुश्किलसे देसे पांच पुरुप मिलेंगे, जो अच्छे पति और अच्छे पिता कहलाने लायक हों। स्त्री-पुरुषके 'प्रेम' शब्दकी आज बहुतही वीभत्स रूपसे मिट्टी पलीद हो रही है। लोग कहते हैं, अमुकको प्रेमका रोग लग गया है। आश्चर्य !—'प्रेम' जैसे पवित्र शब्दकी कैसी भयानक छीछालेदर हो रही है। जिसे देखिये, वही लैला-मजनू बना घूमता है। 'प्रेम' का यह वीभत्स रोग प्रायः उन कमजोर स्त्री पुरुषोंको लगता है, जो या तो 'प्रेम' की वास्तविकताको समझते नहीं, या 'प्रेम' शब्दका अपमान करते हुये उसे घृणित वासनाका रूप दे चुके हैं। इसलिये जब कभी 'प्रेम' शब्दकी आवाज आपके कानोंमें आये—जरा उसपर गौर कीजियेगा। उसका अर्थ आपके चरित्रको गिरानेवाला है या उन्नत प्रकाश देकर आपको स्वर्गीय जीवनकी तरफ खींचे लिये जाता है।

आजके घृणित 'प्रेम' की व्याख्या वासना है—जो स्वाभ्यकी जन्मदायिनी नहीं, बल्कि एक तरहकी मानसिक बीमारी है। जिसका चढ़ाव-उतार ज्वारभाटेकी तरह होता है। कभी कम, कभी ज्यादा। वासनाकी यह बीमारी ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों मनुष्यकी स्मरणशक्ति कमजोर होती जाती है। विचारोंके पाँव भी टूटने लगते हैं। वासनाकी आदत अफीमके नशा जैसी प्राणघातक है। इसमें बुद्धि

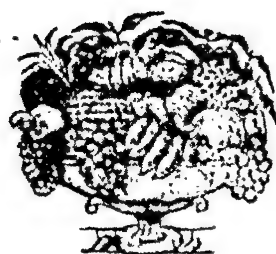
इस तरह नष्ट होती है कि आदमी बिजलीकी बैटरी जैसा बन जाता है। उत्साहशक्ति रह नहीं जाती, और वह अकसर आत्महत्या या मरजानेकी धुनमें रहता है।

यह क्या कारण है कि हम भारतवासियोंका स्वास्थ्य गत पचीस-तीस वर्षोंसे बहुत ज्यादा गिर गया है। इससे पहली पीढ़ीके लोग जितने हृष्ट-पुष्ट दिखाई देते थे, उतने आज क्यों नहीं—कारण साफ है। हमारे शारीरिक अत्याचार इतने ज्यादा बढ़ गये हैं, कि हममें बलवीर्यका अभाव होता जा रहा है। हमारी सन्तानें बेहद कमजोर हो रही हैं। हम तरह-तरहके रोगोंके हमलेसे बेचैन हैं। बुढ़ापेके लक्षण जवानीकी उम्रसे ही आने लगते हैं। प्रिय भारतवासियों, स्वास्थ्यवर्द्धनकी ओर चलो। और भारतीय-संघके जनकी माता श्रीमती अमृत कौरके इन शब्दोंको न भूलो—"कि भारतवर्षमें मैलेरिया और यक्ष्मा रोगसे अधिक आदमी बीमार होते और मरते हैं। हमें इसजहरको दूर करनेका उपाय निकालना चाहिये। शिशु रक्षाकी योजनायें कार्यरूपमें परिणत करना चाहिये।"

आज आपको साधारण आदमियोंकी दरिद्रता दूर करनी होगी। ग्रामों और नगरोंमें चिकित्साके साधन सुगम बनाने पड़ेंगे। मनुष्योंके पुष्टिकर भोजनका प्रबन्ध करना होगा, और जीवन पुस्तकमें यह बात लिख लेनी होगी—"वह दिन जरूर आयेंगे, जब भारतवर्षमें रोगी होना लज्जाजनक अपराध ठहरा दिया जायगा। हर आदमी कमसेकम सौ वर्ष जरूर जियेगा और लोगोंके मनसे रोगोंकी कलंक कालिमा धुल जायगी।"

किसीने कहा है—"खुशी, माधुर्य्य और नम्रता डाक्टरको घरका दरवाजा नहीं झांकने देते।"—मैं कहता हूं—आपमें जीवनके कोई बीमारी नहीं। आपकी हर मुस्कुराहट आपके जीवनमें [illegible] जगाती है।"

आपका शरीर ईश्वरका मन्दिर है, जिसमें आपके प्रभुका निवास है। मैं यह भी कहता हूं—"हर मनुष्य देवता है।"—सोचो, समझो और स्वस्थ्य-दिमागसे काम लो—जिसमें आपको यह न कहना पड़े—"मैंने हृदय-देवताको खो दिया है और अब मेरा जीवन-प्रदीप बुझनेमें देर नहीं है।"



माता

माता !—कितना मीठा और प्यारा शब्द है !

बड़प्पनमें दस शिक्षकों, एक आचार्य, सौ आचार्योंसे एक पिता और हजार पिताओंसे बढ़कर श्रद्धामयी एक माता है। हमारी माताकी गोदमें मोहकी मन्दाकिनी बह रही है, जिसकी धारामें संजीवनी है। हमारी माताकी गोदमें उन सुखोंका निवास है—जो स्वर्गीय सुखोंसे अधिक भाग्यवान हैं—आप चाहे किसीकी बेटी हों या किसीके पुत्र—संसारकी कोई भी सन्तान, माताकी आजन्म सेवा करके भी उसके ऋणसे मुक्त नहीं होती। माताकी ममतामें साधना है और है जीवनकी सफल सिद्धि।

आज हजारों लाखों नहीं, बल्कि करोड़ों स्त्रियां जीवित रहना चाहती हैं—लेकिन उन्हें जिन्दा रहनेके मौके कहां दिये जाते हैं ? जरा बताओ तो युद्धके कैदीके विचार ?—जो जेलके सींखचोंके अन्दर मजबूत तालेमें बन्द है और किस तरहके विद्रोहकी कल्पना कर रहा है ? स्त्रियां चहारदीवारियोंके अन्दर बन्द हैं। वे मुक्त होनेके लिये छटपटा रही हैं। उनकी आत्मायें विद्रोहिनी हो उठी हैं। जरा सोचिये, स्त्रियां मनुष्यकी निर्माता और जिन्दगीकी ढाल हैं। गृह-प्रतिष्ठा, व्यक्तित्व-विकाश और हमारे आसपास आनन्दका वातावरण पैदा करनेवाली, समुद्र जैसे गम्भीर शक्ति-शालिनी !

नारी जब महान पुरुषोंको जन्म देती है—संसार और राष्ट्रमें नारी रूपका दान सर्वश्रेष्ठ गिना जाता है। मातायें राष्ट्रकी जननी हैं और सम्पूर्ण माताओंकी जिन्दगी राष्ट्रकी वह ताकत है—जो दैत्योंके बड़े बड़े समूहको भी अपने सामने नहीं टिकने देती। संसारमें

नारीने माताकी पदवी प्राप्त कर अपने गौरवको चमकाया है। इस न सोचिये—"हमारा समय खराब है।" बल्कि यह सोचिये—हम खराब समयको कैसे अच्छा बना सकती हैं?"—यह भी सोचिये "आजका प्रातःकाल मुझे उन्नतिकी सीढ़ियों पर चढ़ा रहा है।"

बादलोंमें सूर्य्यकी रोशनी छिपी है और वह रोशनी है आत्मा मन। उस मनकी एकाग्र-शक्तिसे आप जो काम करेंगी—उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपके मनका विश्वास यदि दृढ़ होगा तो सफलता आप पर फूल बरसायेगी। अपना प्रत्येक दिन देखिये और उसकी समालोचना कीजिये—मैं कहांतक सफल हूं और मेरी सफलताका रहस्य क्या है?

रामायण कालमें स्त्रियां घरके अन्दर बन्द न थीं। पुरुष उन्हें आदर और पवित्र निगाहोंसे देखते थे। लेकिन महाभारत कालसे नारी जातिका पतन आरम्भ हो गया। पुरुषकी निगाह गिरी और बदली। द्रौपदीको भरी सभामें बुलाकर नग्न करनेकी चेष्टा की जिसकी हंसी और कलंकका रूप सारे भारतवर्षमें छा गया और हम स्त्रीको अपनी काम पिपासाकी मोहिनी मूर्ति समझने लगे।

लेकिन मैं तो कहूंगा—ऐसे राष्ट्रमें आग लगा देना चाहिये जो नारीका सन्मान करना नहीं जानता। ऐसी जातिके मानसिक कांटोंको कुचल-कुचलकर मार देना चाहिये -जो सामाजिक जीवनमें कांटोंकी तरह फैले हैं—और नारीको फूलने-फलनेका सुअवसर नहीं देते। यदि आप अपनी आदरणीया पत्नी बहन या माताका सन्मान करना नहीं जानते तो आपको इस पृथ्वीपर रहनेका कोई अधिकार नहीं है और नारी जीवन भी उस समय व्यर्थ है, यदि वह पतिका आदर करना नहीं जानती—अपने पुत्रोंको जीवन-नौका पार लगानेके मार्ग नहीं बताती।

नारी और पुरुषके सहयोगसे सभी तरहके कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

चाहे यह सत्य दुर्बल-व्यक्ति स्वीकार न करें—लेकिन कल सूर्योदय होगा और उन्हें मेरी बात माननी पड़ेगी। विश्व पूज्य महात्मा गांधी अक्सर कहा करते थे—"मैं केवल मर्द ही नहीं, औरत भी हूं। मेरा आधा भाग स्त्रीका, व आधा भाग पुरुषका है। और इसलिये मैं औरत तथा मर्द दोनोंका प्रतिनिधि हूं।"—पढ़ा आपने? देखा भी होगा आपने। इसीलिये स्त्रियोंके प्रति महात्माजीका विशेष आकर्षण था और स्त्रियां हजारोंकी तादादमें उनके इर्द-गिर्द दिखाई देती थीं।

मैं माताकी बात कहता हूं। माता न दिन देखती है, न रात। वह बड़ी से बड़ी तकलीफें झेलकर भी बच्चेके जीवन-निर्माणमें अत्यन्त व्यस्त रहती है। जवान बच्चोंका काम है, वह सीखें - माता-पिताके प्रति हमारा कर्त्तव्य क्या है। उनके बुढ़ापेके समय हमें किस तरह उनकी सेवाओंपर ध्यान देना चाहिये? कैसे उनके दुख-सुखमें हाथ बंटाना चाहिये? गृह-निर्माणके प्रति हमारी योजनायें क्या हों? भाई-बहनोंको शिक्षाके मैदानमें कैसे आगे बढ़ाना चाहिये। साथ ही वह जनताके हार्दिक भावोंको भी समझें और उन्हें आगे बढ़ाते हुये—स्वयं आगे बढ़नेकी कोशिश करें।

यह क्या बात है, कि श्रीमती सरोजनी नायडू यू० पी० की गवर्नर बना दी गयीं? सुभद्रा कुमारी चौहानकी कविताओंने नवयुवकोंमें हलचल पैदा कर दी। जरा आप अपनी तरफ देखिये और सोचिये—हमारे जीवन-निर्माणके क्या कायदे हैं? क्या करनेसे हममें नया जीवन आ सकता है? अपने रहस्य ढूंढ़िये, उनकी जांच-पड़ताल कीजिये। शिक्षा अनुभव और मानसिक-शक्तियां आपकी जिन्दगीको खुशबुओं से भर देंगी। केवल कोरी कल्पनाओंसे कुछ नहीं होगा। कल्पनायें कीजिये और उनका व्यवहार कीजिये। आपमें विलक्षण स्फूर्ति पैदा होगी और आपको भविष्यमें प्राप्त होगा—यश, धन, सम्मान और जय।

समझदार बच्चेको मारना-पीटना या उसपर अत्याचार करना माता-पिताकी मूर्खता है। बच्चोंके जीवनका निर्माण प्रेम, सहानुभूति और सहयोगके साथ होना चाहिये। यदि ऐसा नहीं होता और माता-पिता के साथ बच्चेका हमेशा संग्राम चलता रहता है, तो यह ठीक है, वह एक न एक दिन विद्रोही हो उठता है और उसे संभालना या सही रास्ते पर लाना टेढ़ी खीर हो जाता है।

अधिक प्रतिभावाले और चैतन्य बालक रातकी भयानकताओं के अंधकार, बिजलीकी कड़क और भूत-प्रेतके मिथ्या भयसे डर जाते हैं। इनसे उन्हें निर्भीक बननेके उपाय बताने चाहिये और चिड़िया घरके छोटे-बड़े जानवरोंको दिखाना चाहिये तथा उन्हें यह भी बताना चाहिये कि तुम्हारे माता-पिता और दूसरे बड़े लोग तो इन कल्पित दृश्योंसे कभी नहीं डरे। तुम्हारा डर तुम्हारी कमजोरी है और इस कमजोरीसे तुम्हें निरंतर बचना चाहिये।

आज किसी भी माता, गृह-लक्ष्मी और कन्याको यह सीखना चाहिये कि मीठी बोलीका असर क्या है और प्रभावशाली व्याख्यान देनेकी कला क्या हैं? बड़ी से बड़ी भीड़को कैसे कंट्रोल किया जा सकता है और विरोधी दलको कैसे अपने पक्षमें मिलाया जा सकता है। आज आपका व्याख्यान सुननेके लिये जनताके पास रेडियो है। आपके प्रत्येक शब्दमें असर करनेवाला जादू चाहिये। वैसा जादू आदमीके मनपर क्या प्रभाव डालता है—इसकी एक दिलचस्प कहानी सुनिये—

एक नवाब साहब तालाबमें मछलियोंका शिकार कर रहे थे। आप मछलियां मारनेमें इस कदर तल्लीन थे कि संसारमें कहां क्या हो रहा है, इसका उन्हें ध्यान न था। एक मनचले शायर उनके पास पहुंचे और बोले—"जनाब, मछलियां मारना छोड़िये और मेरी तरफ देखिये। मैं आज आपको वह शायरी सुनाऊंगा कि आप फड़क उठेंगे।"

नवाब साहब बराबर मछलियोंका शिकार करते रहे। उन्होंने शायरसे फरमाया—"आप पहले कविता तो पढ़िये। यदि आपकी कवितामें कोई चमत्कार होगा तो मैं खुद आपकी तरफ खिंच जाऊंगा।"

सो यह है शब्दोंका जादू। नवाब साहबकी बातोंका असर। आपके शब्दोंमें कुछ वैसा ही जादू चाहिये—कि सुननेवाले आपके भक्त बन जायं और आपके व्याख्यान सुननेके लिये दौड़ पड़े। जनताकी आवाज आपको सबसे पहले सुनना चाहिये—वह क्या चाहती है? उसकी मांग सही है या गलत। जनताकी आवाजोंकी पूर्ति किसी भी जिन्दगीको आनन्दका मंदिर बना देती है।

संसारके बड़ेसे बड़े कर्मयोगी, योद्धा विद्वान और सुकवियोंको लीजिये। उन्होंने मुक्तकण्ठसे नारीको स्फूर्ति दायिनीके रूपमें स्वीकार किया है। विश्व विजयी नेपोलियन सदा अपनी माताका गुणगान करता रहा। तुलसीदासकी राम-भक्ति प्रेरिका उनकी पत्नी थी। और रामकी लंकाकी विजय कामना सीताजीके ही कारण हुई थी।

यों ही मनमें झूठी कल्पनाओंकी अटकलें लगाना दृढ़ संकल्पके फैसलेको तोड़ना है। यदि अस्सी वर्षकी उम्रमें किसी अपढ़ने इरादा कर लिया कि मैं पढ़ूंगा—तो उसकी यह कह कर हंसी उड़ाना अपराध है कि बुड्ढा तोता कहीं रामनाम जपता है? उसकी नवीन शिक्षा ज्योति उसके भविष्य परिवारको दर्शनीय बना देती है।

आप माता हैं और माताका जीवन नवीन संसारमें प्रवेश करता है। वह एक नवीन दुनियाकी ओर देखती है और आनंदसे आश्चर्य चकित रह जाती है। जब आप अपने बेटेको देखें, आपका बेटा जवान हो और उसके मनमें कोई रोजगार करनेकी धुन हो तो उसे [illegible] आफिसका क्लर्क बनाना मूर्खता है। यदि बेटा [illegible] है तो उसे कपड़ेकी दूकानका बजाज बनाना अधिक पाप है। तो आप सब हो सकती हैं, जब बच्चेकी [illegible]

मनोकामनाकी पूर्तिमें लग जायँ। आज कितने ही नव जवानोंको उनकी मूर्खा मातायें आत्माके विरुद्ध उनसे कार्य करानेको वाध्य करती हैं; जिसका नतीजा यह होता है, बच्चा आगे नहीं बढ़ सकता और उसका दिमाग कुयेंका मेढ़क बन जाता है।

आप माता हैं और साहित्यिक क्षेत्रमें आपका आना बहुत ही आवश्यक है। आज संसारका कोई भी साहित्य स्त्रीके सहयोग बिना पूरा नहीं कहा जा सकता। क्यों पूरा नहीं कहा जा सकता—इसलिये कि स्त्रियोंकी अनुभूतिको मर्द सही रूपसे साहित्यमें नहीं व्यक्त कर सकते। सतीका चित्र तो कोई सती स्त्री ही सुन्दर ढंगसे खींच सकती है। माँका उल्लास लीजिये—माताका वात्सल्य देखिये--पुरुष-लेखक उसका सही सही वर्णन न कर पायगा और उसके विचार 'सेकेण्डहैण्ड'' जैसे जचेंगे। हां, यदि उन रहस्योंका उद्घाटन स्त्री करने लगे तो वे सत्य और सर्वसाधारणके लिये मङ्गलमय दिखाई देने लगेंगे। आजकी विदुषी कवियत्री महादेवी वर्माको लीजिये—उन्होंने साहित्यिक दुनियामें एक नये युगको जन्म दिया है। और भारतवासी उनके सत्यसे अच्छा प्रकाश पा रहे हैं। आज हमारी छिपी हुई प्रतिमायें आगे आयें, मातायें आगे बढ़ें और सोती हुई बुद्धियोंको जाग्रत कर निर्माण-युगकी सहायिका बनें। आपको यह समझ लेना चाहिये—देशकी आवहवासे, देशके जाग्रत समाज और देशकी शिक्षासे प्रत्येक स्त्रीके जीवनको बहुत बड़ा बल प्राप्त होता है।

क्या आप बता सकती हैं—इस एक वर्षके भीतर कितनी महिलाओंने साहित्यिक पुस्तकोंकी रचना की है? और क्या आप यह भी बता सकती हैं इस स्वाधीन भारतमें पिछड़ी हुई स्त्री जातिकी आज कैसी समालोचना हो रही है? भारतवर्षकी स्त्री एक दिन कुछ और थी और दुर्भाग्यसे आज कुछ और है। क्यों? जरा मेरी पुस्तकके पेज पढ़कर देखिये और साधारण जीवन पार कर दिव्य-जीवन लाभ करनेकी कोशिश कीजिये। अगर आपके जीवनमें कोई बुद्धिमानीकी बात है—

तो ठण्डे दिलसे अपनी इच्छा पर गहराईके साथ विचार करना और आपके मनमें यदि कोई खराब आदत है तो अपनी इच्छा-शक्तियोंको बिखेर देना और लापरवाहीसे कार्य करना। दर असल, चीज तो वही अच्छी है, जो हमारे खिलवाड़ और भ्रमको दूर कर हृदयसे अपना काम करनेके लिये बाध्य करे।

यह जिन्दगी आपकी है, जिसे परमात्माने स्वयं आपको दिया है। आप उसमें चांदनी जैसी लुभावनी रातें भी ला सकती हैं, नर्ककी घृणायें भी। आपका जीवन प्रदीप भी बन सकता है, काल रात्रिका घोर अंधकार भी। आप क्या चाहती हैं? सोचिये और आगे बढ़िये। आपकी इच्छित वस्तु आपके पास अवश्य आ जायगी। यह एक सच्ची इच्छाशक्ति है और इसका ज्ञान मुझे एक देहाती किसानसे प्राप्त हुआ।

प्रातःकाल पांच बजेका समय था। मैं खुली जगहमें टहलनेके लिये घरसे निकला। कितनी ही ऊबड़ खाबड़ जमीन पार करनेके बाद मैं एक खेतकी पगडण्डी पर चलने लगा। मैं बराबर चला जा रहा था। और खेतोंकी हरियालीके सिवा किसी तरफ मेरा ध्यान न था—मुझे एक किसान मिला जो खाली पिंजड़ा लिये था। उससे तीन चार सौ गजकी दूरी पर एक तीतर उसीकी तरफ दौड़ता आ रहा था। कौतूहल वश मैंने पूछा—"क्यों भाई? यह तीतर उड़कर भाग क्यों नहीं जाता है?"—उत्तर मिला—"पिंजड़ेसे इसको इतना ज्यादा प्रेम हो गया है कि मेरी तरफसे खुला छोड़ देनेपर भी यह बार बार पिंजड़ेके अंदर चला आता है।"

यह है इच्छा शक्तिकी आदतका नमूना। सोचिये [illegible] पे जीवन निर्माणका कानून आपके हृदयकी पुस्तकमें लिखा है। [illegible] शृङ्गार करती है स्त्री, पुरुषकी प्रतिभाका लावण्य निखार करती है [illegible] आदमी अपनी शक्तियोंको अपनेमें केन्द्रित कर सकता है [illegible] बनने पर दूसरे प्राणीको अपने उपकारों और [illegible]

ईश्वर और नारी

मेरी पुस्तक पढ़नेवालोंमें ऐसे नवयुवकोंकी संख्या कम न… ईश्वरको नहीं मानते। उनका कहना है—आपने ईश्वरको क्यों … किया ? आपकी पुस्तकोंमें जगह-जगह ईश्वरकी चर्चा क्यों है ? अस्ल ईश्वर नामकी कोई चिड़िया जमीन या आसमानमें नहीं है।

मेरा उत्तर है—"दूर जानेकी जरूरत नहीं, ईश्वर मनुष्यकी अ… में ही विराजमान है। उसकी रोशनी संसारके जर्रे-जर्रेमें चमक… है। सब संसारका ईश्वर एक है और संसारमें सब कहीं ईश्वर सम… यदि मैं ईश्वरको क्षणभरके लिये भी भूल जाऊँ और उससे अ… अलग समझने लगूं तो कदापि जीवित नहीं रह सकता।"

हमें बोलनेकी ताकत किसने दी ? और हम संसारमें क्यों … फिर रहे हैं ? फूलोंमें फल किसने लगाये और पहाड़ोंसे झरने … पैदा किये ? आप कहेंगे—यह सब प्रकृतिका जादू है और … मनुष्यको सर्वश्रेष्ठ बनाया है। मैं कहता हूं—यह सत्य है और … महासत्य है कि प्रकृतिकी संपूर्ण कलाओंका संचालन करनेवाला ईश्वर है। यदि ऐसा न होता तो रामचन्द्रको कल राजगद्दी मिलने… थी और वनवास क्यों मिला ? आदमी मर जाता है, लेकिन … जीवनका पता क्यों नहीं मिलता ? किसी विशेष दुर्घटनाके … हमारे मुंहसे यह क्यों निकल पड़ता है—"ईश्वरकी मर्जी ऐसी है"…

मैंने ईश्वरको न माननेवाले नास्तिकोंकी तरफ देखा। … कला विशारदोंसे भी बातें कीं, लेकिन किसी अदृश्य शक्ति… की बात सबको माननी ही पड़ी। एक न एक दिन सबको … पड़ता है और उस दिन तो लोग झखमारकर ईश्वरकी दोहाई दे… जब आदमी किसी विपत्तिका शिकार बन जाता है।

मैं एक ऐसी नदीके जहाज पर यात्रा कर रहा था, जिसका कोई ओर छोर न था। आधी रातका सन्नाटा; जहाज तेज रफ्तारसे चला जा रहा था। मैं केबिनके अंदर सोनेके इरादे में था। लेकिन आदमियोंकी भीड़ इतनी ज्यादा थी कि सोनेकी कौन कहे—टससे मस होनेका उपाय न था। एकाएक तूफान चलने लगा और उसकी रफ्तार इतनी जल्द भयानक और तेज हो गयी कि ऐसा जान पड़ने लगा, जैसे जहाज अब डूबा,—अब डूबा!—भीड़में हाहाकार मच गया और सबकी आँखोंमें सिवा ईश्वरके कोई दूसरा न दिखाई देने लगा। लोग तरह तरहकी प्रार्थनायें करनेमें बेहोश हो गये। मेरी भी यही हालत थी और ईश्वर!—ईश्वर!—करते दूसरे दिन हमारा जहाज डूबनेसे बच सका। ईश्वर दर्शनकी ऐसी कितनी ही दुर्घटनायें मनुष्यके जीवनमें आती हैं और तब वह ईश्वरका अस्तित्व स्वीकार करनेमें जरा भी नहीं हिचकता।

दुखमें सुमिरन सब करैं, सुखमें करैं न कोय।
सुखमें जो सुमिरन करैं, दुख काहेको होय।

आदमीकी आत्मा ईश्वर है और उसका शरीर मंदिर। लेकिन असली बात तो यह है, आज का मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि उसने अपनी जाति और देशके लायक ईश्वर बनाकर तैयार किये हैं। उनकी इच्छा ईश्वरको मंदिरों, मसजिदों और गिरिजा घरोंमें बंद करनेकी है। जो ब्रह्माण्डसे अधिक महान है और जिसके बिना कोई स्थान खाली नहीं।

स्वार्थी मनुष्य ईश्वर बना रहा है। और एक जातिको दूसरी जातिसे घृणा करनेके लिये नकली धर्मोंकी सृष्टि करनेमें तत्पर है। जैसे समस्त देवालय मनुष्यकी नकली बुद्धिके नमूने हैं। इन मंदिरोंमें शिवालय होते हैं, छत होती है। दीपक होता है और मूर्ति भी होती है। लेकिन क्या आप बता सकते हैं, किस मंदिरकी दीवारें समुद्र जैसी विशाल हैं? कलश आकाश जैसा और उस आकाशमें सूर्य, चन्द्र, तारे दीपक जैसे प्रकाशमान हैं?

मनुष्य मिट गया और अंतमें उसने यह निश्चय किया—ईश्वरकी कल्पनाको हम जितना बढ़ाते हैं—उतना ही उस ज्ञानके साथ दूध पानी की तरह मिलते जाते हैं तथा हम कल्याणमय, दयामय और प्रेममय होकर जीव मात्रसे स्नेह करने लगते हैं !

कहीं न कहीं पुरुष ईश्वरके लिये—दीवाना है, कहीं न कहीं नारी ईश्वरका रूप देखकर दंग है। लेकिन पुरुषसे ज्यादा नारीका आत्मार्पण ईश्वरके प्रति है। वह अपनी सांससे ज्यादा कीमत ईश्वरकी समझती है। इसीलिये देव मंदिरोंमें, तीर्थोंमें, पुरुषसे ज्यादा आपको नारी-रत्नोंकी भीड़ दिखाई देगी। लेकिन वह भीड़ वहां तक सार्थक है, जहां तक कि ईश्वरके प्रति उसकी पूर्ण श्रद्धा, पूर्ण विश्वास है। किन्तु जब विश्वास अंध-विश्वासके रूपमें पलटता गया, ईश्वरके नामपर पाखंड बढ़ गये। झूठ, ठगी, धूर्तता और बेवकूफीका जाल बिछाया जाने लगा। कुरीतियों और रूढ़ियोंकी दीवालें खड़ी की जाने लगीं। नारीका पतन हो गया और नारीके साथ-ही-साथ पुरुषकी भी मृत्यु हो गई।

आज इन्हीं ठग विद्याओंने, धूर्त हथकंडोंने, मनुष्यको जीते ही जी मार डाला है। हजारों अबला-जीवनोंको जिंदा भस्म किया है। मनुष्यके तेजस्वी जीवनको गुलाम बना डाला है। यही कारण है कि आज हमारा भारतीय जीवन इतने भागोंमें विभक्त है, जितना दुनियांमें कोई जाति नहीं।

एक दिनकी बात है, एक महात्माजी (!) मेरे घर पधारे। मैं नंगे बदन बैठा "अमर जीवन" नामक पुस्तककी रचना कर रहा था। आते ही पहले तो उन्होंने मेरा नाम पूछा। बादमें मुस्कुराकर बोले—"आपकी संस्थाका नाम 'विज्ञान-मंदिर' है। लेकिन यहां न तो मुझे कोई मंदिर दिखाई देता है, न साधुओंकी चहल-पहल। मैंने कहा—"महाराज! मैं तो हिन्दी-साहित्यका एक छोटा-सा विद्यार्थी हूं। आदमीका शरीर है मंदिर—इसीलिये मैंने अपनी संस्थाका नाम 'विज्ञान-मंदिर' रखा है—

और मुझे परमात्मा रूपी आत्मासे जो वरदान मिलता है, उसे पृथ्वी भर के मनुष्योंमें बांट देता हूं।"

महात्माजी! मुझे मूर्ख बनाते हुये कुछ चिढ़से गये। उन्होंने बहुतेरा अंध विश्वासका जाल फेंकनेकी कोशिशकी, मगर मैं उनकी युक्तियोंके फन्देमें न आ सका। वह चले गये और कई दिनों तक उनकी छाया मूर्त्ति मेरी आंखोंके सामने मुस्कुराती रही। सफाचट मूंछे, रेशमके लच्छे जैसे घुंघराले बाल, कानमें इत्रका फाया और बदनमें लहराता हुआ रेशमका गेरुआ कुरता!—खूब स्वाद लेकर मगही पान दांतोंके नीचे कुचल रहे थे।—बहुत दिनोंके बाद पता चला, आप देहातसे कोई लड़की उड़ा लाये हैं और भारतवर्षमें उनकी सैकड़ों चेलियां हैं, शिष्यायें हैं। जो गुरु महाराजकी सेवा करती हैं, उनके हाथ पैर दबाती हैं और ईश्वर तथा धर्मके नामपर महात्माजी (!) उनके साथ न मालूम क्या क्या करते हैं!

कितने शर्मकी बात है कि इस तरहके चंट और लुच्चे महात्मा तथा साधू नामधारी हरामखोर भारतवर्षमें जहां तहां आवारोंकी तरह घूमते फिरते हैं। हरामका माल चाभते हैं और गंवार पुरुष तथा मूर्खा स्त्रियोंको नर्ककी बातोंसे डराकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। मैं इस तरहके कितने ही धूर्त महन्तोंको जानता हूं—साधुओंको देखता हूं—और भारत सरकारसे जोरदार शब्दोंमें कहता हूं—इन जङ्गली वेषोंका शीघ्र अंत हो जाना चाहिये। पुरुष तो इनके हथकंडोंसे सावधान हो ही रहे हैं—मूर्खा स्त्रियां भी आंखें खोलें—और अन्धविश्वासके इन छल प्रपंचोंको पृथ्वीपर कायम न रहने दें। इस छोरसे उस छोर तक क्रान्तिकी आग लगायें—जिससे हमारे जीवन खरा सोना बनकर निकलें—और उनमें ऐसी चमक पैदा हो—जिसमें ईश्वरके विश्वासका सच्चा नूर चमक रहा हो।

भारतीय संस्कृतिका महान गौरव है- सर्वशक्तिमान ईश्वरकी आरा-

घना—उसकी पूजा, उसकी उपासना। इस तरहकी उपासनाका समय प्रातःकाल और संध्या होना चाहिये। लेकिन यदि आपको समय नहीं मिलता, आप अपने काममें अधिक व्यस्त हैं और आपका हृदय सत्-ज्योतिसे प्रकाशित हो रहा है—तो मैं कहूंगा—पूजा और प्रार्थना किसी भी समय की जा सकती है। गलियोंमें, सड़कोंपर, दूकानोंमें, स्कूल और कालेजोंमें। प्रार्थनाके लिये न कोई दिन है, न रात। उपासनाके लिये न कोई समय है, न सुविधाकी जरूरत!—मनुष्यके प्रार्थनाकी यह आदत जीवनको सुखी और दीर्घजीवी बनानेवाली है। जो आत्माके चारों तरफ फैली रहती है—वह ज्योति अहंकारको जला देती है—स्वार्थको चकनाचूर और विपत्तियोंको मार भगाती है।

चाहे स्त्री हो या पुरुष मनुष्यकी आत्मा उतना ही बड़ी है, जितना यह आकाश। बशर्ते कि उसमें मानसिक हाथ पैर फैलानेकी ताकत हो। मनुष्य खुश रहता हो, उसकी खुशी उसका खून बढ़ाती हो, उसके जीवनका निर्माण करती हो। ज्यों ज्यों जीवनका निर्माण होता जायगा, परिवर्तनकी अदृश्य लहरें उसमें अपने आप उठती जायंगी।

आंखें बन्द करलो और ध्यानसे मानसिक शक्तिकी बीमारियोंका इलाज करो। मन सदैव शीशेकी तरह स्वच्छ रहे। साफ बातें आपको और दूसरोंके मनपर अच्छा असर डालती हैं। इससे आपका व्यक्तित्व बढ़ता है और आप विकसित रूपसे आनन्दके आसपास घिर रहते हैं।

आनन्द!—हां, आपका आनन्द!—सौन्दर्य वृद्धिकी गुप्त साधना है। आदमी क्यों अपना घर छोड़कर बाग बगीचोंकी सैर करते हैं? जङ्गलों, पहाड़ों और रमणीक स्थानोंपर जाते हैं? जिससे सौन्दर्यके दर्शन हों और तबीयतके बोझ हल्के हों। हम [illegible] देखकर पागल हो जाते हैं, लेकिन अपने लिये आत्म-ज्योति कहां ढूंढते हैं? हम भावमयी कविता पढ़कर मुग्ध हो जाते हैं, लेकिन सुन्दर जीवनकी रचना कहां करते हैं? सौन्दर्यके प्रति आकर्षित होकर [illegible] [illegible]

पर सुन्दर सुन्दर तस्वीरें टांगते हैं—किन्तु कितने दुर्भाग्यकी बात है, हमारी दीवारोंमें लोना लग गया है—सुर्खी चूनेका पता नहीं—और सिर्फ दीवारोंपर ही क्यों,—हमारे मन भी तो हो गये हैं कंकाल। इन कंकालोंको चाहिये—वे सौन्दर्यकी दुनियामें रहनेकी कोशिश करें। जिन्दगी अवश्य सुन्दर होगी।

किसी भी स्त्री का सच्चा आभूषण उसका हृदय है। उसके सद्गुण और उसका चरित्र। सोने चांदी के गहने तो कदापि नहीं। यदि स्त्री का व्यक्तित्व उसकी शक्ति को बढ़ाता और उसका शृंगार करता है तो यह अच्छाई है। किंतु यदि वह असंतुष्ट होकर बदनाम रूप से घूमती है। एक विनोद को छोड़कर दूसरी दिलचस्पियों की ओर भागती है तो ऐसी कुलक्षणाओं, कर्कशाओं और बुद्धिहीना नारियों को न योग्य मातायें आदर दे सकती हैं, न पुरुष। मैं एक वृद्धा के आसुओं को टपकते देखता हूं और उसकी रोमांचकर कहानी आपके सामने पेश करता हूं—

वह वृद्धा!

हां, वह बुढ़िया,—जो आज एक बदबूदार कतवार खाने के आस-पास बैठकर पश्चाताप के आंसू बहा रही है- कहने लगी—"बेटा! मैं मर जाना चाहती हूं, लेकिन मौत भी मेरे पास आने से घृणा करती है। मैं बचपन में ही अपनी मां को छोड़कर दूर,—बहुत दूर देश में भाग गयी थी। हमेशा सोने चांदी के ढ़ेरों पर बैठी—रुपये भी खूब कमाये—लेकिन गुण्डे बदमाशों ने मेरा सब धन छीन लिया। मैं रास्ते में बैठ गयी। अधिक उम्र होने से भोजन के पैसे भी नहीं कमा सकती। मेरा अंतिम जीवन बहुत ही घृणित है और मैं स्वर्ग के सौंदर्य से गिरकर नर्क के दलदल में आ फंसी हूं।"

अधिक कहानी सुनने के बाद मैंने इस पुस्तक के पेजों में लिखा—यह लगातार पचास वर्षों तक कुकर्मों में डूबी रही। उसने लगभग

बारह सौ नव जवानों के चरित्र नष्ट किये—जिनमें पांच सौ युवक आवारा निकल गये! तीन सौ लड़के नशाखोरी और बुरी आदतोंके गुलाम बने तथा चार सौ युवकोंने चोरी और डकैतीके अपराधमें जेलकी हवा खाई। ओह!—हमारे राष्ट्रका,—हमारे भारतवर्षका, एक दुश्चरित्रा नारीके लिये कितना बड़ा नुकसान पहुँचा। जहां आज बारह सौ नवयुवकोंकी राहमें सुगन्धित फूल बिछ जाना चाहिये था- वहां कँटीले काँटे भर गये और जनताको महान कष्ट पहुंचा। इसीलिये कहता हूं—पशुता त्याग कर मनुष्यताकी ओर कदम बढ़ाओ आपका जीवन आध्यात्मिक शक्तियोंको सीखने, जगाने और दिमागको उन्नत बनानेका विराट स्कूल है। यदि आप आंखें खोलती हैं—हजारों लाखों स्त्री-पुरुषोंको आँखें खोलनेका ज्ञान देती हैं तो यह सत्य है, इससे आलसी-जीवन कर्म-पथकी ओर अग्रसर होते हैं, कायर साहसी और उत्साही बनते हैं।

संसारके सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ रामायण और गीताको पढ़ना कभी न भूलिये यह न सोचिये, यह धार्मिक ग्रंथ हैं और इनमें कोई तत्व नहीं। इन ग्रंथोंके एक एक शब्द समुद्रकी तरह गंभीर और आकाशकी तरह विराट हैं—जो आपको जाग्रत बनानेमें विशेष सहायक सिद्ध होंगे।

मैं कहता हूं—आपका जीवन अभिनय है। यह ऐसा होना चाहिये जिसमें अहङ्कार नहीं, स्वाभिमान हो। असत्य नहीं, सत्यकी ज्योतिमें जागृत हो। नास्तिकवादकी ओर नहीं, ईश्वर-दर्शनके मार्गमें आगे कदम बढ़ाने वाला हो।

आशा जीवन है, प्रसन्नता जागरण। सत्य प्रकाश है, असत्य अंध-कार। भविष्य किसे कहते हैं और किस तरहसे हमारे स्वाधीन जीवनका निर्माण होना चाहिये, आज मैं पृथ्वीके एक कोनेमें बैठकर यही लिख रहा हूं—और अगले पेजोंमें अधिकसे अधिक नई बातें बताऊंगा। पेज उलटिये—!

नागरिक-जीवन

नागरिक जीवन क्या है? नागरिक किसे कहते हैं? इसका उपयोग कैसे करना चाहिये? यहां हम इन्हीं प्रश्नोंका उत्तर देंगे।

आप चाहे स्त्री हों या पुरुष। शहर, देहात या भारतवर्षके किसी भी कोनेमें आपका निवास हो। आपका कर्तव्य है, आप अपनी दिलचस्पियोंको देखते हुये दूसरेकी दिलचस्पियोंकी तरफ सबसे पहले ध्यान दें। स्वर्णभूमि भारतमें जन्म लिया है आपने। यहांकी सभ्यता, जलवायु और आध्यात्मिक—शक्ति संसारके आकर्षणकी वस्तु है। यहां जैसा माधुर्य है, वैसा दूसरे देशोंमें नहीं। यहां जिस आंतरिक ज्योति का प्रभाव है, अन्यत्र उसके दर्शन नहीं होते।

आप नागरिक जीवन व्यतीत कर रही हैं और नागरिक जीवन पाकर संसारमें कोई भी व्यक्ति अकेला नहीं रह सकता। इसी लिये कुछ आदमियोंको लेकर वह संगठन करता है, नये समाजकी रचना करता है और जीवन यात्रामें आगे बढ़ता है। आज स्वाधीन भारतमें जीवन-परिवर्तनके इन्हीं फूलोंकी खुशबू बिखर रही है। आप सड़कों और गलियोंमें चलती हैं। लोग घूमनेके शौकीन और विश्वभ्रमणके प्रेमी हैं। इसलिये आवश्यकता है, बिखरे फूलोंके साथ एक मालामें गुंथ जाना। जो भारत माताके गलेकी जयमाला बने और अपनी मीठी सुगन्धसे हमारे दिल और दिमागको हमेशा ताजा बनाये रखे।

आपको जानना चाहिये, हमारा और आपका पारस्परिक सहयोग जीवनकी दीवारोंको मजबूत बनाता है और मङ्गल भावनाओंका प्रसार करता है। जिससे जीवन निर्माणके विद्यालय तथा आर्थिक उन्नतिके

अभेद्य किले तैयार हो जाते हैं और हम आपसी विरोधोंका अन्त कर आखीरमें वसुधैव कुटुम्बकम् का रूप धारण कर लेते हैं।

यह स्वाभाविक है, मनुष्यकी चिन्ता-शक्ति विचार और कर्म अलग अलग किस्मके हैं। जैसे डाक्टरको डाक्टरी पेशेमें व्यस्त रहना, कपड़े व्यापारीको वस्त्र-व्यवसायमें लगे रहना, ड्राइवरका मोटर संचालन और पत्रकारका अखबारी दुनियामें परिश्रम करना इत्यादि—लेकिन उनके अपने कार्योंकी इन विशालताओंके भिन्न-भिन्न रूप होते हुवे भी मनुष्यकी आंतरिक इच्छा एकमें मिल जानेके लिये हमेशा उत्सुक रहती है। ठीक वैसे ही, जैसे छोटी-बड़ी नदियां अलग-अलग बहकर अन्तमें एक ही विशाल सागरका रूप धारण कर लेती हैं।

इसीका नाम संगठन है और यह है—स्वाधीन जीवनको मानव-समाजका वरदान। अब आगे बढ़नेके लिये इसके नियम बनानेकी आवश्यकता है। कैसे इस बुनियादकी जड़ मजबूत की जाय, मनुष्यको किस तरहकी शिक्षाकी आवश्यकता है। वह स्वतन्त्र भारतमें कैसे नागरिक अधिकार प्राप्त कर सुखमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

हमारी गुलामीका जमाना बीत गया। अब हमको, आपको सबको, सिरसे पैर तक बदल जाना होगा। दीनोंको धन, दुःखियोंको बल, अशिक्षितोंको विद्या और भूखोंको भोजन देना होगा। दान देकर नहीं, उन्हें अच्छे-से-अच्छे कामों पर लगा कर। राणा प्रताप, शिवाजी और अर्जुन वीर थे—केवल उनके गुण गाकर ही नहीं, बल्कि उनके चरण चिह्नोंपर चलकर हमें अपनेको ऊपर उठाना होगा। भारतमें राम-राज्यके दृश्य खींच लाना होगा। याद रखिये, अब हम विदेशियों द्वारा शोषित प्रजा नहीं, स्वाधीन भारतवर्षके जिम्मेदार नागरिक हैं।

जरा सोचिये,—हम क्या थे, आज क्या हैं और भविष्यमें हमें क्या होना है? प्रबल इच्छाशक्ति आत्मविजयकी पूर्ति है। जिसमें स्वयं उसमें सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती। आज जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें

आदमीको साथी चाहिये। जैसे अलाहिदा कैदी घातक पीड़ाओंसे भरा रहता है, वैसे ही अकेला मनुष्य भी यदि वह संगठित नहीं, तो आनेवाली विपत्तियोंके चंगुलमें जकड़ा रहेगा।

प्रत्येक मनुष्य-जीवन संगठित होनेके इशारे करता है। आवश्यकताओंकी ओर इंगित करता है। यदि आप उसकी गति रुद्ध करना चाहते हैं, तो आपका प्रयत्न कुछ वैसा ही है, जो समुद्रकी तरंगोंको रोकता है और उसके प्रवाहको बांध लेनेकी अनाधिकार चेष्टा करता है। संगठित व्यक्तिका कर्तव्य है, वह सर्वसाधारणको पढ़ा लिखाकर तेजस्वी, यशस्वी और बलवान बनाये। सर्वसाधारणके स्वास्थ्य-रक्षाकी ओर ध्यान दे। इस महानतासे साहित्यिक और राजनैतिक उन्नतिके द्वार खुल जाते हैं। हमारे लिये यही तो समय है, जब हम स्वतन्त्र-भारतकी पवित्र भूमिमें सर्वप्रिय फूल फल उत्पन्न करें। हमारी मानवता ज्यों-ज्यों उन्नत होती जायगी, हम और आप भी आगे बढ़ते जायंगे।

जब आत्मा फूलकी तरह खिल उठती है, जीवनमें नयी खूबियां पैदा हो जाती हैं, आपकी बुद्धि अमर-कर्मोंका अमृत पी लेती है और आप समस्त पृथ्वीके मनुष्योंको अपना ही पिता, भाई और पुत्र समझने लगते हैं।

मैं कहता हूं, आप स्वयं खुश रहकर जिन्दा रहें और दूसरोंको जिन्दा रहनेके अच्छेसे अच्छे मौके दें। आपकी त्रुटियों, भूलों और गलतियोंका हर समय संशोधन होना चाहिये। आपकी संकुचित बुद्धि और विचार जब व्यापक हो जायंगे, तब आप संसार भरके आदमियोंको फायदे पहुंचाते रहेंगे, जिसका प्रभाव जनतापर पड़ेगा और जनता आपकी भक्त बन जायगी।

आदमी ज्यादा दुखी और मनहूस क्यों होता है ? इसलिये कि वह अपने जादूघर आत्माके विराट रूपको नहीं पहचानता और यह भी समझनेकी कोशिश नहीं करता, हम कहां गलती कर रहे हैं और हमारे

दुःखोंके कारण क्या हैं ? यदि वह अपने भूलोंमें परिवर्तन कर कठि-
नाइयोंको दूर करनेकी चेष्टा करता है तो इसके यह मायने हुए
उन्नतिके भण्डारमें चमत्कारोंके खजाने भर रहे हैं। परिवर्तित जि
नवीन स्फूर्तिको जन्म देती है। प्रत्येक नागरिककी जिन्दगी
सुनहरी दुनिया है। यदि उसमें दृढ़ निश्चयको कार्यान्वित करने
शक्ति नहीं, लापरवाही और अवारागर्दी है तो हम स्वयं अपने
तो बनाते ही जाते हैं, दूसरोंको भी मूर्ख बनानेमें सहायता दे रहे हैं

जरा सोचिये, आपके चारों तरफ सहानुभूतिकी आवश्यकता
आपकी मातृमयी पृथ्वीके हर तरफ सामाजिक, साहित्यिक और
नैतिक विचार जगमगाते रहने चाहिये। आप नित्य एक नया
बनाइये। प्रति दिन एक नये आदमीको खुश कीजिये—साल भर
आप तीन सौ पैंसठ आदमियोंमें अपनी प्रसन्नतायें बांट देंगे। क्या
जिन्दगीका लावण्य और सफलताका महामन्त्र नहीं ?

आप स्वाधीन हैं। राष्ट्रको ऊंचे उठानेकी बागडोर आपके हाथ
है। यदि आप अपनी आदतोंको प्यारमयी बना लेते हैं, तो
ही सर्वसाधारणके हृदयमें स्नेहपात्र बन जाते हैं। हमारे
और अनुभव हमारे शिक्षक हैं। यदि हम दूसरोंकी जिन्दगी
कर स्वयं सुखी रहनेकी चेष्टा करते हैं तो हम सिवा स्वार्थी
इंसान तो कभी नहीं कहे जा सकते। स्वाधीन रहकर हमें
की कला सीखनेकी जरूरत है। वह कला, जिसमें मर्यादा और
दारीका वसंत लहराता हो। याने जो वस्तु हमारे हाथमें न
भी लाकर हम दूसरोंको दे दें। कितना महान और
स्वतन्त्र जीवन। सोचकर देखिये—आपको कहां मौन रहनेकी आव-
श्यकता है, कहां बोलनेकी जरूरत ? कहां किसे दबाना
किसे उभाड़ना ?

मैं आजकी बात कहता हूं। आज हम स्वाधीन भारतके नागरिक हैं। उस भारतके, जिस भारतवर्षकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसीको, किसी भी वस्तुका कभी त्याग नहीं करता। बल्कि सबको अपनेमें मिलाकर विश्वमें आत्म-ज्योतिका विस्तार करता है। यहांके आदमी पंडित, ज्ञानी और अहंकार शून्य हैं। इसके विरुद्ध संसारके किसी भी देशमें इस तरहकी आदर्श सभ्यताके दर्शन नहीं पाये जाते। उनमें जहां देखिये, वहां विरोधकी भावनायें हैं। घृणा, तिरस्कार और निन्दाकी दीवालें खड़ी हैं। जो मनुष्यको मनुष्यसे अलग करती हैं और अपने स्वार्थकी पूर्तिके लिये षड़यन्त्रों और कूटनीतियोंका जहर फैलाती हैं। कहीं एक जाति दूसरी जातियोंको खदेड़ रही है। कहीं मारकाट और हिंसात्मक युद्धका दौर दौरा है। लेकिन धन्य है भारतवर्ष!—जहांकी सभ्यता समस्त जातियोंको गलेसे लगाती है और आत्मा परमात्माके मिलन रूपको सार्थक कर दिखाती है।

याद रखिये,--हम चाहे स्त्री हों या पुरुष,--स्वाधीन हैं। आज हमपर भविष्य—निर्माणकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी है। हमारे कठोर परिश्रमसे कोटि कोटि मनुष्योंका निर्माण होगा। हजारों लाखों बालक बालिकाओंके भविष्य—जीवन उज्ज्वल होंगे। अब हमारे प्रति प्रभातमें जीवन और उल्लास चाहिये। यह न भूलिये, प्रत्येक मनुष्यकी जिन्दगी रहस्यमयी कहानियोंकी विराट पुस्तक है। जिसे पढ़कर मनुष्य बहुत कुछ सीखता है। हमारी मनुष्यताके माने हैं—राष्ट्र रक्षक सैनिकोंका संगठित समूह। मानो संसारमें जय-प्राप्त करनेके लिये ही स्वाधीन मनुष्योंका जन्म हुआ है। और इस प्राप्तिके लिये राष्ट्रने हमारे हाथमें विजय पताका प्रदान की है—लाल, हरी और सफेद। महाशक्तियोंका सम्मलित वरदान!

याद रखिये—यों तो राष्ट्र-विकाशके अनेकों महान रूप हैं। लेकिन मैं निम्नलिखित रूपोंको मुख्य मानता हूं--जैसे प्राकृतिक,

सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, आर्थिक, समाचारपत्र [illegible]
रेडियो और सिनेमा—

(१) प्राकृतिक—

यह वह स्वाधीनता है, जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्यका [illegible] है। और वह सुख शांतिकी जिन्दगी व्यतीत कर आगे [illegible] प्रत्येक मनुष्य प्राकृतिक कारणोंसे सामाजिक और राजनैतिक [illegible] धारण करता है। जो आदमी किसी राष्ट्रके आधीन नहीं, [illegible] तो देवता है या पशु। मनुष्य अकेला कर्त्ता नहीं रहता। उसे [illegible] न किसीका साथ चाहिये। स्वाधीन मनुष्यके लिये परतन्त्रता [illegible] पीड़ा दायक है, उतनीही इन्सानसे अलग रहनेकी उसकी [illegible] लेकिन प्रकृति मनुष्यका संगठित रूपसे संचालन करती है। उस [illegible] साथ यदि किसी नगर या देहातकी जनसंख्या बढ़ जाती है, तो [illegible] की तकलीफोंमें बाढ़का आना भी स्वाभाविक हो उठता है जिसे [illegible] द्वारा दूर किया जा सकता है। वह संगठन क्या है? एक [illegible] मदद और राष्ट्रकी कल्याण-साधना। मैं यह दावेके साथ कहता हूं— विना संगठनके किसी भी राष्ट्रमें जिन्दगी नहीं आती। और [illegible] सर्वसाधारणके सहयोगके संगठन होता भी नहीं।

(२) सामाजिकः—

सामाजिक स्वतन्त्रता क्या है?

दूसरोंके अधिकार पर रुकावट न डालकर अपने अधिकारोंका प्रयोग करना। जिसमें संगठित समाजके सुख शांतिका [illegible] फैलाव हो सके। समाजसे अलग रहकर किसी भी व्यक्तिका [illegible] विकास नहीं होता। सामाजिक सुयोगों और सुविधाओंके [illegible] मनुष्य अपने व्यक्तित्वकी उन्नति करता है। यहां यह [illegible] है कि मनुष्य सिर्फ अपने परिवारको लेकर ही संतोष नहीं [illegible]

रेला। उसके सामने स्त्री पुरुषों का विराट मेला लगा रहता है। यहां यदि कोई आदमी जीवनको सफल बनाना चाहता है, तो सबसे पहले उसे जीवन धारणके उपाय ढूंढ़ निकालना चाहिये और उसे राष्ट्रका ऐसा सिपाही बनना चाहिये—जो हर समय सावधान रहे और किसी भी विदेशी आक्रमणको रोक सके। साथ ही अपनी आत्मरक्षाके लिये भी हर समय तैयार रहे। कुछ ऊबे और निराशावादी स्त्री पुरुष कहते हैं—यदि हमें जीवन निर्माणका हक है, तो हम अपने जीवनको ध्वंस भी कर सकते हैं और इस ध्वंसवादका रूप वे आत्महत्याके द्वारा समझाना चाहते हैं। किन्तु राष्ट्र कहता है आत्महत्या अपराध है और मैं भी कहता हूं—"हां, अक्षम्य अपराध। क्योंकि राष्ट्रको आपकी हर समय आवश्यकता है।"

(३) साहित्यिक:—

स्वाधीन भारतके प्रत्येक स्त्री पुरुषका कर्तव्य है—वह अपने साहित्य को देखे, पढ़े, समझे और साहित्यिक बने। बिना साहित्यके जीवन-निर्माणमें सौंदर्य नहीं उत्पन्न होता और बिना सौंदर्यके जिन्दगी वैसी ही रह जाती है, जैसे गंधहीन कुसुम।

साहित्य जीवनको धन्य बनाता है, साहित्य मनुष्यकी अमर कीर्ति फैलाता है, साहित्य मानसिक शक्तियोंके बढ़ानेकी उम्दा खुराक है। इससे आदमीकी जड़ता नष्ट होती है, कुबुद्धिका नाश होता है, ज्ञानमें विज्ञान का चमत्कार फैलता है—दुनिया झुकती है, साहित्य झुकानेवाला चाहिये।

आप बहुत जल्द वे दृश्य देखनेके लिये तैयार रहिये—जब भारत-वर्षके प्रत्येक नागरिक अपने साहित्यसे विशेष प्रेम रखेंगे और साहित्यिक बनना उनके जीवनका मुख्य उद्देश्य हो जायगा। जीवन समुद्र है, और साहित्य पार लगानेवाली नौका।

यदि आपकी जिन्दगी ऊबी, असाहित्यिक, ईर्षालु हो तो अपने बच्चोंको उस वायुमंडलमें दाखिल न कीजिये। और उन्हें साहित्य प्रेम,

राष्ट्र और आशाके प्रकाशमें जीते रहने दीजिये। यदि आप भी ऊंचा चाहते हैं तो अपने बच्चोंके साथ मिल जाइये और जीवन तथा राष्ट्र निर्माणकी ओर आगे बढ़िये।

क्या आप छाती तानकर खड़े होना जानते हैं? यदि नहीं तो कूदेंगे कैसे?

किसी भी साहित्यिकके आसपास शिक्षाकी किरणें फैली रहती हैं, जिनके प्रकाशसे चारों तरफके वायुमण्डल अपने आप उन्नत पथका निर्माण करते हैं। आप राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' के शब्दोंको कभी न भूलिये—

अंधकार है वहां, जहां आदित्य नहीं है।
है वह मुर्दा देश, जहां साहित्य नहीं है॥

(४) राजनैतिक—

राजनैतिक स्वाधीनताके बलपर सम्पूर्ण राष्ट्र संचालित होता है। जिस राष्ट्रके प्रत्येक नागरिकको उसके अधिकार दिये जाते हैं, उस राष्ट्रकी राजनैतिक स्वाधीनता सम्पूर्ण, सफल और व्यापक है।

आज स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालयोंमें जो शिक्षा दी जाती है, उसीसे नागरिकोंका चरित्र गठन और भविष्यका निर्माण होता है। आजका सुयोग्य और आदर्श विद्यार्थी कलका राजनैतिक और सामाजिक विचारोंका भाग्य-विधाता है। प्रत्येक बालक बालिकाको शिक्षित बनाना, प्रत्येक व्यक्तिकी स्वास्थ्य रक्षापर सक्रिय ध्यान देना और सामाजिक स्वार्थ पूर्तिके लिये व्यक्तिगत स्वार्थोंका त्याग करना प्रत्येक नागरिककी राष्ट्रपूजा है। राष्ट्र जिस समय किसी भी नागरिककी मांग करे शीघ्र उसे स्वस्थ्य बनाना आवश्यक है। स्वाधीन विचारोंकी स्वाधीनता आज प्रत्येक नागरिकको चाहिये। छूआछूतका भेदभाव राष्ट्र-उन्नतिका बाधक है। अधिकारोंकी दृष्टिसे मनुष्यमात्र समान हैं। प्रत्येक नागरिकमें आध्यात्म भावोंका विकाश, आत्मसंयम और आत्म-

बल चाहिये। विकसित दिमाग और स्वाधीन न रहनेसे राजनैतिक क्षेत्रोंमें सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती। आत्मविकासके लिये आवश्यक छुट्टियोंका होना तो बहुत ही जरूरी है। जिनमें आत्म-विकासके रास्ते प्रत्येक व्यक्तिके लिये खुले रहें।

राष्ट्रका कर्मक्षेत्र है जनताका मत। जनताके अस्तित्वपर ही सरकारका टिके रहना संभव है, मनुष्यकी प्रगति है स्फूर्ति देनेवाली शक्ति। इससे देशका व्यवसाय वाणिज्य पनपता है। साहित्य, समाज और कलाकी उन्नति होती है। किसी तरहकी भी संकीर्ण मनोवृत्ति आत्म-हत्याके समान है। बीते जमानेके कुसंस्कार, गिरे हुये आचार विचार और अंधविश्वास प्रगतिके दरवाजे बन्द कर देते हैं, और इनमें किसीको न तो फायदा पहुंच सकता है और न आत्म-ज्योतिकी किरणें संसारमें फैल सकती हैं।

आप राष्ट्रपतिको जानते हैं? राष्ट्रपतिकी आज्ञाओंका पालन करना और राष्ट्रीय कानूनोंको मानना आपकी सफलता, आपकी कामयाबी है। जनताकी कल्याणमयी भावनायें हैं। जिसमें जनता द्वारा आपका समर्थन होता रहे। जीवनकी श्रेष्ठ विशेषता है—स्वदेश प्रेम। जो हर समय देशके लिये जीवन और संपत्ति त्याग करनेको तैयार हो। किसीने क्या खूब कहा है :—

जो भरा नहीं है भावोंसे, बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेशका प्यार नहीं।

(५) आर्थिक :—

आज आर्थिक समस्याको लेकर सर्वत्र हाहाकार है। [illegible] प्रतिशत भारतीय जनता गरीब है। जिनमें [illegible] आदमियोंकी है, जो सबेरे कुआं खोदते हैं और शामको पानी पीते हैं, या दूसरे शब्दोंमें यों कहिये—दिन भर पसीना [illegible] और [illegible] सूखी रोटियां खाते हैं। नौकरी पेशा लोग भी [illegible]

आज रुपयेकी कीमत इतनी चढ़ गयी है कि जहां चार आनेमें काम निकलता था, वहां अब एक रुपयेमें भी उसकी पूर्ति नहीं हो पाती। इसमें हम केवल पूंजीपतियोंके ही सर्वनाशके नारे लगायें तो यह हमारी मूर्खता है। यह न कांग्रेसियोंकी गलती है, न अन्य माननीय नेताओंकी। सम्पूर्ण षड़यन्त्र तो अंग्रेजी शासनका है, जिसने हमारे रक्तको जोंक बनकर चूसा और सदियोंसे गुलामीमें डालकर हमारे मस्तिष्कको इस तरहसे खोखला बना डाला—कि हम किसी कामके न रहे। हमारे खानदानकी पुश्तोंमें वे रोग भर दिये गये—जिनकी दवाका आविष्कार करनेके लिये हमारे पास न दिल रह गया, न दिमाग। हम दूसरोंकी निंदा करनेमें अपना बड़प्पन समझने लगे और जीवनका कीमती समय उन कांटोंमें फंसकर बर्बाद करने लगे। एक दूसरेकी सहायता करना तो दूर रहा,—हम दुर्भाग्य और गंदगीकी सृष्टि कर उस कीड़ेके समान बन गये जो परनालेमें ही जीवनका श्रेष्ठ आनन्द समझता है।

अफसोस !

सदियोंके करोड़ों गुलाम-कैदी अभी अभी जेलसे छूटे हैं। क्या संसारका कोई राष्ट्र उन्हें दो दिनोंमें राज सिंहासन पर बैठा सकता है—क्या किसी जादूकी लकड़ीमें वह खूबी है, जो उसे घुमा कर एक दिनमें लखपती करोड़पती बना दे। आज जगह जगह हड़तालें होती हैं, बेकार व्यक्ति खूनके आंसू बहा रहे हैं। यह क्यों? आदमीके दिमाग की गुलामी—कमजोरी। शिक्षाका अभाव। आपसी फूट। घृणा, ईर्षाकी वृद्धि और जीवनमें आत्मबलका न होना।

आपको यह भूलना न चाहिये कि हम एक स्वतंत्र नागरिककी हैसियतसे पहले अपने आपको देखें, अपनी लिपटी हुई बुराइयोंको मनमें और मानसिक विकाशकी शिक्षा हासिल करें। आप एक हैं। एक हड्डी खून और मसालेसे बने हुए आदमी। अपने पैरोंके बल खड़े हों, अपने मुंहसे खायें और उस जमीन पर रहनेकी कोशिश करें—जहां

सुख और सौंदर्य हो। मैं पूछता हूं, वह सौंदर्य—जिसे मिट्टी बनानेकी कोशिश की जाती है और जो मुरझा जाता है—किस कामका ?

मनुष्य पर अत्याचारोंसे हाथ हटालो—लेकिन इस बातकी प्रतिज्ञा करो—हम अन्यायको सहन नहीं करेंगे। गरजनेसे बरसनेवाले बादलों की कीमत ज्यादा होती है। आपके मुंहके शब्द थोड़े हों, किन्तु कार्य अधिक। झूठी डींगे न मारिये और न अपमानसे लज्जित होइये—यह कर्मयुग है। बातें बनाने और होंठ फड़काने का नहीं। कोई अपने सौंदर्यकी कसम खाकर कहता है—मैंने तुम्हें मिट्टीसे बनाया है और किसी दिन मिट्टीमें मिला दूंगा।

आज हमें शरीरमें नया खून चाहिये, नवीन ज्ञानका अभ्युदय। आप झुण्डके झुण्ड संगठित होकर जय-यात्राके लिये आगे बढ़ें और मानसिक शक्तियोंके विकासकी ओर चलें। आपके स्वाधीन जीवनका इतिहास यहींसे शुरू होना चाहिये। यदि मनुष्य अपने ऊपर शासन करना सीख जाय और अत्याचारोंसे मुक्ति चाहे तो आज सत्य और असत्यको लेकर जो लड़ाइयां लड़ी जा रही हैं—उनपर विजय प्राप्त हो और हम आलोक की दुनियामें आ बसें।

स्वाधीन जनतामें सफलताकी पूर्ण शक्ति है और वह कार्यक्षेत्रमें उतर कर शीघ्र प्रमाणित कर देगी—कि हम आदर्शोंका [illegible] है आत्मबल। भोग विलास तो आदमीको [illegible] ले जाते हैं। इसलिये सावधान हो। यह विचार धारा और कार्यशक्ति लाखों करोड़ों मानव-हृदयको अपना बनालेगी। आजका दिन [illegible] आज विप्लवके नाम पर कुछ आदमियोंको उत्तेजित किया जा रहा है। लेकिन इन चुनौतियों, ललकारों और [illegible] और कोई कदम न बढ़ायेगा। आदमी अंतरकी आवाजसे [illegible] और [illegible] बनाकर ही दम लेगा। अपनी सांसोंसे [illegible] करो। बनो पशु और तुममें कोई फर्क न [illegible]। इसने

विवेकको खो देना पशुता है। एक दूसरेको प्रेमकी निगाहोंसे देखना और उसपर श्रद्धा करना इन्सानियत है। मनुष्य मैशीन नहीं, जो उसे मैशीन बनानेकी कोशिश की जाती है। मनुष्य आदमी है और वह अपने आत्मबल द्वारा हर तरहकी गरीबी दूरकर सकता है। यदि वह बेकारीसे परेशान है, उसकी जीविकाके प्रबन्धमें अड़चनें आती जाती हैं; वह अन्न-वस्त्रकी चिन्तासे मर रहा है, तो यहां न तो राज-नीतिका मूल्य है, न सामाजिक स्वतंत्रताका कोई अर्थ।

(६) समाचार पत्रः—

कलमकी ताकतका मुकाबला न चमकती तलवार कर सकती है, न संसारके बड़े-से-बड़े विद्रोह। जनताको जगाती है कलम—और कलम जिस पथका निर्माण करती है, जनता उसी तरफ झुकती है। जनताकी आवाज हैं समाचार पत्र। और उसके सम्पादक कलमसे जिन विचारों के बीज बोते हैं—वे भविष्यमें अन्न-वस्त्र और सुख शान्तिकी जिन्दगी बनकर आदमीके सामने आते हैं।

राष्ट्रीय सरकारको चाहिये, वह इन कलाकार साहित्यिक महारथियों की हर तरहसे सहायता करे। पूर्ण सहयोग देकर उनके साथ काम करे। मैं भारतवर्षके सुप्रसिद्ध राष्ट्रकवि 'दिनकर'जी के शब्दोंको कभी न भूलूंगा। आप कहते हैं—"साहित्य आलोक है। जब वह पृथ्वीपर आता है, तब उससे उन सभी लोगोंके घर प्रकाशित होते हैं—जिन्होंने अपनी खिड़कियोंको खोल रखा है।"

चौकन्ने होकर देखिये—आज हमारा साहित्य स्वाधीन है—भारत-वर्ष स्वाधीन है। लेकिन हम अस्सी प्रतिशत गुलाम यह भी नहीं जानते स्वाधीनता किस चिड़ियाका नाम है? पत्रकारोंका कर्त्तव्य है—वे जनता को नयी-रोशनी दें—उसे शिक्षित बनायें। किसी भी समाचारके विचार कांटोंको फूल बना देते हैं—और फूलोंको रसीले फल।

झूठी प्रशंसा किसी भी संपादकके लिये कलंक है। अन्याय और

पक्षपात किसी भी संपादकका नाम बदनाम कर देता है। संपादक मर जाता है लेकिन वह जिस सत्य और न्यायका आविष्कार विश्वमें फैलाता है—उसकी कभी मृत्यु नहीं होती।

और सुनिये—

किसी दल विशेषके समर्थनमें अपनी कलमको नीचे गिरा देना राष्ट्रकी बेइज्जती है। यदि आप राष्ट्रका शृङ्गार चाहते हैं—तो दूसरोंको आत्म सम्मानका सुअवसर अवश्य दीजिये। बदला लेनेकी भावनायें या घृणा फैलानेकी आदतें किसी भी समय जनताका अनिष्ट कर सकती हैं।

आज मानव क्यों नहीं है मानव ?

मानवताका अभाव धर्म ध्वंसको भी ध्वंस कर सकता है, आध्यात्मिक शक्तियोंको भी। आज देशमें अपना शासन है। और इस शासनमें पत्रोंके सुझाव राष्ट्रको अधिक-से-अधिक मजबूत बना सकते हैं। यह सच है, कि आदमीको भला-बुरा बनानेका बहुत-कुछ यश-अपयश संपादकोंके हाथमें है। यदि कोई संपादक सोचकर इस प्रश्नको गहराईसे नहीं सोचते, इन्सानसे प्यार नहीं करते, तो मैं कहूंगा आप मनुष्यकी तरक्कियोंके मार्गमें रोड़े हैं और जनताको कभी ऐसे देश-द्रोहियोंका साथ न देना चाहिये।

आज मनुष्यके नये रूपमें स्वतंत्रताका संचालन चाहिये। आज हर स्त्री-पुरुषोंके कानोंमें आज़ादीके [illegible] चाहिये। यदि उनके राज-मार्गमें कोई दुर्गम पहाड़ खड़ा है, तो वह उनकी [illegible]-ठोकरोंसे चूर-चूर हो जायगा।

समाचार-पत्रोंकी शक्ति कितनी बड़ी है—इस [illegible] परम आदरणीय मान्य कवि "अकबर" ने [illegible] कहा है—

खींचो न कमानोंको, न [illegible] निकालो,

जब तोप मोकाबिल हो, तो [illegible]

(७) भाषण:—

जनमतके संगठनमें व्याख्यान मंच और व्याख्यानदाताकी बहुत बड़ी कीमत है। समाचार पत्रोंसे ज्यादा व्याख्यानका प्रचार होता है। क्योंकि समाचार-पत्रोंको तो शिक्षित व्यक्ति ही पढ़ते हैं—लेकिन व्याख्यान शिक्षित अशिक्षित सभी तरहके व्यक्ति सुनते हैं। जिससे उन्हें चेतना मिलती है और वे अपने साथियोंमें इसकी चर्चा तथा समालोचनाके कारण बन बैठते हैं। व्याख्यानदाताका व्यक्तित्व और उसके प्रभावशाली व्याख्यान जनतामें विद्युत प्रवाहोंकी सृष्टि करते हैं जिससे लोग व्याख्यानदाताके समर्थक बन जाते हैं और वे उनकी दलीलों और तर्कोंसे बहुत-कुछ लाभ उठा लेते हैं।

कितनी सिद्धकला छिपी है भाषणमें। जनता किसीका भाषण सुनकर खुशीसे हंस पड़ती है, किसीके भाषणसे उसका मन उत्तेजित हो जाता है किसीके भाषण उसके हृदयमें आतंक पैदा कर देते हैं। कहीं रुलाई आ जाती है। कहीं मोह। लेकिन किसी-किसी व्याख्यानदाता के भाषण इतने रद्दी होते हैं, कि लोग ऊब जाते हैं और सभा भंगकर वहांसे चले जानेका इरादा कर लेते हैं। ऐसा क्यों होता है?—मैं कहता हूं—व्याख्यानदातामें मनोरंजक शब्दोंकी कमी, गलेमें मिठास का अभाव और व्यक्तित्व हीनताके दर्शन।

यह क्या बात है, महात्मा गांधीके भाषण सुननेके लिये लाखों नर-नारियोंकी भीड़ हो जाती थी, आपका व्याख्यान सुननेके लिये पच-चीस आदमी भी इकट्ठा नहीं होते। जरा महात्माजीकी भाषण शक्ति का अंदाजा लगाइये और अपनी शक्ति-हीन व्याख्यान कलाको तौलिये। दोनोंमें जमीन आसमानका अंतर है। मैं मानता हूं—हर आदमी महात्मा गांधी या पं० जवाहरलाल नेहरू नहीं हो सकता, लेकिन सीखने और कोशिश करनेसे कलामें चमत्कार उत्पन्न हो जाता है और झुण्ड की झुण्ड जनता आपके सामने आकर बैठ जाती है।

मैं किसी सफल व्याख्यानदाता और सफल अभिनेताको अलग-अलग निगाहोंसे नहीं देखता। दोनों जनताके हृदयमें प्रवेश कर जाते हैं, दोनोंमें आकर्षण है और दोनोंको सर्व साधारण जनता पानेके लिये बेचैन रहती है। शायद कोई व्याख्यान दाता मेरे शब्दोंको सुनकर चौंके, बिगड़ उठे और कहे—"व्याख्यानदाताका दर्जा बहुत ऊंचा है—आपने अभिनेताके साथ उसकी तुलना क्यों की?"—तो मेरा निवेदन है,—"यदि अभिनेता जनताका हृदय है तो व्याख्यान दाता—राष्ट्र निर्माता। बल्कि दूसरे शब्दोंमें यह कहना चाहिये—संसारके हर आदमी अभिनेता हैं और यह दुनिया है एक विशाल रंगमंच। जहां आदमी आते हैं और जीवन-नाटक समाप्त कर किसी अलक्ष्य शक्तिमें लय हो जाते हैं।

कोई भी कला हो, कोई भी भाषण। आपके बोलनेमें जादू-सा असर होना चाहिये। जिसे सुनकर जनता प्रसन्न हो और यह कहती हुई सभा भवनका त्याग करे—वक्ताका भाषण बहुत अच्छा रहा और उससे हमने बहुत-कुछ सीखा।

एक आदमीने पूछा—"हिटलर और मुसोलिनीने अपने भाषणोंमें इच्छा शक्तिका अच्छा प्रयोग किया। लेकिन क्या वे टिक सके?"

मेरा उत्तर है—"हिटलर और मुसोलिनीके इच्छा शक्ति और भाषण दायरेसे बहुत आगे बढ़ गये थे। दोनोंका यह विश्वास था—[illegible] हम हैं और पुराने संसारको नष्ट-भ्रष्ट कर एक नये संसारकी रचना करेंगे। वे अपने अहंकारको लेकर आगे बढ़े और [illegible] पहाड़की चोटीसे गिरकर चकनाचूर हो गये।"

सारा जमाना जानता है, और [illegible]
अहंकारी स्त्री पुरुष न किसी समाज या [illegible]
में किसी दिन आगे बढ़ सकेंगे। [illegible]
है—अहंकार आदमीको नष्ट कर देता है। [illegible]

निशानी है। अहंकारसे कोई भी स्त्री-पुरुष अपने पैरोंमें आप कुल्हाड़ी मार लेते हैं। जिसका नतीजा यह होता है—न उन स्त्री पुरुषोंको किसी की जरूरत होती है, न जनतामें उनका सन्मान बढ़ता है।

(८) रेडियो:—

समाचार-पत्र शिक्षित स्त्री-पुरुषोंके लिये हैं। वक्तृता मंच बड़े-बड़े शहरोंके लिये। लेकिन लाखों अशिक्षित या अर्द्ध शिक्षित लोगोंको आगे बढ़ानेवाली यदि कोई ताकत है तो वह है रेडियो। रेडियो द्वारा नेता और महामानव अपने सिद्धान्तोंका प्रचार संसार भरमें किया करते हैं—यदि जनताका रेडियोके साथ सहयोग हो जाता है—तो इससे सर्व साधारणको अच्छा बल मिलता है और मामूलीसे मामूली आदमी भी राष्ट्र-निर्माणमें सहायता पहुंचा सकते हैं।

(९) सिनेमा:—

जनताको मनोरंजन और शिक्षा देनेका सर्वश्रेष्ठ साधन है सिनेमा। आज भारतवर्षमें शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे सिनेमासे प्रेम न हो! क्या धनी, क्या दरिद्र सभी लोग सिनेमा देखने दौड़ते हैं—यहां तक कि सिनेमाके नामपर दूर देहातोंसे भी लोग दौड़े आते हैं—और "राम राज्य" तथा "भरत मिलाप" जैसी फिल्में देखकर आगे मस्तक झुकाते हैं।

सिनेमा दृश्य काव्य है। उसकी घटनाओंको अपनी आंखोंके सामने घटते देख आदमीके मनपर गहरा प्रभाव पड़ता है। लेकिन भारतवर्षकी गरीब जनतामें जहां जीवन-विकासका उत्थान होना चाहिये, वहां मानसिक पतन ही ज्यादा हुआ। इसका प्रधान कारण है, वासनामयी फिल्मोंका विशेष प्रचार। बल्कि दूसरे शब्दोंमें तो मैं यह कहूंगा—यदि अंग्रेजी शासनने हमें पंगु बना दिया है तो भ्रष्ट और रद्दी फिल्मोंके प्रदर्शनने हमारे जीवनको मटियामेट कर डाला है। जहां हमारे गृहोंका निर्माण होना चाहिये—वहां ध्वंस चक्र चलने लगा। जहां

हमारे अंदर शिक्षाकी ज्योति फैलनी चाहिये—वहां शिक्षाके नामपर अंधकार युग आ गया। इन चित्रोंने सिर्फ बच्चोंका ही नुकसान नहीं किया - बल्कि उन स्त्री-पुरुषोंकी तादाद को भी ज्यादा बढ़ाया—जो सर्वनाशकी ही ओर बढ़े और उन दरख्तोंकी जड़ काटने लगे—जिन्हें हमारे पूर्व पुरुषोंने बड़ी मिहनतसे सींच कर तैयार किया था। मेरी यह दलील चाहे सिनेमा संचालकों और उसके निर्माताओंको बुरी लगे—लेकिन अनुभवी जनता यह जानती है वासनामयी विकृत फिल्मों के प्रचारसे हमारे समाज और राष्ट्रको बहुत बड़ी हानि पहुंची है।

सिनेमा निर्माताओंका यह उपद्रव बहुत दिनोंसे चल रहा है। और मैं सुप्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचन्दजीके शब्दोंमें बार-बार कहूंगा—कि अधिकांश फिल्म निर्माता आजके इस स्वाधीन युगमें भी जनताको दूध के बदले शराब ही पिलाते रहे हैं। क्या मैं अपने सफल पत्र संचालकों से नम्रता पूर्वक यह प्रश्न कर सकता हूं कि आप आये दिन जनताको पतनकी ओर खींच ले जानेवाली रद्दी-से-रद्दी फिल्मोंके बड़े-बड़े विज्ञापन छापकर क्यों मालामाल हो रहे हैं? और क्या मैं उनसे यह भी पूछ सकता हूं - आप इन फिल्मोंके विरोधमें आवाज क्यों नहीं उठाते? और यदि कोई लेखक इनके विरोधमें कुछ लिखता है तो आप उसके लेख क्यों नहीं छापते?

एक दिन मैंने इतना भद्दा और वासना भरा चित्र देखा, कि उसका निर्माता मालामाल हो गया। - तब मैंने कहा—"इससे जनताका चरित्र गिरता है और छोटे-छोटे बच्चे तक गुमराह होते जाते हैं।"—तो उसने मुस्कराते हुए कहा—"भाड़में जनताके क्या सदाचार [illegible] जहन्नुममें जाय। हम तो "बिजनेस मैन" (!) हैं और हमें पैसा चाहिये।"

इन महोदयकी बातें सुनकर हमें जरा भी आश्चर्य नहीं। क्योंकि इस तरहके निर्माता और संचालकोंकी दुनियामें

सुनता आ रहा हूं। आज सिनेमाका यह व्यवसाय भारतका प्रधान व्यापार है। और मैं उसके व्यवसाइयोंके पास अधिक-से-अधिक पैसे भी देखना चाहता हूं—लेकिन उसका यह मतलब नहीं भारतीय संस्कृतिकी हत्याकी जाय। जनताका चरित्र बल गिराया जाय या उन्हें मीठा जहर पिलाकर धीरे-धीरे मारा जाय। आज जनताको लड़खड़ानेके लिये शराब नहीं, बल्कि पुष्टिकर दूध चाहिये। जिसमें वह पर नालेमें औंधे मुंह न गिरे, बल्कि अपनेको स्वस्थ बनावे। आज जनताको मनोरंजन भी चाहिये और जरूर चाहिये। लेकिन वह मनोरंजन नहीं, जिससे वासनाकी उत्तेजना बढ़े। वह मनोरंजन जो आदमीके चरित्र बलको ऊँचा उठाते हुए उसके दिल और दिमागमें फूलकी खूशबू पैदा करे। आज जनताको मनोरंजक शिक्षाप्रद कहानियां चाहिये—जिनके संवाद और गीत राष्ट्र गौरवमें रोशनी पैदा कर सकें। आज अनुभवी जनताकी आवाज है—वासनामय सिनेचित्रोंका प्रचार बंद हो – बंद हो—बंद हो।

कोई भी छोटा मोटा परिवार भविष्यकी राष्ट्र शक्ति है। कोई भी सिनेमा या थियेटर आजके आदमीकी आत्माका आहार है। उसमें जो बीज आप बोयेंगे, यदि उसकी सिंचाई अच्छी न हुई, उसकी देख-रेख और व्यवस्था पर ध्यान न दिया गया—तो बीजकी जीवन-शक्ति अवश्य नष्ट हो जायगी।

दो शब्द मैं आधुनिक रंगमंच या थियेटरके लिये भी कहूंगा। आज हमें सिनेमाकी भी जरूरत है और थियेटरकी भी। लेकिन जो बातें मैंने सिनेमाके लिये कही हैं—ठीक वैसी ही बातें थियेटरकी दुनियामें भी आती हैं। सिनेमासे कम ऊंचा स्थान थियेटरका नहीं है। बल्कि कहीं-कहीं तो मैं सिनेमासे अधिक ऊंचा स्थान थियेटरका पाता हूं। दोनों ही हमारे नागरिक जीवनको उन्नत बनाने वाले हैं। इस सिलसिले में मैं श्री शांतारामको "अपना देश"की रचनाके लिये विशेष धन्यवाद

दूंगा। श्री पृथ्वीराज कपूरकी "दीवार" और "पठान" के लिये बधाई दूंगा और कलकत्तेके श्रेष्ठ नागरिक तथा सुप्रसिद्ध कलाकार श्री रणधीर साहित्यालंकारको उनकी रंगमंचकी रचना "झांसीकी रानी" और "सरदार भगतसिंह"के लिये कहूंगा—आपका प्रत्येक प्रभात मंगलमय हो। आपकी सफलता स्वतंत्र जन-जीवनके लिये प्रकाशकी किरणें हैं।

हमारा सिद्धान्त होना चाहिये—"हम समस्त नागरिकोंके लिये हैं, और समस्त नागरिक हमारे लिये। मनुष्यका मनुष्यके साथ संबंध होना प्रधान वस्तु है। एक दूसरेके साथ प्रीति बंधन आनंदमय सद्गुण। इससे उस साम्राज्यकी रचना होती है—जिसका नाम है—रामराज्य। और जिसके द्वारा सिर्फ भारतवर्षमें ही नहीं, बल्कि विश्वमें हमारी मांग बढ़ती जाती है।

समझे आप? हमारे नागरिक जीवनका घनिष्ट संबंध है कानून से। जहां कानून नहीं, वहां उच्छृङ्खलता और बर्बरता है। शांतिकी जगह अराजकता और अशांति है। जिसके एकमात्र रक्षक हैं—प्रत्येक स्त्री-पुरुष, प्रत्येक नागरिक जीवन और उनकी सतर्क दृष्टि!



भविष्यमें क्या होगा ?

आज मेरी आंखोंके सामने भविष्य जीवनका यह सुन्दर चित्र दिखाई दे रहा है—जिसमें पृथ्वी मंडलके सब मनुष्य समान हैं—और वे क्रमशः प्रेम, उदारता, सहानुभूति और न्यायकी सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं।

मेरा चित्र यह भी बताता है—हम एक दूसरेके प्रति ज्यों-ज्यों आदर सन्मान बढ़ायेंगे—त्यों-त्यों एक दूसरेके निकट होते जायंगे—और आगे चलकर हमारा संसार उस परिवारके रूपमें बदल जायगा—जहां किसी तरहका जातीय भेद न होगा। स्वार्थका पर्दा उठ जायगा और आदमीकी सबसे बड़ी स्वाधीनता होगी—उसके स्वतंत्र विचारोंकी। इन विचारोंके कारण मनुष्य दूसरे मनुष्यको अप्रिय न जान पड़ेगा। पाप पुण्य, धर्म, अधर्म, सदाचार और व्यभिचार इत्यादिको लेकर व्यर्थकी बहसें और लड़ाइयां न होंगी। लोग समयकी कीमत पहचानेंगे और वर्तमान समयमें जैसे धनके बलपर एक आदमी अनेकों आदमियोंको अपना गुलाम बनाये रखता है, भविष्यमें वैसा न होगा। धनका कोई बल न रह जायगा। वह किसीकी व्यक्तिगत सम्पत्ति न होगी, बल्कि सामुहिक रूपसे उसपर सबका अधिकार होगा।

मेरे चित्रमें कविताकी वे रेखायें भी हैं—जो स्पष्ट रूपसे झलकती हैं—आदमीकी किसी भी किस्मकी बीमारी अपराध समझी जायगी। अपराध करनेवाले स्त्री-पुरुष रोगी होंगे और उनकी दवा की जायगी। कत्ल और बलवा करनेवाले रोग बहुत बड़े समझे जायंगे और उनकी चिकित्सा विशेष प्रेम और सावधानीसे की जायगी। जन समाजको सुख पहुंचानेकी इच्छा सबमें सदैव रहेगी और जिन्दगीको सफल एवं यशस्वी बनानेके लिये क्या राजनीति, क्या साहित्य और क्या सामाजिक भावनाओंमें सभी स्त्री-पुरुष और बच्चे आत्मबलका प्रदर्शन करेंगे।

भारतीय संस्कृतिके विकाश और नारीके सद्गुणोंसे संसारमें सच्ची शांति उत्पन्न होगी। बाहरी स्त्रियोंको लोग मा-बहनके रूपमें देखेंगे।

यश माता-पिताका देवता जैसा सम्मान करेंगे। सांसारिक काम करने के लिये, भोजनके लिये, विनोद और विश्रामके लिये, अलग-अलग स्थान होंगे और छोटे-से-छोटे कार्योंमें भी लोग अपने कर्तव्यका पालन सचाई तथा ईमानदारीसे करेंगे।

मैंने अपने चित्रको बड़े ध्यानसे देखा है—और किसी अदृश्य शक्तिने मुझे बताया है—नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा हिन्दी विश्वभरमें फैल जायगी। मनुष्यके वंशज—नारीकी संतानें—उस्ताद और चालाक होंगी। इनका शरीर लंबा, निरोगी और चेहरा बहुत ही आकर्षक कोमल तथा स्नेहमय होगा। कुलक्षणी, कर्कशा और कुलटा स्त्रियां समाजकी छातीपर विचरणकर अनर्थोंकी सृष्टि चाहे भले ही कर लें, किन्तु इनकी कहीं कद्र न होगी। लोगोंको दिखाई भी देंगी ये बहुत कम तादादमें—लगभग हजारमें सिर्फ दस।

आदर्श नारी अपने गुरुत्व और कर्तव्यको पहचानेगी। इसके द्वारा राष्ट्रका महा मंगल होगा। यह पुरुषको मुक्ति और स्वाधीनताका प्रिय वरदान देगी। जिससे पवित्र निर्माण [illegible] होगा। और हमारे सामने प्रसन्नता, सौंदर्य और निश्चिंत सरस प्रसाद प्यालियोंमें आते दिखाई देंगे।

मैंने यह चित्र बड़ी श्रद्धाके साथ देखा। और मेरी कलमने लिखा -

आदर्शोंकी जिन्दगीमें बड़ी तेजीके साथ रद्दो-बदल हो रहा है; अतः भारतीय सभ्यताका आश्चर्यजनक विकास होगा। और दरिद्रता तथा पशुता [illegible] ढूंढ़ने पर भी न मिलेगी।

मानसिक-साहसकी [illegible] कुरूपता [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] और सत्य ही ईश्वर. [illegible] अमर ज्योति।